₹ 20

www.kewalsach.com

निर्भीकता हमारी पहचान

मई 2024

केवल सच

हिन्दी मासिक पत्रिका

बिहार का स्वास्थ्य विभाग

भ्रष्टाचार के चरमसुख को प्राप्त हो गया!

RNI NO.-BIHHIN/2006/18181, DAVP NO.-129888, POSTAL REG. NO. :- PS.-35

जन-जन की आवाज है केवल सच

नियमित हमारी पहचान
केवल सच
हिन्दी मासिक पत्रिका

Kewalachlive.in
वेब पोर्टल न्यूज
24 घंटे आपके साथ

Kewalsach news
Kewalsach news
Mob.: 9431073769, 9308815605
खबर वहीं, जो केवल सच हो

केवल सच TIMES

आत्म-निर्भर बनने वाले युवाओं को सपोर्ट करें

आपका छोटा सहयोग, हमें मजबूती प्रदान करेगा

BHIM UPI
G Pay पे Paytm

www.kewalsach.com www.kewalsachlive.in

-: सम्पर्क करें :-

पूर्वी अशोक नगर, रोड नं.-14, मकान संख्या-28/14,

कंकड़बाग, पटना (बिहार)-800020, मो०:-9431073769, 9308815605

जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएँ

एस.एन. कृष्णन
01 मई 1932

अनुष्का शर्मा
01 मई 1988

अशोक गहलोत
03 मई 1951

उमा भारती
03 मई 1959

तृष्णा कृष्णन
04 मई 1983

सनी लियोनी
13 मई 1981

जरीन खान
14 मई 1980

माधुरी दिक्षित
15 मई 1967

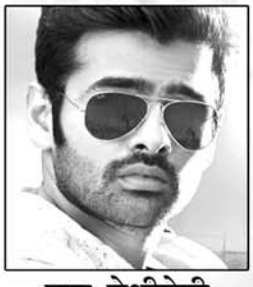

राम पेथीनेनी
15 मई 1988

सोनल चौहान
16 मई 1987

स्व.पंकज उदास
17 मई 1951

चार्मी कौर
17 मई 1987

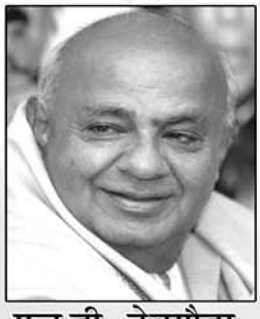

एच.डी. देवगौड़ा
18 मई 1933

एनटीआर जूनियर
20 मई 1983

महबूबा मुफ्ती
22 मई 1959

करण जोहर
25 मई 1972

नितिन गडकरी
27 मई 1957

रवि शास्त्री
27 मई 1962

पंकज कपूर
29 मई 1954

परेश रावल
30 मई 1950

निर्भीकता हमारी पहचान

www.kewalsach.com

केवल सच

हिन्दी मासिक पत्रिका

Regd. Office :-
East Ashok, Nagar, House
No.-28/14, Road No.-14,
kankarbagh, Patna- 8000 20
(Bihar) Mob.-09431073769
E-mail :- kewalsach@gmail.com

Corporate Office:-
Vaishnavi Enclave,
Second Floor, Flat No. 2B,
Near-firing range,
Bariatu Road, Ranchi- 834001
E-mail :- editor.kstimes@rediffmail.com

Delhi Office :-
Sanjay Kumar Sinha,
A-68, 1st Floor, Nageshwar Talla
Shastri Nagar, New Delhi - 110052
Mob.- 09868700991,
09955077308
E-mail:- kewalsach_times@rediffmail.com

Kolkata Office :-
Ajeet Kumar Dube,
131 Chitranjan Avenue,
Near- md. Ali Park,
Kolkata- 700073
(West Bengal)
Mob.- 09433567880
09339740757

Advertisement Rates Per Issue

COLOUR

AREA	FULL PAGE	HALF PAGE	Qr. PAGE
Cover Page	5,00,000/-	N/A	N/A
Back Page	1,60,000/-	N/A	N/A
Back Inside	1, 00000/-	60,000/-	35000
Back Inner	90,000/-	50,000/-	30000
Middle	1,50,000/-	N/A	N/A
Front Inside	1, 00000/-	60,000/-	40000
Front Inner	90,000/-	50,000/-	30000

B & W

AREA	FULL PAGE	HALF PAGE
Inner Page	60,000/-	35,000/-

1. एक साल के नियमित विज्ञापन पर पत्रिका के वेवसाइट **www.kewalsach.com** के फ्रंट पर भी विज्ञापन निःशुल्क तथा आपका वेवसाइट से सीधा लिंक हो सकता है।
2. एक साल के नियमित विज्ञापन पर 10 प्रतिशत की रियायत।
3. आपके प्रोडक्ट या संगठन के प्रचार-प्रसार हेतु आलेख को उचित स्थान।
4. पत्रिका द्वारा सामाजिक कार्य में आपके संगठन/प्रोडक्ट का बैनर/फ्लैक्स को उचित स्थान देकर आपके संगठन का व्यापक प्रचार-प्रसार।
5. विज्ञापन का भुगतान चेक या आर.टी.जी.एस. से ही मान्य होगा।

महाप्रबंधक (विज्ञापन)

आजाद भारत की राजनीति में 2024 का लोकसभा चुनाव वास्तव में राजनीतिक दृष्टिकोण से अलग है क्योंकि सत्ता पक्ष एवं उसका समर्थक मतवाला हाथी की तरह 400 के पार की घोषणा कर चुका है वहीं विपक्ष कई चरण के चुनाव सम्पन्न हो जाने के बाद भी आंतरिक रूप से एकजुटता नहीं दिखता। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जहां ताबड़तोड़ रोड शो देश के विभिन्न राज्यों में कर रहे हैं और उनके चाहने वाले जिस प्रकार सड़क पर निकल रहे हैं उससे तो साफतौर पर यह कहा जा सकता है कि 2024 में 400 पार होगा। भले ही विपक्ष मोदी को प्रधानमंत्री के कुर्सी पर काबिज नहीं होने देंगे की शपथ लेकर कार्य कर रहे हैं। बिहार में तेजस्वी यादव, उत्तरप्रदेश में अखिलेश यादव, दिल्ली में केजरीवाल, महाराष्ट्र में उद्धव ठाकरे और पश्चिम बंगाल में ममता बनर्जी यह दावा कर रही हैं कि मोदी का विजय रथ रूक जायेगा जबकि बिहार छोड़कर सभी राज्यों में मोदी की विजय यात्रा में 2019 के मुकाबले अधिक सीटें आने के अनुमान है और ममता दीदी के गढ़ में सर्वे भी मोदीमय दिखा रहा है। जो राम को लाये हैं, हम उनको लायेंगे की युक्ति 2024 में मोदी को हैट्रिक लगाने से कोई नहीं रोक सकता है। बिहार में लालटेन ने निश्चित तौर पर चुनौती खड़ा कर रखा है तथा परिणाम आने के बाद विपक्ष यह भी कहते नहीं थकेगा कि 400 के पार की गारंटी देने वाला पहले ही सब फिक्स कर लिया था। विपक्ष के पास नेतृत्व नहीं रहने के कारण मोदी के सामने कोई नहीं दिखता और सनातन का ताल ठोककर 2024 का जीत भी अपने नाम दर्ज कर लिया है।

नरेन्द्र मोदी लेंगे प्रधानमंत्री की तीसरी बार

शपथ

अपनी प्रतिक्रिया हमारे ई-मेल पर दें:- editor.kstimes@rediffmail.com

जय श्रीराम के जयघोष से किसी भी सभा को संबोधित करने वाले विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र के प्रधानमंत्री नरेन्द्र दामोदर दास मोदी के सामने कोई भी विपक्षी दल मुकाबला के लायक नहीं बचा है। विपक्ष भले ही ई०डी० के रेड को राजनीति से जोड़कर जनता के बीच हल्ला करे लेकिन जनता भी यह समझ चुकी है कि रेड के वक्त 200-300 करोड़ रूपये मोदी तो रखवा तो नहीं सकता, वैसे में यह मशीन से गिने जाने वाले रूपये अवैध कमाई का ही हिस्सा है। जनता यह भी समझने लगी है कि भाजपा में भी भ्रष्ट लोग अपनी प्रतिष्ठा बचाने एवं कानून से बचने के लिए शामिल हो रहे हैं और यह बात लोकसभा चुनाव 2024 के विपक्ष की सभाओं में भी सुनने को मिल रहा है की भाजपा के साबुन से नहाते ही हमारे दल का भ्रष्ट वहां स्वच्छ हो जाता है। 2024 के लोकसभा चुनाव की तिथि की घोषणा के पहले **श्रीराम मंदिर के उद्घाटन की तिथि की घोषणा** करके 400 पार की आंकड़े की राजनीति कर दी थी वहीं दूसरी ओर विपक्ष सनातन धर्म को वायरस की उपाधि से नवाजने लगा और मंदिर से अधिक अस्पताल की जरूरत की दुहाई देने लगा लेकिन आमजनता ने मंदिर उद्घाटन में पहुंचकर विपक्ष को करारा जवाब दे दिया है कि भारत में उसको अस्पताल के साथ-साथ मंदिर की आवश्यकता प्राथमिकता में है। इतिहास गवाह है कि कोई अस्पताल कोई मंदिर नहीं बनवाया है परन्तु दर्जनों ऐसे मंदिर हैं जिसने अपने चढ़ावे के पैसे कई अस्पताल बनाये हैं और यह सभी धर्म में हुआ है। धर्म की नगरी के रूप में विश्व भारत को पूजता है और भारतीय जनता पार्टी उसी परंपरा पर राजनीति करती आ रही है तथा 2014 एवं 2019 में मिली प्रचंड जीत के बाद आज युवाओं को भी भगवा रंग रास आने लगा है। प्रचंड बहुमत के साथ-साथ भारतीय संस्कृति एवं संस्कार और सभ्यता का प्रतीक बनकर नरेन्द्र मोदी विपक्ष के भी योग्य नेताओं की पहली पसंद बन चुके हैं और अपने व्यक्तित्व और जीवन शैली से सबको प्रभावित किया है। जहां एक तरफ अधिकांशत: राजनीतिक पार्टियां परिवारवाद, जातिवाद में मशगूल है वहीं मोदी ने अपने दल के लोगों की सोच को भी बदल दिया है और ताल ठोक कर यह दावा नहीं कर सकता की उसको टिकट मिलेगा ही। 2014 में नीतीश कुमार मोदी से अलग होकर लोकसभा चुनाव में महज 2 सीट पर उनकी राजनीतिक औकात का अंदाजा लगने के बाद 2017 में मोदी के शरण में आ गये 2019 में लोकसभा चुनाव में जदयू सिर्फ मोदी का दामन थामते ही 17 सीट पर पहुंच गयी और राजद का सफाया हो गया और कांग्रेस एक सीट पर जीतकर अपनी आबरू बचाने में सफल हुई। पूरे भारत में 2019 के लोकसभा चुनाव के बाद मोदी का पावर न सिर्फ भारत में बल्कि विश्व के पटल पर बढ़ा और सर्जिकल स्ट्राइक, जम्मू-कश्मीर में भारत का तिरंगा फहराना, सीएए लागू करना, ईडी, जीएसटी, सीबीआई, इनकम टैक्स रेड, अयोध्या में राम मंदिर का निर्माण तो विदेश में सनातन धर्म का बढ़ता वर्चस्व को लेकर भारत का 80 प्रतिशत आबादी मोदी का दिवाना बन चुका है। उज्जवला योजना एवं आयुष्मान भारत योजना की चर्चा गांव की चौपाल से संसद के गलियारे तक गहरी पैठ बना चुकी है। कालाधन विदेश से भले ही नहीं आया लेकिन भारत के विभिन्न राज्यों में ई०डी० की रेड ने कोहराम मचा रखा है और देश के भीतर का कालाधन निकालने में कामयाब दिख रहे हैं लेकिन विपक्ष आरोप लगाता है कि सिर्फ विपक्ष के यहां हीं रेड क्यों? राहुल गाँधी 2024 के लोकसभा चुनाव में बस एक ही मुद्दे पर मोदी को घेरना चाहते हैं कि मोदी तीसरी बार प्रधानमंत्री बने तो देश का संविधान ही बदल देंगे तथा वंचितों को न्याय से वंचित होना पड़ेगा। पदयात्रा करने के बाद भी कांग्रेस को जनता का वह सपोर्ट नहीं मिल पा रहा है जिसकी वह उम्मीद करते थे। कांग्रेस ने देश के विभिन्न राज्यों में क्षेत्रीय पार्टियों के साथ समझौता करके अपनी जनाधार को पहले ही कमजोर कर चुके हैं और इंडिया गठबंधन भी कांग्रेस को वह सम्मान नहीं देता जिसकी वजह से कांग्रेस देश में कमजोर एवं लाचार पार्टी के रूप में दिख रही है। कई चरणों के मतदान के बाद यह तो साफ हो गया है कि नरेन्द्र दामोदर दास मोदी तीसरी बार प्रधानमंत्री पद की शपथ लेगे। युवाओं के रोजगार एवं महंगाई के मुद्दे पर भाजपा से नाराजगी लोगो में तो है लेकिन विकल्पहीनता और मोदी का भगवा के साथ कट्टर हिन्दूवादी छवि की वजह से मोदी का विरोध नहीं करना चाहते हैं। मोदी एवं शाह की जोड़ी को विपक्ष ही नहीं बल्कि पार्टी के भीतर भी के असंतुष्ट गुट भी इनका लोहा मानते हैं क्योंकि यह दोनों कृष्ण एवं अर्जुन की जोड़ी जब चुनावी युद्ध में उतरते हैं तो सिर्फ जीत के सभी दांव-पैतरे से परहेज नहीं करते और देश के बीच हिन्दू-मुस्लिम की वोट बैंक पर सबसे बड़ा चोट किया है और आज वर्त्तमान समय के युवाओं में सनातन धर्म को लेकर काफी जागरूकता बढ़ी है और जब युवा फैसला लेगा तो नरेन्द्र मोदी तीसरी बार प्रधानमंत्री पद की शपथ 2024 में लेंगे।

अप्रैल 2024

आपको केवल सच पत्रिका कैसी लगी तथा इसमें कौन-कौन सी खामियाँ हैं, अपने सुझाव के साथ हमारा मार्गदर्शन करें। आपका पत्र ही हमारा बल है। हम आपके सलाह को संजीवनी बूटी समझेंगे।

केवल सच

हमारा पता है :-

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका
द्वारा:- ब्रजेश मिश्र
पूर्वी अशोक नगर, रोड़ नं.- 14, मकान संख्या- 14/28
कंकड़बाग, पटना-800020 (बिहार)
फोन:- 9431073769/ 8340360961/ 9955077308

हमारा ई-मेल
kewalsach@gmail.com, editor.kstimes@rediffmail.com
kewalsach_times@rediffmail.com

विकल्प

संपादक जी,

केवल सच, हिन्दी मासिक पत्रिका का अप्रैल 2024 अंक का संपादकीय ''**2024 में नहीं नरेन्द्र मोदी का विकल्प**'' में आपने वर्त्तमान समय की राजनीति एवं नेताओं की गतिविधियों पर सटीक विश्लेषण किया है कि आखिरकार क्यों नहीं मोदी का विकल्प है। आपका संपादकीय सरल भाषा में आमजनता के दिमाग में बहुत आसानी से समझ में आता है। जिस प्रकार का आलेख आपने इंस अंक में दिया है इससे तो साफ है कि मोदी जी 2024 में सरकार बना लेंगे।

✦ **सोनू मिश्र, राजा बाजार, जहानाबाद, बिहार**

प्रतिष्ठा दांव पर

ब्रजेश जी,

लोकसभा चुनाव 2024 पर पत्रकार मिथिलेश कुमार की खबर ''दो चरणों पर सम्पन्न चुनाव किसकी प्रतिष्ठा दांव पर?'' में गया, नवादा, औरंगाबाद, जमुई के बाद दूसरे चरण में किशनगंज, पूर्णिया, कटिहार, भागलपुर, बांका में एनडीए और इंडिया गठबंधन के बीच कांटे का टक्कर तो है लेकिन नीतीश कुमार के फिर से भाजपा के साथ आने के बाद और नरेन्द्र मोदी के बिहार में सभाओं से काफी असर पड़ा है। खबर में बिना किसी के पक्ष लिखे बुनियादी समस्याओं और नेताओं की जमीनी सच्चाई को लिखा है।

✦ **महेन्द्र यादव, टावर चौक, नवादा**

छोटी पर अच्छी खबर

मिश्रा जी,

अप्रैल 2024 अंक में छोटी-छोटी पर सटीक एवं अच्छी खबरे भी पढ़ने को मिला। जितेन्द्र कुमार सिन्हा की ''केजरीवाल जेल में'' तो डॉ० लक्ष्मी नारायण सिंह की खबर ''बिहार बना अपराध की नगरी'', धर्मेन्द्र सिंह की खबर ''महाकाल भू-लोक के शासक हैं-गुरू साकेत'' में बहुत जानकारीपद्र जानकारी दी गई है वहीं गुड्डू कुमार सिंह की खबर ''चुनाव आयोग की कार्रवाई, हटाये गये डीएम-एसपी'' और पश्चिम चंपारण से डी एन शुक्ला की खबर ''चम्पारण के लाल ने किया कमाल'' की खबर भी सटीक एवं अच्छा लगा।

✦ **कुमुद शर्मा, अस्सी घाट, बनारस यूपी**

के के पाठक

मिश्रा जी,

केवल सच, पत्रिका का अप्रैल 2024 अंक में लोकसभा चुनाव के बीच बिहार के शिक्षा विभाग में फैले भ्रष्टाचार एवं अपर मुख्य सचिव के के पाठक पर केन्द्रीत करके लिखा गया लेख के लिए पत्रकार बधाई के पात्र हैं कि उन्होंने जनता के बीच सच्चाई को लाने का साहस किया है। शीर्षक ही इस बात को साबित करता है कि पत्रकार निडर हैं और पूरी बेबाकी से खबर को लिखा है। के के पाठक के विरूद्ध खबर लिखना ही बड़ी बात है और खबर में सच्चाई है और हो भी यही रहा है। शिक्षा विभाग में फैले भ्रष्टाचार को उजागर करने के लिए धन्यवाद।

✦ **रविन्द्र वर्णवाल, यूसूफ सराय, नई दिल्ली**

झारखंड की खबर

संपादक जी,

केवल सच, पत्रिका में पुलिस की खबरों को पूरी प्राथमिकता के साथ ओम प्रकाश प्रकाशित करते आ रहे हैं और इस अंक में भी कई हत्या कांड के खुलासे की खबर है लेकिन खुशी इस बात की है की हमारे आग्रह को स्वीकार करते हुए अन्य क्षेत्र की खबरों को पल्लवी कुमारी ने लिखा है। विद्यालय सहित अन्य कार्यक्रमों पर भी पैनी नजर रखने से पाठकों की रूची बढ़ती है। जिस प्रकार राजनीति एवं भ्रष्टाचार का पोल खोल खबर बिहार की आता है झारखंड का भी प्रकाशित होने लगे तो वास्तव में केवल सच मजबूती से खड़ा हो जायेगा।

✦ **पंकज कुमार राय, खेलगाँव, राँची, झा०**

भ्रष्टाचार का महासागर

संपादक जी,

शशि रंजन सिंह और राजीव शुक्ला का भगवान रक्षा करना क्योंकि जिस प्रकार केवल सच पत्रिका के सभी अंकों में बिहार सरकार के स्वास्थ्य विभाग में फैले भ्रष्टाचार को उजागर कर रहे हैं उनको कभी भी टारगेट किया जा सकता है। पत्रकार के साथ पत्रिका प्रबंधन भी बधाई की पात्र है कि विज्ञापनरूपी महौल में सरकार के विरूद्ध मोर्चा खोल रखा है। स्वास्थ्य विभाग में मंत्री और अपर मुख्य सचिव क्यों मौन हैं यह समझ में नहीं आता तथा लगता है कि भ्रष्टाचार के महासागर में यह भी डुबकी लगा रहे हैं।

✦ **कौशल राय, घंटा घर, भागलपुर**

अन्दर के पन्नों में

कारागार में त्रिकोणीय संघर्ष.....77

फिर पड़ी ईडी की रेड.....91

RNI No.- BIHHIN/2006/18181, DAVP No.- 129888

समृद्ध भारत खुशहाल भारत

निर्भीकता हमारी पहचान

केवल सच

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका

वर्ष:- 18, | अंक:- 216, | माह:- मई 2024, | मूल्य:- 20/- रू

फाउंडर

स्व० गोपाल मिश्र

स्व० सुषमा मिश्र

संपादक

ब्रजेश मिश्र

9431073769 8340360961

editor.kstimes@rediffmail.com

kewalsach@gmail.com

प्रधान संपादक

अरूण कुमार बंका 7782053204

सुरजीत तिवारी 9431222619

निलेन्दु कुमार झा 9431810505/8210878854

सच्चिदानन्द मिश्र 9934899917

रामानंद राय 9905250798

डॉ० शशि कुमार 9507773579

दिनेश कुमार सिंह 9470829615

ई० सुधीर कुमार राय 7903931179, 8102053916

सोहन कुमार 7004120150, 9334714978

मुकेश कुमार साव 9709779465,

संपादकीय सलाहकार

अमिताभ रंजन मिश्र 9430888060, 8873004350

अमोद कुमार 9431075402

महाप्रबंधक

त्रिलोकी नाथ प्रसाद 9308815605, 9122003000

triloki.kewalsach@gmail.com

महाप्रबंधक (विज्ञापन)

पूनम जयसवाल 9430000482, 9798874154

मनीष कुमार कमलिया 9934964551, 8809888819

उप-संपादक

अरबिन्द मिश्रा 9934227532, 8603069137

प्रसुन्न पुष्कर 9430826922, 7004808186

ब्रजेश सहाय 7488696914

ललन कुमार 7979909054, 9334813587

आलोक कुमार सिंह 8409746883

संयुक्त संपादक

अमित कुमार 'गुड्डू' 9905244479, 7979075212

राजीव कुमार शुक्ला 9430049782, 7488290565

कृष्ण कुमार सिंह 6209194719, 7909077239

काशीनाथ गिरी 9905048751, 9431644829

सहायक संपादक

शशि रंजन सिंह 8210772610, 9431253179

मिथिलेश कुमार 9934021022, 9431410833

नवेन्दु कुमार मिश्र 9570029800, 9199732994

कामोद कुमार कंचन 8971844318,

समाचार प्रबंधक

सुधीर कुमार मिश्र 9608010907

ब्यूरो-इन-चीफ

संकेत कुमार झा 9386901616, 7762089203

बिनय भूषण झा 9473035808, 8229070426.

.

विधि सलाहकार

शिवानन्द गिरि 9308454485

रवि कुमार पाण्डेय 9507712014

चीफ क्राइम ब्यूरो

सैयद मो० अकील 9905101976, 8521711976

आनन्द प्रकाश 9508451204, 8409462970

साज-सज्जा प्रबंधक

अमित कुमार 9905244479

amit.kewalsach@gmail.com

कार्यालय संवाददाता

सोनू यादव 8002647553, 9060359115

प्रसार प्रतिनिधि

कुणाल कुमार 9905203164

बिहार प्रदेश जिला ब्यूरो

पटना (श०)	:-	श्रीधर पाण्डेय	9470709185
(म०)	:-	गौरव कुमार	9472400626
(ग्रा०)	:-		
बाढ़	:-		
भोजपुर	:-	गुड्डू कुमार सिंह	8789291547
बक्सर	:-	बिन्ध्याचल सिंह	8935909034
कैमूर	:-		
रोहतास	:-	अशोक कुमार सिंह	7739706506
	:-		
गया (श०)	:-	सुमित कुमार मिश्र	7667482916
(ग्रा०)	:-		
औरंगाबाद	:-		
जहानाबाद	:-	नवीन कुमार रौशन	9934039939
अरवल	:-	संतोष कुमार मिश्रा	9934248543
नालन्दा	:-		
	:-		
नवादा	:-	अमित कुमार	9934706928
	:-		
मुंगेर	:-		
लखीसराय	:-		
शेखपुरा	:-		
बेगूसराय	:-	निलेश कुमार	9113384406
	:-		
खगड़िया	:-		
समस्तीपुर	:-		
जमुई	:-	अजय कुमार	09430030594
वैशाली	:-		
	:-		
छपरा	:-		
सिवान	:-		
	:-		
गोपालगंज	:-		
	:-		
मुजफ्फरपुर	:-	.	
	:-		
सीतामढ़ी	:-		
शिवहर	:-		
बेतिया	:-	रवि रंजन मिश्रा	9801447649
बगहा	:-		
मोतिहारी	:-	संजीव रंजन तिवारी	9430915909
दरभंगा	:-		
	:-		
मधुबनी	:-	सुरेश प्रसाद गुप्ता	9939817141
	:-	प्रशांत कुमार गुप्ता	6299028442
सहरसा	:-		
मधेपुरा	:-		
सुपौल	:-		
किशनगंज	:-		
	:-		
अररिया	:-	अब्दुल कय्यूम	9934276870
पूर्णिया	:-		
कटिहार	:-		
भागलपुर,	:-		
(ग्रा०)	:-	रवि पाण्डेय	7033040570
नवगछिया	:-		

दिल्ली कार्यालय

केवल सच, हिन्दी मासिक पत्रिका,
द्वारा- संजय कुमार सिन्हा
A-68, 1st Floor,
नागेश्वर तल्ला, शास्त्रीनगर, न्यू
दिल्ली-110052
संजय कुमार सिन्हा, स्टेट हेड
मो०- 9868700991, 9431073769

उत्तरप्रदेश कार्यालय

केवल सच, हिन्दी मासिक पत्रिका,
....., स्टेट हेड

सम्पर्क करें
9308815605

पश्चिम बंगाल कार्यालय

केवल सच, हिन्दी मासिक पत्रिका,
द्वारा- अजीत कुमार दुबे
131 चितरंजन एवेन्यू,
कोलकात्ता, पश्चिम बंगाल- 700073
अजीत कुमार दुबे, स्टेट हेड
मो०- 9433567880, 9308815605

मध्य प्रदेश कार्यालय

केवल सच, हिन्दी मासिक पत्रिका,
हाउस नं.-28, हरसिद्धि कैम्पस
खुशीपुर, चांबड़
भोपाल, मध्य प्रदेश- 462010
अभिषेक कुमार पाठक, स्टेट हेड
मो०- 8109932505,

झारखंड कार्यालय

केवल सच, हिन्दी मासिक पत्रिका,
वैष्णवी इंक्लेव,
द्वितीय तल, फ्लैट नं- 2बी
नियर- फायरिंग रेंज
बरियातु रोड, राँची- 834001

छत्तीसगढ़ कार्यालय

केवल सच, हिन्दी मासिक पत्रिका,

....., स्टेट हेड

सम्पर्क करें
8340360961

संपादकीय व प्रधान कार्यालय:-

☞ पूर्वी अशोक नगर, रोड नं:-14, मकान संख्या:- 14/28, कंकड़बाग, पटना-800020 (बिहार) मो०- 9431073769, 9955077308

☞ e-mail:- kewalsach@gmail.com, e ditor.kstimes@rediffmail.com
kewalsach_times@rediffmail.com

☞ स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक ब्रजेश मिश्र द्वारा सांध्य प्रवक्ता खबर वर्क्स, ए- 17, वाटिका विहार (आनन्द विहार), अम्बेडकर पथ, पटना 8000 14(बिहार) एवं पूर्वी अशोक नगर, रोड नं. 14, कंकड़बाग पटना-800020 से प्रकाशित, संपादक- ब्रजेश मिश्र। RNI NO.-BIHHIN/2006/18181

☞ पत्रिका में प्रकाशित समाचारों से संपादक की सहमति आवश्यक नहीं है।

☞ सभी प्रकार के वाद-विवादों का निपटारा पटना न्यायालय के अधीन होगा।

☞ आलेख पर कोई आपत्ति हो तो एक महीने के भीतर खंडन करें।

☞ किसी भी लेख के लिए रचनाकार/लेखक स्वयं जिम्मेवार होंगे।

☞ **सभी पद अवैतनिक हैं।**

☞ फोटो-समाचार साभार भी (माध्यम- इंटरनेट एवं अन्य स्त्रोत)

☞ कोई भी शिकायत हमारे पते पर लिखकर भेजें।

☞ **विज्ञापन का भुगतान चेक या ड्राफ्ट एवं RTGS से ही मान्य होगा।**

☞ भुगतान Kewal Sach को ही करें। प्रतिनिधियों को नगद न दें।

☞ A/C No. :- 0600050004768
BANK :- Punjab National Bank
IFSC Code :- PUNB0060020
PAN No. :- AAJFK0065A

प्रधान संपादक

.....

.....

झारखण्ड स्टेट ब्यूरो

.....

झारखण्ड सहायक संपादक

चन्द्र शेखर पाठक 9572529337
ब्रजेश मिश्र 7654122344 -7979769647
अभिजीत दीप 7004274675 -9430192929

उप संपादक

.....

.....

संयुक्त संपादक

अनंत मोहन यादव 9546624444, 7909076894

.....

विशेष प्रतिनिधि

भारती मिश्रा 8210023343, 8863893672

.....

.....

झारखण्ड प्रदेश जिला ब्यूरो

राँची :- अभिषेक मिश्र 7903856569
:- ओम प्रकाश 9708005900
साहेबगंज :-
खूँटी :-
जमशेदपुर :- तारकेश्वर प्रसाद गुप्ता 9304824724
हजारीबाग :-
जामताड़ा :-
दुमका :-
देवघर :-
धनबाद :-
बोकारो :-
रामगढ़ :-
चाईबासा :-
कोडरमा :-
गिरीडीह :-
चतरा :- धीरज कुमार 9939149331
लातेहार :-
गोड्डा :-
गुमला :-
पलामू :-
गढ़वा :-
पाकुड़ :-
सरायकेला :-
सिमडेगा :-
लोहरदगा :-

श्री चन्द्र प्रकाश सिंह

प्रधान संरक्षक सह प्रबंध संपादक
'केवल सच' पत्रिका **एवं 'केवल सच टाइम्स'**
राष्ट्रीय संगठन मंत्री, राष्ट्रीय मजदूर कांग्रेस (इंटक)
पूर्व निदेशक सदस्य, ओरियेंटल बैंक ऑफ कॉमर्स
09431016951, 09334110654

डॉ. सुनील कुमार

शिशु रोग विशेषज्ञ सह मुख्य संरक्षक
'केवल सच' पत्रिका
एवं 'केवल सच टाइम्स'
एन.सी.- 115, एसबीआई ऑफिसर्स कॉलोनी,
लोहिया नगर, कंकड़बाग, पटना- 800020
फोन- 0612/3504251

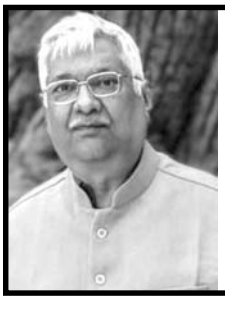

श्री सज्जन कुमार सुरेका

मुख्य संरक्षक
'केवल सच' पत्रिका **एवं 'केवल सच टाइम्स'**
डी- 402 राजेन्द्र विहार, फॉरेस्ट पार्क
भुवनेश्वर- 751009 मो-09437029875

सुधीर कुमार

मुख्य संरक्षक सह निदेशक ''**मगध इंटरनेशनल स्कूल**'' टेकारी
'' **केवल सच** '' पत्रिका **एवं** '' **केवल सच टाइम्स** ''
9060148110
sudhir4s14@gmail.com

कैलाश कुमार मौर्य

मुख्य संरक्षक
'केवल सच' पत्रिका **एवं 'केवल सच टाइम्स'**
व्यवसायी
पटना, बिहार
7360955555

बिहार राज्य प्रमंडल ब्यूरो

पटना		
मगध		
सारण		
तिरहुत		
पूर्णिया	**धर्मेन्द्र सिंह**	9430230000 7004119966
भागलपुर		
मुंगेर		
दरभंगा		
कोशी		

विशेष प्रतिनिधि

आशुतोष कुमार	9430202335, 9304441800
सुमित राज यादव	9472110940, 8987123161
बेंकटेश कुमार	8521308428, 9572796847
राजीव नयन	9973120511, 9430255401
मणिभूषण तिवारी	9693498852
दीपनारायण सिंह	9934292882
आनन्द प्रकाश पाण्डेय	9931202352, 7808496247
विनित कुमार	8210591866, 8969722700
रामजीवन साहू	9430279411, 7250065417

छायाकार

त्रिलोकी नाथ प्रसाद	9122003000, 9431096964
मुकेश कुमार	9835054762, 9304377779
जय प्रसाद	9386899670,
कृष्णा प्रसाद	9608084774, 9835829947

जुबानी जंग के बीच लोकसभा का चुनाव जारी

छिटपुट हिंसा के बीच छठे चरण का चुनाव सम्पन्न

देश में लोकतान्त्रिक व्यवस्था को सुचारु रूप से स्वस्थ्य और स्वच्छ रखने के लिये प्रत्येक पांच बर्षो के बाद देश के लोगों को अपने मत के अधिकार का प्रयोग कर लोकतंत्र के मंदिर में वैसे प्रतिनिधि को भेजते हैं जो देश की सुरक्षा के साथ साथ देश के 140 करोड़ जनता की मुलभुत सुविधाओं और उनके मौलिक अधिकारों की रक्षा का संकल्प लेकर देश के संवैधानिक ढांचो को मजबूत कर गरीबों के विकास के लिये रास्ता बनाएं और देशवासियों की हिफाजत करे.देश में चल रहें लोकसभा आम निर्वाचन 2024 कई मायनों में महत्वपूर्ण है. एक तरफ एनडीए और दूसरी तरफ इण्डिया गठबंधन है. दोनों का एजेंडा अलग है. बीते दस बर्षो से देश का बागडोर भाजपा एवं गठबंधन के घटक दलों के हाथ में है, चुनाव क दौरान आयोजित चुनावी सभा में सभी दलों ने अपने मेनिफिस्टो को पुरे जोर शोर के साथ जनता के बीच रख रही है.बीते दस बर्षो में भाजपा क शाशन काल में कई ऐतिहासिक फैसले हुए जिसमें कश्मीर में धारा 370, तीन तलाक,अयोध्या में राम मंदिर निर्माण, कृषि कानून, नोटबंदी, जीएसटी, सवर्णो को दस प्रतिशत आरक्षण सहित कई फैसलों एवं कानूनों को लागु करने के बाद देश के आम नागरिकों पर इसका क्या असर पड़ा है वह लोकसभा चुनाव समाप्ति के बाद मिली जनादेश से होंगी. लेकिन इन सब चर्चाओं के बीच खासकर बिहार और उत्तर प्रदेश का चुनाव काफी खास मायने रखता है. वैसे तो यह कहा जाता रहा हैं की देश में लोकतंत्र की रक्षा एवं नई सरकार के गठन में बिहार की भूमिका बहुत बड़ी होती है. बिहार एवं उत्तर प्रदेश के बगैर लोकसभा में सरकार का बनना असम्भव होता है। अगर हम बिहार की बात करें तो अब तक छठा चरण के चुनाव के बाद मात्र एक चरण का चुनाव बाकी है, बिभिन्न लोकसभा चुनाव क्षेत्रों में चुनावी सभा को एनडीए एवं इण्डिया गठबंधन के शीर्ष नेताओं ने जहां सरकार की उपलब्धियों को गिनाया वहीं महागठबंधन के नेताओं ने देश के प्रधानमंत्री को सबसे बड़ा झूठा बताते हुए इस बार के चुनाव को संविधान को बचाने, लोकतंत्र की रक्षा करने एवं रोजगार के लिये लड़ाई करने की बात कही जा रही हैं. जैसे जैसे चुनाव के अंतिम चरण आते जा रहें हैं वैसे वैसे जुबानी जंग भी तेज होती जा रही है.बिहार में सियासी घमासान के बीच चल रहें चुनाव की स्थिति एवं मतदाताओं के मिजाज के अनुसार विभिन्न लोकसभा क्षेत्रों में वोट की स्थिति और मतदान का प्रतिशत से बनते बिगड़ते प्रत्याशियों के समीकरण पर प्रस्तुत है **मिथिलेश कुमार** और **अमित कुमार** की चुनावी रिपोर्ट :-

तीसरे चरण में 5 संसदीय क्षेत्रों में मतदान 60 फीसदी के पार पहुंच गया। बड़ी संख्या में मतदाता बूथों पर पहुंचे और अपने मताधिकार का इस्तेमाल किया। शाम छह बजे तक इस चरण में कुल 60 फीसदी मतदान हुआ जबकि कई बूथों पर कतारबद्ध होकर मतदाता अपने मतदान के क्रम की प्रतीक्षा कर रहे थे। साथ ही, इस चरण के 54 उम्मीदवारों के भाग्य ईवीएम में बंद हो गये।बिहार के मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी (सीईओ) एचआर श्रीनिवास ने बताया कि 2019 के लोकसभा चुनाव में इस चरण के संसदीय क्षेत्रों में 61.22 फीसदी मतदान हुआ था। लेकिन इस बार मतदान की अंतिम रिपोर्ट मिलने पर मतदान प्रतिशत में बढ़ोतरी की संभावना है। शाम छह बजे तक तीसरे चरण के संसदीय क्षेत्रों में झंझारपुर में 55.50 प्रतिशत, सुपौल में 62.40 प्रतिशत, अररिया में 62.80 प्रतिशत, मधेपुरा में

61.00 प्रतिशत और खगड़िया में 58.20 प्रतिशत मतदान हुआ। बिहार के सीईओ श्री श्रीनिवास ने बताया कि इस चरण के मतदान को लेकर गठित 9848 बूथों में अररिया में 1547 अतिरिक्त बूयों को चिह्नित किया गया था जहां छायादार स्थान या कमरे नहीं थे, वहां शामियाने कीव्यवस्था की गयी थी। सभी बूथों पर पेयजल एवं अन्य नागरिक सुविधाओं के इंतजाम किए गए थे।

☞ **मधेपुरा :- नीतीश के वोट बैंक में सेंधमारी की कोशिश :-** मधेपुरा का वोटिंग ट्रेंड क्या मैसेज दे रहा है? मौजूदा समय में बिहार में तीन प्रकार के वोट बैंक हैं। एक सीएम नीतीश कुमार का वोट बैंक है। एक मजबूत वोट बैंक बनाने में पीएम नरेंद्र मोदी भी कामयाब रहे हैं।जबकि, वर्षों से राजद सुप्रीमो लालू प्रसाद यादव का एक अपना वोट बैंक रहा है, जो अब तेजस्वी यादव के नाम पर शिफ्ट हो गया है। तेजस्वी यादव ने इस बार नीतीश कुमार के वोट बैंक में सेंधमारी की कोशिश जरूर की है। खासकर ओबीसी वर्ग में, लेकिन मोदी और नीतीश के मिल जाने से ये गठबंधन मजबूत मालूम पड़ रहा है। 2019 के चुनाव में मधेपुरा में 66.3 प्रतिशत वोटिंग हुई थी। इस चुनाव में जदयू के दिनेश यादव ने कद्दावर समाजवादी नेता और राजद कैंडिडेट शरद यादव को 3 लाख से ज्यादा वोटों से हराया था। 2014 के चुनाव में मधेपुरा में 60 फीसदी वोटिंग हुई थी। तब यहां राजद के पप्पू यादव ने जदयू के शरद यादव को 56 हजार वोटों से हराया था।

☞ **अररिया**- यहां ग्रामीणों के अग्रेसिव वोटिंग का राजद को मिल सकता है लाभ

पॉलिटिकल एक्सपर्ट कहते हैं कि इस बार अररिया में मुस्लिम और यादव यानी लालू की एमवाई समीकरण ने अग्रेसिवली वोटिंग की है। मुस्लिम और यादव बहुल क्षेत्रों में जमकर वोटिंग हुई हैं। वहीं, शहरी क्षेत्रों में बूथ तक पहुंचने वाले लोगों की संख्या में गिरावट आई है। इसका फायदा राजद के कैंडिडेट को मिल सकता है।रोजगार नहीं होने की वजह से बड़ी तादाद में लोग अररिया से काम की तलाश में पलायन कर जाते हैं। चुनाव के समय मताधिकार का प्रयोग करने नहीं आ पाते हैं। यही वजह है कि चुनावों में पुरुषों की अपेक्षा महिलाएं अधिक निर्णायक साबित हो रही हैं। अररिया का वोटिंग ट्रेंड्स पिछले चुनाव में अररिया हाई वोटर्स टर्न आउट वाला सीट था। यहां 81 फीसदी वोटिंग हुई थी। इसमें बीजेपी के प्रदीप सिंह ने राजद के सरफराज आलम को 1.37 लाख वोट से हराया।2014 के चुनाव में अररिया में 61.5 फीसदी की वोटिंग हुई थी। तब राजद के तस्लीमुद्दीन ने बीजेपी के कैंडिडेट प्रदीप सिंह को 1. 46 लाख वोट से हराया था। 2009 में अररिया में 55.7 फीसदी वोटिंग हुई थी, तब भाजपा के प्रदीप कुमार सिंह 22 हजार वोट से जीतने में सफल रहे थे।पिछले चुनाव की तुलना में इस बार खगड़िया में वोटिंग ग्राफ में बहुत ज्यादा अंतर नहीं रहा है। लगभग पिछले चुनाव के बराबर ही इस बार भी वोटिंग हुई है। ऐसे में खगड़िया के स्थानीय लोगों का माने तो इसका लाभ एनडीए के कैंडिडेट को मिल सकता है।इसका सबसे बड़ा कारण है पुरुषों की तुलना में महिलाओं का वोटिंग प्रतिशत अधिक रहना। बिहार में महिलाएं अभी भी नीतीश कुमार की कोर वोट बैंक मानी जाती हैं। खगड़िया में 2019 मे 58.8 प्रतिशत की वोटिंग हुई थी। इसके बाद भी एनडीए कैंडिडेट महबूब अली कैसर के जीत का मार्जिन 2.48 लाख था। महबूब अली कैसर का मुकाबला वीआईपी के मुकेश सहनी से था। 2014 के चुनाव में खगड़िया में 60.1 फीसदी वोटिंग हुई थी। तब एलजेपी के कैंडिडेट महबूब अली कैसर ने राजद के कृष्ण

कुमारी यादव को 76 हजार वोटों से हराया था। 2009 में खगड़िया में 46.5 प्रतिशत वोटिंग हुई थी। इसमें जदयू के दिनेश चंद्र यादव 1.38 लाख वोट से जीतने में सफल रहे थे।

☞ **झंझारपुर :-** कम वोटिंग प्रतिशत से एनडीए प्रत्याशी को हो सकता है नुकसान झंझारपुर में गुलाब यादव ने मुकाबले को त्रिकोणीय बना दिया है। ऐसे में पिछले चुनाव से कम वोटिंग क्या संकेत दे रहे हैं। इस सवाल पर झंझारपुर के वरिष्ठ पत्रकार मोहम्मद अजहर हुसैन बताते हैं कि इससे सत्ताधारी दल को नुकसान हो सकता है। वोटर्स मौजूदा सांसद रामप्रीत मंडल के कामों से कुछ ज्यादा खुश नहीं है। पार्टी के खिलाफ भी एंटी इनकंबेंसी का माहौल है। वे कहते हैं कि इस बार जीत-हार का अंतर बेहद कम रहेगा।वहीं, महिला वोटिंग पर्सेंटेज के ग्राफ में बढ़ोतरी पर महिलाएं हमेशा से ही एनडीए के साथ इंटैक्ट रहीं हैं। इसके पीछे का मुख्य कारण सरकारी राशन, शराबबंदी जैसे नीतीश कुमार की लोक कल्याणकारी योजनाएं रही हैं।यहां पिछले चुनाव में 58.3 प्रतिशत की वोटिंग हुई थी। इसमें जदयू के रामप्रीत मंडल ने राजद के गुलाब यादव को 3.23 लाख वोटों से हराया था।2014 के चुनाव में झंझारपुर में 57 फीसदी की वोटिंग हुई थी। इस चुनाव में भाजपा के वीरेंद्र कुमार चौधरी ने राजद के मंगनी लाल मंडल को 55 हजार वोटों से हराया था।2009 के चुनाव में यहां 42.8 फीसदी की वोटिंग हुई थी। तब जदयू से प्रत्याशी रहे मंगनी लाल मंडल 72 हजार वोटों से जीतने में सफल रहे थे। लोकसभा के तीसरे चरण के चुनाव में मंगलवार को 11 राज्यों और केन्द्र शासित दादर-नगर हवेली तथा दमन एवं दीव की कुल 93 सीटों पर शाम पांच बजे तक 60.19 प्रतिशत मतदान हुआ।

☆ **खगड़िया :-** खगड़िया लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र का गठन 1957 में हुआ। यह इलाका सात नदियों से घिरा है। कात्यायनी और अजगैबिनाथ महादेव प्रमुख दर्शनीय स्थल हैं। यह इलाका फरकिया के नाम से भी जाना जाता है। यहां मुख्य रूप से केले, मक्का और मिर्ची की खेती होती है। स्वतंत्रता आंदोलन में खगड़िया के श्यामलाल नेशनल हाईस्कूल का योगदान अहम माना जाता है। 1957 से 2019 तक विभिन्न दलों के उम्मीदवार जीते। 2014 और 2019 में महबूब अली कैसर (लोजपा) विजयी हुए। खगड़िया जिला मुख्यालय से करीब 12 किलोमीटर की दूरी पर मां कात्यायनी का मंदिर है, जहां हर साल भारी संख्या में श्रद्धालु पहुंचते हैं। परबत्ता प्रखंड के भरतखंड में 52 कोठरी 53 द्वार पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र है। यहां के कोशी कॉलेज को बिहार का कैंब्रिज भी कहा जाता है। इस कॉलेज की स्थापना आठ जनवरी 1947 को हुई थी। खगड़िया लोकसभा क्षेत्र में यादव, मुस्लिम, निषाद, कुर्मी, कुशवाहा, सवर्ण मतदाता निर्णायक भूमिका में। 2024 के लोकसभा चुनाव में खगड़िया सीट पर इंडिया गठबंधन और एनडीए गठबंधन के प्रत्याशियों के बीच मुकाबले की उम्मीद है। लेकिन एक बात तय है कि विकास, रोजगार और कृषि मुद्दे इस चुनाव में महत्वपूर्ण भूमिका

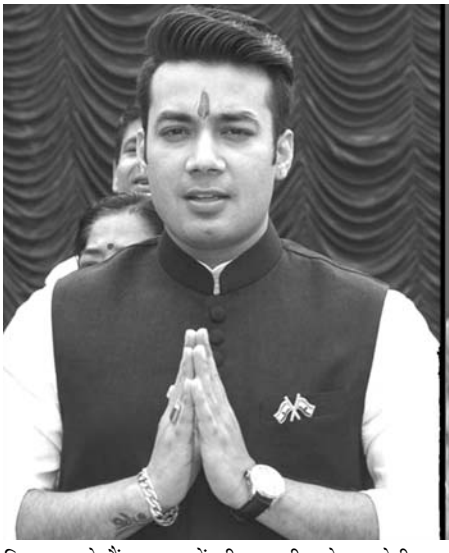

निभा सकते हैं। 2024 में भी इस सीट से एलजेपी के प्रत्याशी एनडीए खेमे से होंगे। खगड़िया लोकसभा क्षेत्र बिहार के कुल 40 क्षेत्रों में एक है. यह जिले का प्रशासनिक मुख्यालय भी है. खगड़िया मुंगेर संभाग का हिस्सा है. इसे 10 मई 1981 को एक स्वतंत्र जिला बनाया गया था. इस जिले का क्षेत्रफल 1,486 वर्ग किलोमीटर है. चुनाव आयोग के 2009 के एक आंकड़े के मुताबिक यहां कुल वोटरों की संख्या 1,342,970 है जिनमें 630,898 महिला और 712,072 पुरुष मतदाता हैं. बात करें 2011 जनगणना की तो इन आंकड़ों के मुताबिक खगड़िया की जनसंख्या 16.67 लाख थी और यहां प्रति वर्ग किलोमीटर 1,122 लोग रहते हैं. इस जिले की 57.92 फीसदी जनसंख्या साक्षर है. इनमें पुरुष 65.25 फीसदी और महिलाओं की साक्षरता दर 49.56 फीसदी है.इस संसदीय क्षेत्र में छह विधानसभा सीटें हैं. इनके नाम हैं–सिमरी बख्तियारपुर, खगड़िया, हसनपुर, बेल्दउर, अलौली (एससी) और परबत्ता. इनमें अलौली विधानसभा सीट एससी के लिए आरक्षित है. यह जिला बाढ़ ग्रसित रहता है, क्योंकि पांच प्रमुख नदियां – गंगा, गंडक, बागमती, कमला और कोशी खगड़िया के उपखंड के क्षेत्र से होकर गुजरती है. पूरे जिले में कोई पहाड़ी नहीं है और न ही इस जिले में कोई खनिज पाया जाता है. जहां तक भूमि उपयोग पैटर्न का संबंध है, गेहूं जिले की प्रमुख रबी फसल है. जिले के दक्षिणी भाग को छोड़कर बाढ़ और जलजमाव के कारण धान का उत्पादन बहुत कम होता है. मक्के की खेती लगभग पूरे जिले में बहुतायत से की जाती है.

☞ **2019 का जनादेश** :– बिहार की खगड़िया लोकसभा सीट पर 2019 चुनाव में महागठबंधन में शामिल विकासशील इंसान पार्टी के मुकेश साहनी और लोक जन शक्ति पार्टी के चौधरी महबूब अली कैसर के बीच कांटे का मुकाबला था. मुकेश साहनी बॉलीवुड के फेमस सेट डिजाइनर हैं और निषादों की राजनीत में इनका बड़ा दखल रहा है. बहुजन समाज पार्टी, राष्ट्रीय जनसंभावना पार्टी, आदर्श मिथिला पार्टी, आम अधिकार मोर्चा, आम जनता पार्टी राष्ट्रीय, बहुजन मुक्ति पार्टी, जनहित किसान पार्टी, शिवसेना, गरीब जनशक्ति पार्टी के साथ 8 निर्दलीय चुनाव मैदान में थें. लेकिन इस बार भी एलजेडी प्रत्याशी मेहबूब अली कैसर ने अपनी जीत बरकरार रखी, उन्हें 5,10,193 वोट मिले. वीआईपी प्रत्याशी मुकेश सहनी 2,61,623 वोटों के साथ दूसरे नंबर पर रहे, तो वहीं स्वतंत्र रूप से खड़े उम्मीदवार प्रियदर्शी दिनकर ने तीसरा स्थान जब्त किया, उन्हें 51,847 वोट मिले थे. खगड़िया लोकसभा सीट पर 58.90 फीसदी वोटिंग दर्ज किया गया था.

☞ **2014 का जनादेश** :– 2014 के लोकसभा चुनाव में इस सीट से एलजेपी उम्मीदवार चौधरी महबूब अली कैसर ने जीत दर्ज की. उन्होंने आरजेडी प्रत्याशी कृष्णा कुमारी यादव को हराया. कैसर को जहां 313806 वोट मिले तो यादव को 237803 वोट. वोट प्रतिशत देखें तो कैसर को जहां 35.01 प्रतिशत मत हासिल हुए तो कृष्णा यादव को 26.53 प्रतिशत वोट मिले. इस सीट पर तीसरे स्थान पर नोटा रहा जिसके तहत 23868 वोट दर्ज हुए. कुल वोटों का यह 2.66प्रतिशत हिस्सा था.

☞ **सुपौल** :– सुपौल बिहार के 40 लोकसभा निर्वाचन क्षेत्रों में से एक है। इस लोकसभा सीट को 2008 में परिसीमन आयोग की सिफारिशों के बाद गठित किया गया। इसके बाद पहली बार 2009 में यहां लोकसभा चुनाव के लिए मतदान हुआ। सांस्कृतिक रूप से यह क्षेत्र काफी समृद्ध है। यह इलाका नेपाल से अपनी सीमा को बांटता है। सुपौल प्राचीन काल में मिथिला राज्य का हिस्सा था। बाद में मगध तथा मुगल सम्राटों ने भी राज किया। पर्यटन स्थलों में गणपतगंज का विष्णु मंदिर, धरहारा का महादेव मंदिर, वीरपुर में कोसी बैराज, हुलास का दुर्गा महादेव मंदिर आदि प्रमुख हैं। सुपौल बिहार की एक हाईप्रोफाइल लोकसभा सीट है. सुपौल सहरसा जिले से 14 मार्च 1991 को विभाजित होकर अलग जिले के रूप में अस्तित्व में आया. सहरसा फारबिसगंज रेलखंड पर स्थित है सुपौल. सांस्कृतिक रूप से यह काफी समृद्ध जिला है. नेपाल से करीब होने के कारण यह सामरिक रूप से भी काफी महत्त्वपूर्ण है. क्षेत्रफल के आधार पर यह कोसी प्रमंडल का सबसे बड़ा जिला है. वीरपुर, त्रिवेणीगंज, निर्मली, सुपौल इसके अनुमंडल हैं. लोकगायिका शारदा सिन्हा एवं स्व. पंडित ललित नारायण मिश्र इसी इलाके से आते हैं. सुपौल प्राचीन काल में मिथिला राज्य का हिस्सा था. बाद में मगध तथा मुगल सम्राटों ने भी यहां राज किया. सुपौल को 1991 में जिला बनाया गया. परिसीमन के बाद 2008 में सुपौल लोकसभा सीट अलग से अस्तित्व में आई. 2009 के चुनाव में यहां से जेडीयू के विश्व मोहन कुमार सांसद बने. 2009 के चुनाव में रंजीत रंजन ने सुपौल सीट से अपनी किस्मत आजमाई थीं. लेकिन तब

रंजीत रंजन जेडीयू के विश्व मोहन कुमार से डेढ लाख वोटों से हार गई थीं. लेकिन 2014 का चुनाव रंजीत रंजन ने कांग्रेस के टिकट पर सुपौल सीट से लड़ा. मोदी लहर के बावजूद इस बार रंजीत रंजन ने 60000 वोटों से जेडीयू के उम्मीदवार दिलेश्वर कमैत को हराकर जीत हासिल की थी. सुपौल उत्तर में नेपाल, दक्षिण में मधेपुरा, पश्चिम में मधुबनी और पूर्व में अररिया जिले से घिरा हुआ है. यह इलाका कोसी नदी के पानी से हर साल आने वाले बाढ़ से प्रभावित होता रहता है. इस इलाके में बाढ़ और रोजगार के लिए पलायन सबसे बड़ी समस्या है. इस संसदीय क्षेत्र में वोटरों की संख्या 1,279,549 है. जिसमें से 672,904 पुरुष वोटर और 606,645 महिला वोटर हैं. बिहार में 5 लोकसभा सीटों पर 13 मई को वोटिंग कराई गई. बिहार में इस चरण में 57.06 फीसदी वोट पड़े जो 2019 की तुलना में कम है. तब बिहार में इन सीटों पर 59.31 फीसदी वोट पड़े थे. समस्तीपुर सीट पर इस बार 58.10 फीसदी वोट पड़े हैं. पिछले चुनाव में 60 फीसदी से अधिक वोट डाले गए थे. समस्तीपुर संसदीय सीट पर इस बार मुकाबला मुख्य रूप से दो नए युवा उम्मीदवारों के बीच है. कांग्रेस ने सनी हजारी तो लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) की शांभवी चौधरी के बीच मुकाबला है. सनी हजारी मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की पार्टी जनता दल यूनाइटेड के वरिष्ठ नेता महेश्वर हजारी के पुत्र हैं तो वहीं शांभवी चौधरी जनता दल यूनाइटेड के नेता और मंत्री अशोक चौधरी की बेटी हैं।

☆ **समस्तीपुर** :- समस्तीपुर जिला कृषि और उद्योग के लिए जाना जाता है. यहीं पर डॉ राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय है, जिसकी गिनती देश के नामी कृषि यूनिवर्सिटी में होती है. कभी समस्तीपुर लोकसभा सीट पर कांग्रेस का दबदबा हुआ करता था. लेकिन पिछले कुछ चुनावों से इस सीट पर एनडीए उम्मीदवार ही जीतते आए हैं. 2019 के लोकसभा चुनाव में एनडीए के सहयोगी लोजपा के टिकट पर रामचन्द्र पासवान चुनाव लड़े थे और लगातार दूसरी जीत हासिल की थी. 2019 के चुनाव में रामचन्द्र पासवान को 562,443 वोट मिले थे. वहीं दूसरे नंबर पर कांग्रेस के अशोक कुमार रहे थे. अशोक को 310,800 वोट मिले थे. वहीं तीसरे नंबर पर वाजिब अधिकार पार्टी के अजय कुमार थे, इन्हें 27,577 वोट मिले थे. वहीं निर्दलीय उम्मीदवार ममता कुमारी 23,590 वोटों के साथ चौथे नंबर रही थीं. इस चुनाव में रामचंद्र पासवान को हर लोकसभा क्षेत्र में बढ़त मिली थी. हालांकि, चुनाव जीतने के कुछ महीनों बाद ही रामचन्द्र पासवान की मृत्यु हो गई. इसके बाद उपचुनाव में इनके बेटे प्रिंसराज चुनावी मैदान में उतरे थे. प्रिंसराज ने एक बार फिर से कांग्रेस प्रत्याशी अशोक राम को चुनाव में पटखनी दी. समस्तीपुर लोकसभा सीट एससी उम्मीदवारों के लिए सुरक्षित सीट है. समस्तीपुर लोकसभा सीट के अंतर्गत छह विधानसभा सीटें आती हैं, जिनमें समस्तीपुर, कल्याणपुर, वारिसनगर, रोसड़ा, कुशेश्वर स्थान और हायाघाट हैं. कुशेश्वर स्थान और हायाघाट दरभंगा जिले का हिस्सा है. समस्तीपुर लोकसभा सीट पहले सामान्य सीट ही थी, लेकिन 2009 के परिसीमन के बाद यह सीट एससी उम्मीदवारों के लिए सुरक्षित हो गई.

☞ **क्या है जातीय समीकरण** :- समस्तीपुर लोकसभा क्षेत्र में कुशवाहा और यादव जाति के लोग अधिक हैं. इसके अलावा अनुसचित जाति की आबादी भी अधिक है. सामान्य और ओबीसी समुदाय के वोटर्स भी निर्णायक भूमिका में रहते हैं. यहां के मुस्लिम वोटर्स की संख्या भी अच्छी खासी तादाद में है. 2019 के चुनाव में 12 प्रत्याशी चुनावी मैदान में थे. लेकिन सबको पटखनी देते हुए लोजपा के रामचन्द्र पासवान ने विजय पताका लहराया था. समस्तीपुर लोकसभा क्षेत्र में 2019 के लोकसभा चुनाव में समस्तीपुर लोकसभा सीट पर कुल 1679030 मतदाता थे, जिन्होंने LJP प्रत्याशी रामचंद्र पासवान को 562443 वोट देकर जिताया था. उधर, INC उम्मीदवार डॉ अशोक कुमार को 310800 वोट हासिल हो सके थे, और वह 251643 वोटों से हार गए थे।

☞ **समस्तीपुर संसदीय सीट, जो अनुसूचित जाति के लिए आरक्षित है** :- इससे पहले, समस्तीपुर लोकसभा सीट पर वर्ष 2014 में हुए आम चुनाव के दौरान 1504451 मतदाता दर्ज थे. उस चुनाव में LJP पार्टी के प्रत्याशी रामचंद्र पासवान ने कुल 270401 वोट हासिल कर जीत दर्ज की थी. उन्हें लोकसभा क्षेत्र के कुल मतदाताओं में से 17.97 प्रतिशत ने समर्थन दिया

था, और उन्हें उस चुनाव में डाले गए वोटों में से 31.33 प्रतिशत वोट मिले थे. उधर, दूसरे स्थान पर रहे थे INC पार्टी के उम्मीदवार डॉ. अशोक कुमार, जिन्हें 263529 मतदाताओं का समर्थन हासिल हो सका था, जो लोकसभा सीट के कुल वोटरों का 17.52 प्रतिशत था और कुल वोटों का 30.53 प्रतिशत रहा था. लोकसभा चुनाव 2014 में इस संसदीय सीट पर जीत का अंतर 6872 रहा था. उससे भी पहले, बिहार राज्य की समस्तीपुर संसदीय सीट पर वर्ष 2009 में हुए लोकसभा चुनाव के दौरान 1312948 मतदाता मौजूद थे, जिनमें से JDU उम्मीदवार महेश्ध्वर हजारी ने 259458 वोट पाकर जीत हासिल की थी. महेश्वर हजारी को लोकसभा क्षेत्र के कुल मतदाताओं में से 19.76 प्रतिशत वोटरों का समर्थन हासिल हुआ था, जबकि चुनाव में डाले गए वोटों में से 44.37 प्रतिशत वोट उन्हें मिले थे. दूसरी तरफ, उस चुनाव में दूसरे स्थान पर LJP पार्टी के उम्मीदवार रामचंद्र पासवान रहे थे, जिन्हें 155082 मतदाताओं का साथ मिल सका था. यह लोकसभा सीट के कुल वोटरों का 11.81 प्रतिशत था और कुल वोटों का 26.52 प्रतिशत था. लोकसभा चुनाव 2009 में इस संसदीय सीट पर जीत का अंतर 104376 रहा था

★ **चौथा चरण चुनाव :-**

☞ **दरभंगा :-** दरभंगा लोकसभा क्षेत्र की पहचान पान, मखाना, मछली और आतिथ्य सत्कार के लिए है। यह मिथिलांचल का केंद्र है, जो अपनी समृद्ध सांस्कृतिक परंपराओं के लिए प्रसिद्ध है। दरभंगा का इतिहास प्राचीन काल से जुड़ा हुआ है और यह कई महान राजवंशों और शासकों का घर रहा है। दरभंगा महाराज: दरभंगा महाराज को भारत का सबसे बड़ा जमींदार कहा जाता था। उन्होंने जनकल्याण में कई कॉलेज, मेडिकल कॉलेज, तिरहुत रेलवे, अशोक पेपर मिल आदि की स्थापना कराई। दरभंगा मिथिलांचल का केंद्र है, जो अपनी समृद्ध सांस्कृतिक परंपराओं के लिए प्रसिद्ध है। दरभंगा का रामायण से गहरा संबंध है। माना जाता है कि यहीं पर सीता का जन्म हुआ था। दरभंगा एक महत्वपूर्ण राजनीतिक केंद्र भी है। कई प्रसिद्ध राजनेता, जैसे कि कीर्ति आजाद और अली अशरफ फातमी, दरभंगा से सांसद रहे हैं।

☞ **दरभंगा लोकसभा क्षेत्र में छह विधानसभा क्षेत्र शामिल हैं :-** दरभंगा शहरी, दरभंगा ग्रामीण, बेनीपुर, अलीनगर, गौराबौराम और बहादुरपुर।

☞ **जनसंख्या :-** दरभंगा की जनसंख्या लगभग 39 लाख 21 हजार 971 है।

☞ **साक्षरता दर :-** दरभंगा की औसत साक्षरता दर 44.32 फीसद है।

☞ **मतदाताओं की संख्या :-** दरभंगा में लगभग 16 लाख 20 हजार 514 मतदाता हैं।

☞ **विकास और मुद्दे :-** दरभंगा में कई विकासात्मक पहल हुई हैं, जैसे कि दरभंगा एयरपोर्ट का विकास, एम्स की स्थापना और बीपीओ सेंटर खोलना। हालांकि, बाढ़, जल संकट, और तारामंडल के निर्माण की अधूरी योजना जैसे मुद्दे भी मौजूद हैं।

☞ **दरभंगा की खास बातें :-** दरभंगा कई महान विद्वानों का जन्मस्थान रहा है, जिनमें कुमारिल भट्ट, मंडन मिश्र, गदाधर पंडित, शंकर, वाचास्पति मिश्र, विद्यापति, नागार्जुन आदि शामिल हैं। यह क्षेत्र आम और मखाना के उत्पादन के लिए भी प्रसिद्ध है। दरभंगा एक समृद्ध इतिहास और संस्कृति वाला एक महत्वपूर्ण शहर है। यह विकास और प्रगति की ओर अग्रसर है, और यह निश्चित रूप से भविष्य में एक महत्वपूर्ण केंद्र बनकर उभरेगा। इस लोकसभा सीट पर कुल 17 लाख 74 हजार 656 मतदाता हैं। जिसमें पुरुष मतदाता की संख्या 9 लाख 33 हजार 122 है। वहीं महिला मतदाता की संख्या 8 लाख 41 हजार 499 है। कुल मतदाता में 35 थर्ड जेंडर हैं। यहां कुल 1785 मतदान केंद्र बनाए गए हैं। इस लोकसभा में कुल 6 विधानसभा का इलाका दरभंगा नगर, दरभंगा ग्रामीण, गौरबौराम, बहादुरपुर, अलीनगर, बेनीपुर है। 5 विधानसभा में एनडीए के विधायक हैं। इसमें एनडीए गठबंधन से भाजपा की उम्मीदवार गोपाल जी ठाकुर और इंडिया गठबंधन से राजद उम्मीदवार ललित कुमार यादव के बीच सीधी टक्कर है। गोपालजी ठाकुर 2010 में बेनीपुर विधानसभा से विधायक बने। हालांकि, 2015 में चुनाव हार गए। इसके बाद पार्टी ने उन्हें 2019 में लोकसभा का टिकट दिया। 2019 के लोकसभा चुनाव में एनडीए

उम्मीदवार गोपाल जी ठाकुर को कुल 5,86,668 मत प्राप्त हुआ था उन्होंने अब्दुल बारी सिद्दीकी(राजद) को 267,979 मतों से पराजित किया था।

☞ **6 बार विधायक रह चुके हैं ललित यादव :-** ललित यादव ने भी अपनी राजनीति की शुरुआत राजद से की वह दरभंगा ग्रामीण से लगातार 6 बार के विधायक हैं। वर्ष 2024 के दरभंगा लोकसभा चुनाव में राजद के टिकट पर किस्मत आजमा रहे ललित यादव पहले प्रतिनिधि हैं। जिन्होंने लगातार दरभंगा ग्रामीण क्षेत्र से 6 बार जीत हासिल की है। वर्ष 1995 में बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव के समय ललित कुमार यादव पहली बार विधायक बने थे। तथा 2022 में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के मंत्रीमंडल में उन्हें लोक स्वास्थ्य अभियंत्रण विभाग के मंत्री रहे।

☞ **कीर्ति आजाद दो बार रहे सांसद :-** दरभंगा लोकसभा सीट 1999 में पहली बार यहां से भाजपा ने जीत दर्ज की, और कीर्ति आजाद यहां से सांसद बने। इसके बाद 2004 को छोड़ दिया जाए तो 2009 और 2014 में भी भाजपा ने यहां से जीत दर्ज की और कीर्ति आजाद लगातार यहां से सांसद रहे। 1996 और 1998 में सांसद रहे अली असरफ फातमी ने 2004 में कीर्ति आजाद को मात दी थी। इसके बाद केंद्र सरकार में वह राज्य प्रभार के मानव संसाधन विकास विभाग के मंत्री भी रहे। 1999 से पहले दरभंगा लोकसभा सीट कांग्रेस और राजद का गढ़ माना जाता रहा है। जानकारी होगी 2019 के लोकसभा चुनाव में इस लोकसभा सीट से 20 हजार से अधिक लोगों ने नोटा का इस्तेमाल किया था।

★ **उजियारपुर :-** उजियारपुर लोकसभा क्षेत्र से केंद्रीय गृहराज्य मंत्री और बीजेपी उम्मीदवार नित्यानंद राय का बिहार सरकार के पूर्व मंत्री आरजेडी उम्मीदवार आलोक कुमार मेहता से सीधा मुकाबला है। नित्यानंद राय को तीसरी दफा सफलता पाने के लिए काफी मशक्कत करनी पड़ रही है। वहीं इनको रोकने के लिए तीसरी दफा राजद के आलोक कुमार मेहता भी संघर्ष कर रहे है। सब्जी उत्पादन का मुख्य केंद्र के रूप में चर्चित उजियारपुर संसदीय क्षेत्र के करीब 16 लाख मतदाता अपने मताधिकार का उपयोग करेंगे। उजियारपुर लोकसभा क्षेत्र 2009 परिसीमन के बाद अस्तित्व में आया था। 2009 परिसीमन के बाद अस्तित्व में आया उजियारपुर लोकसभा क्षेत्र पर एनडीए का कब्जा है। जेडीयू की

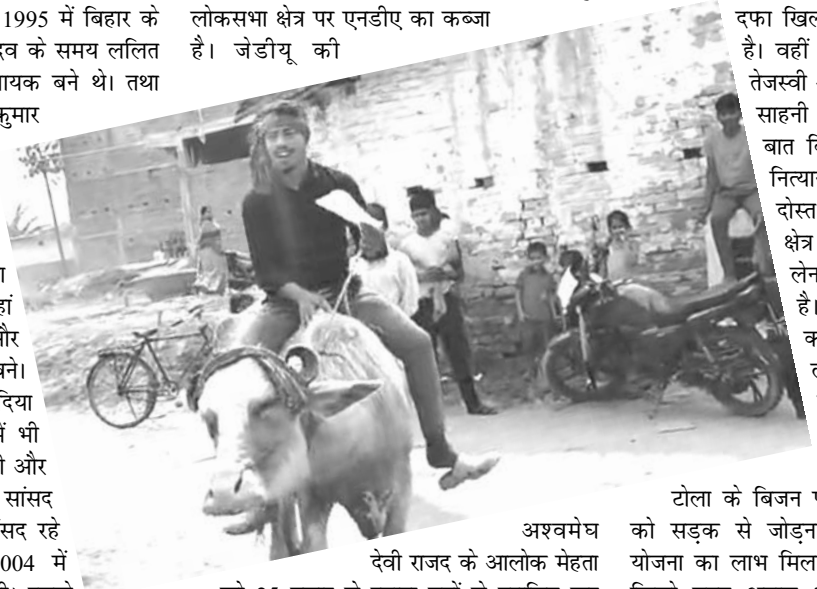

अश्वमेघ देवी राजद के आलोक मेहता को 25 हजार से ज्यादा मतों से पराजित कर पहली सांसद बनी थी। 2014 में भाजपा के नित्यानंद राय ने कमल खिलाया था। इन्हें 3 लाख 17 हजार से अधिक मत मिले थे। राजद के उम्मीदवार आलोक कुमार मेहता को 2 लाख 56 हजार से अधिक मत हासिल हुए थे। ये साठ हजार से अधिक मतों से शिकस्त खा गए थे। 2019 चुनाव में नित्यानंद राय को जीत के अंतर में इजाफा मिला। 2 लाख 77 हजार से ज्यादा मतों से इनकी जीत हुई। इनके सामने रालोसपा प्रमुख उपेंद्र कुशवाहा थे। इन्हें 2 लाख 66 हजार से अधिक मत प्राप्त हुए थे। जबकि बीजेपी उम्मीदवार नित्यानंद राय को 5 लाख 43 हजार से ज्यादा मत मिले। और जीत हासिल कर केंद्र में गृह राज्यमंत्री बने। इस बार उपेंद्र कुशवाहा राजग के साथ है और काराकाट संसदीय क्षेत्र से चुनाव लड़ रहे है।

☞ **नित्यानंद राय को अपना खास दोस्त बता चुके हैं गृहमंत्री अमित शाह :-** नित्यानंद राय की जीत के लिए इसी महीने गृहमंत्री अमित शाह अपील कर गए है। भाजपा, जेडीयू और लोजपा (रा) के नेता कमल तीसरी दफा खिलाने के लिए जोर लगा रहे है। वहीं राजद उम्मीदवार के लिए तेजस्वी और वीआईपी प्रमुख मुकेश साहनी आ चुके है। लेकिन खास बात कि गृहमंत्री अमित शाह ने नित्यानंद राय को अपना खास दोस्त बता गए है। इस संसदीय क्षेत्र में हाजीपुर-बछबाड़ा चार लेन वाली सड़क निर्माणाधीन है। सरायगंज में मेडिकल कालेज बनना बड़ा काम लगता है। अमृत भारत के तहत दलसिंहसराय, शाहपुर पटोरी रेलवे स्टेशन का जीर्णोद्धार दिखता है। दलित टोला के बिजन पासवान बताते है कि टोले को सड़क से जोड़ना और प्रधानमंत्री आवास योजना का लाभ मिलना उपलब्धि है। वहीं पांच किलो मुफ्त अनाज भी महिला मतदाताओं के बीच मायने रखती है। लेकिन राजद की जिलाध्यक्ष रोमा भारती इन उपलब्धियों को नकारती है। उजियारपुर सीट पर इस बार 56.00 फीसदी वोट पड़े हैं. जबकि पिछले चुनाव में इस क्षेत्र में 60. 15 वोट डाले गए थे. उजियारपुर लोकसभा सीट पर केंद्रीय गृह राज्य मंत्री नित्यानंद राय तीसरी बार जीत के लिए मैदान में उतरे हैं और उनका मुकाबला राष्ट्रीय जनता दल (आरजेडी) के वरिष्ठ नेता और पूर्व राज्य मंत्री आलोक मेहता से है. बिहार में 40 लोकसभा सीटें हैं, इनमें

उजियारपुर सीट राज्य की हॉट सीटों में एक मानी जाती है. भारतीय जनता पार्टी के दिग्गज नेता नित्यानंद राय इस सीट पर लोकसभा चुनाव में लगातार दो बार जीत हासिल कर चुके हैं. उजियारपुर लोकसभा क्षेत्र समस्तीपुर जिले के अंतर्गत आता है. 2008 में परिसीमन हुआ तो उजियारपुर अलग लोकसभा क्षेत्र बना. साल 2009 में यहां पर जनता दल यूनाइटेड के टिकट पर अश्वमेध देवी ने चुनाव लड़ा था और जीत हासिल की थी. लेकिन इसके बाद के अगले दो चुनाव 2014 और 2019 बीजेपी नेता नित्यानंद राय जीते.। उजियारपुर लोकसभा सीट बिहार के हॉट सीटों में शुमार है. 2019 में बीजेपी के दिग्गज नेता नित्यानंद राय के खिलाफ रालोसपा के टिकट पर उपेंद्र कुशवाहा चुनाव लड़े. लेकिन उन्हें जीत नसीब नहीं हुई. उपेंद्र कुशवाहा को नित्यानंद राय ने 2.77 लाख वोटों के अंतर से चुनाव में पटखनी दी थी. तीसरे नंबर पर सीपीआईएम उम्मीदवार अजय कुमार रहे थे. इस चुनाव में नित्यानंद राय को लगभग 5,43,906 वोट मिले थे. वहीं उपेंद्र कुशवाहा को 2,66,628 वोटों की प्राप्ति हुई थी. सीपीआईएम उम्मीदवार अजय कुमार को 27,577 वोट मिले थे. इस सीट पर कुल 18 उम्मीदवार चुनावी मैदान में थे. जातीय समीकरण की बात करें तो उजियारपुर लोकसभा क्षेत्र कुशवाहा और यादव जाति के मतदाताओं की संख्या अधिक है. इसलिए हर पार्टियां इन दोनों जातियों को अपने पाले में करने की कोशिशों में जुटी हुई रहती हैं. इसके अलावा ब्राह्मण, मुस्लिम और ओबीसी समुदाय के वोटर्स भी हर चुनाव में निर्णायक भूमिका में रहते हैं. पिछला चुनाव भी काफी रोचक रहा था. नित्यानंद राय खुद यादव समाज से आते हैं. इसलिए पिछले चुनाव में यादव वोटर्स का तो साथ उनको मिला ही, साथ ही ब्राह्मण और ओबीसी समुदाय का ज्यादातर वोट उन्हें ही प्राप्त हुआ. हालांकि, ऐसा कहा जाता है कि इस चुनाव में निर्दलीय उम्मीदवारों ने उपेंद्र कुशवाहा का खेल बिगाड़ा और उन्हें करारी हार झेलनी पड़ी थी.

☞ **बेगूसराय** :- बेगूसराय में बीजेपी के गिरिराज सिंह के सामने सीपीआई नेता अवधेश कुमार राय हैं। इसलिए सीपीआई प्रत्याशी अवधेश राय को यादव और मुसलमान का सॉलिड वोट जाता दिख रहा है। अतिपिछड़ा वोट चुप्पा वोट है। ये जिधर जाएगा, जीत का कारण बन जाएगा। लोग बताते हैं कि गिरिराज सिंह को बेगूसराय शहर का वोट जा रहा है, लेकिन गांव में सीपीआई की पकड़ मजबूत है। यादव, मुसलमान के अलावा कोयरी-कुर्मी का वोट भी इसे जा रहा है। गिरिराज सिंह मुसलमानों पर बयान देकर हिंदू-मुस्लिम का चुनाव करना चाहते हैं, लेकिन लड़ाई भूमिहार और यादव यानी अगड़ी जाति वर्सेज पिछड़ी जाति की होती जा रही है। गिरिराज सिंह के खिलाफ एंटी इनकम्बेंसी है। यहां से आरएसएस के प्रचारक और बीजेपी के राज्य सभा सदस्य राकेश सिन्हा को टिकट देने की चर्चा थी, लेकिन गिरिराज सिंह टिकट पाने में कामयाब रहे। जानकारी है कि राकेश सिन्हा को बीजेपी ने बेगूसराय जाने से मना कर दिया है। मतलब यह कि इसको लेकर बीजेपी के अंदर तनाव की स्थिति रही। पॉलिटिकल एक्सपर्ट मानते हैं बेगूसराय में मोदी जरूरी, गिरिराज मजबूरी वाली स्थिति है। सीपीआई के प्रत्याशी अवधेश कुमार राय कहते हैं कि बेगूसराय में कई चीजों की आवश्यकता है। सरकार का आश्वासन यहां फेल है। 10 साल में बेगूसराय का विकास जीरो है। दिनकर विश्वविद्यालय पेंडिंग है। मेडिकल कॉलेज बनाने की चर्चा कई बार नेताओं ने की पर नहीं बना। कांवर झील बड़ा पक्षी अभ्यारण्य बन सकता है, पर प्रबंधन के अभाव में यह सूख रहा है। बेगूसराय लोकसभा सीट से बीजेपी के टिकट पर एक बार फिर केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह चुनाव लड़ रहे हैं। उनका मुकाबला महागठबंधन की ओर से भाकपा के उम्मीदवार अवधेश राय से है। 2019 के लोकसभा चुनाव में बेगूसराय सीट तब जबरदस्त चर्चा में आई थी, जब यहां से जेएनयू छात्र संघ के पूर्व अध्यक्ष कन्हैया कुमार भाकपा के टिकट पर चुनाव लड़े थे। तब गिरिराज सिंह ने चार लाख से अधिक वोटों के अंतर से जीत दर्ज की थी। बेगूसराय लोकसभा क्षेत्र में लोगों से बातचीत के दौरान जनता का कहना है कि यहां विकास नहीं हुआ है। कई लोग बातचीत के दौरान केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह से नाराज दिखाई देते हैं। लोगों का कहना है कि जिन कामों को गिरिराज सिंह

अपनी उपलब्धि बता रहे हैं, ये काम पिछले सांसद के कार्यकाल में स्वीकृत हो गए थे और अब उन पर काम चल रहा है। लोगों का कहना है कि गिरिराज सिंह इन कामों को अपनी निजी उपलब्धि बता रहे हैं लेकिन इसमें उनकी निजी उपलब्धि जैसा कुछ नहीं है। बेगूसराय के लोगों का कहना है कि यहां का चुनाव कभी भी हिंदू-मुसलमान के मुद्दे पर नहीं हुआ। लोग कहते हैं कि यह 36 लाख की आबादी के भविष्य का चुनाव है। लोकसभा चुनाव में प्रचार के दौरान बेगूसराय में विश्वविद्यालय बनाने की मांग लगातार उठ रही है। यहां लगभग 1 लाख बच्चे हैं, जिन्हें पढ़ाई के लिए दरभंगा जाना पड़ता है। इसलिए चुनाव प्रचार के दौरान लोगों की ओर से बेगूसराय में विश्वविद्यालय बनाने की मांग को प्रमुखता से उठाया जा रहा है। पूर्व उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव यह घोषणा कर चुके हैं कि अगर इंडिया गठबंधन की सरकार बनी तो बेगूसराय में विश्वविद्यालय की स्थापना की जाएगी। इसके अलावा बेगूसराय जिले में मेडिकल कॉलेज और एयरपोर्ट की मांग बनाने की मांग भी उठ रही है।बेगूसराय सीट पहले वामपंथियों का गढ़ मानी जाती थी लेकिन पिछले दो लोकसभा चुनाव में यहां लाल रंग के बजाय भगवा रंग चढ़ा है। यानी बीजेपी को जीत मिली है। इस बार कन्हैया कुमार उत्तरी-पूर्वी दिल्ली सीट से कांग्रेस के टिकट पर चुनाव लड़ रहे हैं।प्रखंड को मुख्यालय से जोड़ने का मामला काफी दिनों से लटका रहा। हवाई हड्डा को डेवलप नहीं किया गया। सभी ट्रेनों का ठहराव नहीं है। यहां नदियों का जाल है पर ये नदियां सूख रही हैं। सिंचाई के लिए जल का संचय ठीक से नहीं हो रहा है.

बिहार में लोकसभा चुनाव के चौथे चरण में पांच सीटों-दरभंगा, उजियारपुर, समस्तीपुर, बेगूसराय और मुंगेर संसदीय क्षेत्रों में वोटिंग समाप्त हो गयी हैं . बता दें कि इन पांचों सीट पर 55 प्रत्याशी इपनी किस्मत आजमा रहे थे इन प्रत्याशियों में बीएसपी के पांच, कांग्रेस के एक, राजद के तीन, जदयू के एक भाजपा के तीन और लोजपा (रामविलास) के एक प्रत्याशी हैं. इनके अतिरिक्त 21 निर्दलीय, राष्ट्रीय व क्षेत्रीय पार्टी के 14 प्रत्याशी एवं 20 गैर मान्यता प्राप्त

रजिस्टर्ड राजनीतिक दलों के प्रत्याशी मैदान में हैं. बिहार में चौथे चरण के इस चुनाव की खास बात यह है कि इस चरण में केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह, केन्द्रीय गृह राज्यमंत्री नित्यानंद राय की प्रतिष्ठा भी दांव पर है. इसी चरण में जदयू के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष ललन सिंह की साख मुंगेर में दांव पर लगी हुई है. इनके अतिरिक्त दरभंगा सांसद गोपाल जी ठाकुर, मनीगाछी विधायक ललित यादव का दरभंगा संसदीय सीट पर कड़ा मुकाबला माना जा रहा है. वहीं, बिहार सरकार के मंत्री अशोक चौधरी की बेटी शांभवी चौधरी और नीतीश सरकार के ही दूसरे मंत्री महेश्वर हजारी के बेटे सनी हजारी के बीच भी दिलचस्प लड़ाई है. इनके अतरिक्त पूर्व मंत्री तथा राजद विधायक आलोक मेहता की प्रतिष्ठा भी दांव पर है. बता दें कि पांचों सीटों पर कुल 95 लाख 83 हजार 662 मतदाता जिनमें 50 लाख 49 हजार 656 पुरुष और 45 लाख 33 हजार 813 महिला वोटर हैं, जबकि थर्ड जेंडर के 193 वोटर्स हैं. इनमें 100 साल से ज्यादा के 2814 वोटर्स हैं तो एक लाख 51 हजार 482 वोटर्स पहली बार वोट करेंगे. पांचों सीटों पर मात्र एक एनआरआई वोटर है. 92 हजार 313 दिव्यांग वोटर्स के लिए भी इंतजाम किए गए हैं. चौथे फेज की पांच सीटों के लिए कुल 9447 मतदान केंद्र बनाए गए हैं. इनमें शहरी क्षेत्र में 1532 और ग्रामीण इलाकों में 7915 मतदान केंद्र हैं. 32 पिंक बूथ था जहां सिर्फ महिला मतदानकर्मी और सुरक्षाकर्मी तैनात रहेंगे. 43 मॉडल बूथ बनाए गए हैं. तीसरे चरण तुलना में इस बार मतदान का प्रतिशत कम रहा। हालांकि, 2019 में हुए इन पांचों सीटों पर हुए मतदान से तुलना करें तो इस बार करीब 2.33 प्रतिशत कम मतदान हुआ। पिछली बार 59.20 प्रतिशत मतदान हुआ था। इस बार 56.85 प्रतिशत हुआ। मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी एचआर श्रीनिवास के अनुसार, सबसे अधिक फिर से बेगूसराय में 58.40 प्रतिशत मतदान हुआ है। सबसे कम मुंगेर में 55.00 प्रतिशत मतदान हुआ। वहीं दरभंगा में 56.63 प्रतिशत, समस्तीपुर में 58.10 प्रतिशत और उजियारपुर में 56.00 प्रतिशत मतदान हुआ है। कुछ 56.85 प्रतिशत मतदान हुआ। पिछली बार यानी 2019 के लोकसभा चुनाव में कुल मतदान का प्रतिशत 59.20 था.

☆ **मुंगेर** :- मुंगेर में एनडीए प्रत्याशी ललन सिंह जहां भी जा रहे हैं इस बात की ताकीद जरूर कर रहे हैं। उनके इस बयान के कई मायने निकाले जा रहे हैं। लालू प्रसाद यादव ने जब बिना मुहूर्त के अशोक महतो की चट शादी करा उनकी पत्नी को पट मुंगेर का टिकट दे दिया था, तब इस बात की चर्चा तेज थी कि लालू ने ललन सिंह के खिलाफ कमजोर कैंडिडेट दिया है। चुनाव आते-आते अब पटना, लखीसराय और मुंगेर जैसे सवर्ण बहुल तीन जिलों में फैले मुंगेर

लोकसभा क्षेत्र में लड़ाई पूरी तरह अगड़ा-वर्सेज पिछड़ा पर आ टिकी है। लोग यह कहते हुए आसानी से मिल जाते हैं कि जंग वही जीत पाएगा जो अपनी जातियों की किलेबंदी करने में सफल रहेगा। क्या लालू यादव मुंगेर में अगड़ा वर्सेज पिछड़ा कराने की अपनी मंसा में सफल रहे ? क्या अशोक महतो ने ललन सिंह की मुसीबत बढ़ा दी है? क्या नीतीश कुमार और ललन सिंह से नाराज भूमिहार चुनाव में ललन सिंह का साथ दे रहे हैं? क्या अनंत सिंह अपनी पुरानी अदावत भूलकर ललन सिंह को विजयी बनाने के लिए मैदान में हैं, क्या अनंत सिंह का लाभ ललन सिंह को मिल रहा है? भूमिहारों में नीतीश कुमार और ललन सिंह के प्रति नाराजगी ललन सिंह की सबसे बड़ी चुनौती अपनी ही बिरादरी भूमिहारों की नाराजगी दूर करने की है। उनके व्यवहार के कारण भूमिहारों का एक बड़ा वर्ग उनसे नाराज है। उनका आरोप है कि अपनी जाति से अपना सांसद होने के बाद भी वे उन तक आसानी से अपनी समस्या तक नहीं पहुंचा पाते हैं। इलाके की कई समस्याएं है जिनका समाधान नहीं हो पाया है। मोकामा में जहां टाल तो बड़हिया में ट्रेनों के ठहराव को लेकर लोग नाराजगी दर्ज कराते हुए मिल जाते हैं।

☞ **ललन-नीतीश से नाराजगी के बीच जातीय किलेबंदी की लड़ाई :-** ललन सिंह की सबसे बड़ी चुनौती अपनी ही बिरादरी भूमिहारों की नाराजगी दूर करने की है। उनके व्यवहार के कारण भूमिहारों का एक बड़ा वर्ग उनसे नाराज है। उनका आरोप है कि अपनी जाति से अपना सांसद होने के बाद भी वे उन तक आसानी से अपनी समस्या तक नहीं पहुंचा पाते हैं। इलाके की कई समस्याएं है जिनका समाधान नहीं हो पाया है। मोकामा में जहां टाल तो बड़हिया में ट्रेनों के ठहराव को लेकर लोग नाराजगी दर्ज कराते हुए मिल जाते हैं। ललन सिंह को लेकर भूमिहारों के एक बड़े वर्ग में इस बात की नारजगी है कि वे किसी की सुनते नहीं हैं। भूमिहारों में ललन सिंह से ज्यादा नाराजगी उनकी पार्टी के मुखिया और बिहार के सीएम नीतीश कुमार को लेकर है। बड़ी संख्या में लोग उनका नाम सुनते ही भड़क उठते हैं। ये नाराजगी केवल भूमिहारों तक ही सीमित नहीं है। इलाके का एक बड़ा अतिपिछड़ा वर्ग भी नीतीश कुमार के बार-बार पाला बदलने से नाराज है।

☞ **अनंत सिंह ने डैमेज कंट्रोल कर दूर की भूमिहारों की नाराजगी :-** बीच चुनाव में जब

अनंत सिंह को कोर्ट से 15 दिन की पैरोल मिली तो इस बात की चर्चा शुरू हो गई कि मुंगेर की लड़ाई को बाहुबली वर्सेज बाहुबली कराने की कोशिश की गई है, लेकिन यहां कहानी थोड़ी-सी अलग है। नीतीश कुमार से भूमिहारों की नाराजगी की शुरुआत 5 साल पहले अनंत सिंह को जेल भेजने से ही हुई थी। इसमें ललन सिंह की भी एक बड़ी भूमिका सामने आई थी।अब तस्वीर पूरी तरह बदल गई है। अनंत सिंह सारे शिकवे-गिले भूला कर एक बार फिर से ललन सिंह के साथ है। पहले उपचुनाव में अनंत सिंह की पत्नी को जिताने के लिए ललन सिंह ने मशक्कत की, अब ललन सिंह को जिताने के लिए अनंत सिंह ताकत झोंक रहे हैं। अनंत सिंह के इलाके में घूमने के बाद ललन सिंह को सबसे बड़ा लाभ ये मिल रहा है कि मोकामा के जो भूमिहार कशमकश थे, अब वे पूरी तरह ललन सिंह के साथ एक जुट हो गए हैं। मोकामा में लगभग हर कोई ये बात कहते हुए मिल जाते हैं कि विधायक अनंत सिंह के कारण भूमिहारों में फिलहाल ललन सिंह को लेकर नाराजगी नहीं है। अनंत सिंह नहीं होते तो भूमिहारों को दूसरा विकल्प ढूंढना पड़ता। अनंत सिंह के आने से ललन सिंह को फायदा हुआ है। अशोक महतो के कारण ललन सिंह के साथ लामबंद हो रहे भूमिहार मंत्री गिरिराज सिंह का घर है, डिप्टी सीएम विजय सिन्हा यहां के विधायक हैं। इसके बाद भी कोरोना के दौरान बड़हिया की लाइफ लाइन कही जाने वाली जिन चार ट्रेनों का ठहराव यहां से बंद किया गया था वो आज तक बहाल नहीं हो पाया है। इसी ट्रेन से किसान, व्यापारी व्यापार करते थे। आज सब ठप है इसके बाद भी ये बाभनवाद के नाम पर वोट मांगते हैं। इससे ज्यादा दुर्भाग्य क्या हो सकता है। लेकिन अभी एक नीम है तो एक करैला है। ऐसे में किसी एक को खाना है तो अपना करैला ही सही है।

☞ **लालू मुंगेर में अगड़ा बनाम पिछड़ा कराने में कामयाब रहे :-** 2008 की परिसीमन के बाद मुंगेर में अब तक तीन चुनाव हुए हैं। यहां तीनों बार भूमिहार ही जीतने में सफल रहे हैं। इसमें दो बार खुद ललन सिंह जीते हैं। एक बार बाहुबली सूरजभान सिंह की पत्नी वीणा देवी जीती हैं। इसके बावजूद लालू प्रसाद यादव ने यहां से अशोक महतो की पत्नी कुमारी अनीता को उम्मीदवार बनाया। लालू की कोशिश मुंगेर में सवर्ण के खिलाफ पिछड़ा को अपने साथ जोड़ना था और वे इसमें काफी हद तक सफल होते हुए भी दिखाई दे रहे हैं। मुंगेर में यादव और मुस्लिम जहां पूरी तरह लालू प्रसाद यादव और तेजस्वी यादव के साथ लामबंद हैं। अशोक महतो को उम्मीदवार बनाने के बाद ओबीसी का एक बड़ा वर्ग जो अभी तक नीतीश कुमार का कोर वोट बैंक माना जाता था, वो अब लालू प्रसाद यादव के साथ जुड़ता हुआ दिख रहा है। अशोक महतो की पत्नी जो खुद धानुक जाति से आती हैं, उनके कारण धानुक और कुर्मी में एक बड़ी सेंधमारी होती हुई दिखाई दे रही है। कुर्मी की नाराजगी, टिकट बांटने में नीतीश गलती किए हैं अशोक महतो कुर्मी में अपनी पैठ बनाने में कितना कामयाब रहे हैं, अशोक महतो 17 साल जेल में गुजारने के बाद बाहर आए हैं। वे मूल रूप से नवादा के रहने वाले हैं। शेखपुरा का कुछ इलाका उनका गढ़ रहा है। अचानक पहले सुर्यगढ़ा में शादी और इसके बाद मुंगेर से लोकसभा चुनाव का टिकट। यहां की बड़ी आबादी अभी भी ऐसी है जो उनकी पत्नी अनीता देवी और अशोक महतो की पहचान से अंजान है। जो जानते हैं, उनके सामने अशोक महतो की छवि कुख्यात की है। इसका बड़ा नुकसान अशोक महतो को होता हुआ दिखाई दे रहा है। ललन सिंह के उनके खिलाफ नाराजगी जरूर है लेकिन उनके सामने जो हैं उन्हें तो हम पहचानते तक ही नहीं हैं। पहली बार दोनों का नाम सुना हूं। वे बस लालू यादव के नाम पर यहां

चुनाव लड़ रहे हैं। मुंगेर का राजनीतिक इतिहास देखें तो वर्ष 1952, 1957, 1962, 1971 के संसदीय चुनावों में कांग्रेस ने परचम लहराया। लेकिन 1977 के चुनाव में जनता पार्टी ने कांग्रेस के जीत के सिलसिले को रोक दिया। 1980 और 1984 में फिर से कांग्रेस जीती। 1989 में यहां जनता दल की जीत हुई। 1991 में सीपीआई से ब्रह्मानंद मंडल सांसद बने। 1996 में फिर से ब्रह्मानंद मंडल जीते, लेकिन समता पार्टी से। 1998 में एक साल के लिए आरजेडी से विजय कुमार विजय सांसद बने। 2004 में आरजेडी के जयप्रकाश नारायण यादव जीते। 2009 में जेडीयू के ललन सिंह सांसद हुए। 2014 में सूरजभान सिंह की पत्नी एलजेपी से वीणा देवी जीतीं। 2019 में महागठबंधन की कांग्रेस उम्मीदवार और अनंत सिंह की पत्नी नीलम देवी को जेडीयू के ललन सिंह ने हराया और सांसद बने। बाहुबली सूरजभान सिंह की पत्नी वीणा देवी की जीत की बड़ी वजह नरेन्द्र मोदी लहर थी।

★ पांचवे चरण में सम्पन्न हुए लोकसभा के पांच सीटों पर कई दिग्गजों की प्रतिष्ठा दाव पर :- बिहार में मिथिलांचल की तीन लोकसभा सीटों मधुबनी, झंझारपुर और दरभंगा में झंझारपुर का सियासी इतिहास काफी रोचक रहा है. कोसी और कमला नदी की गोद में बसा झंझारपुर इलाका दरभंगा जिले का हिस्सा है लेकिन अलग जिले की मांग यहां लगातार तेज हो रही है. इसी इलाके से बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री डॉ. जगन्नाथ मिश्रा जीतकर संसद और बिहार के सीएम की कुर्सी पर विराजमान हुए. वर्तमान में यहां से सांसद हैं भाजपा के बीरेन्द्र कुमार चौधरी. ये इलाका कभी आरजेडी और जेडीयू के नेता रहे देवेंद्र प्रसाद यादव का भी गढ़ रहा है जो पांच बार यहां से चुनकर संसद गए और केंद्र में मंत्री भी बने. यहां के वोटरों ने 2014 में पहली बार भाजपा को जीत दिलाई. सांसद बीरेंद्र कुमार चौधरी से पहले यहां की राजनीति में श्यामनंदन मिश्र, भोगेंद्र झा, जगन्नाथ मिश्रा, धनिक लाल मंडल एवं गौरीशंकर राजहंस जैसे नेता सक्रिय रहे हैं. लेकिन तमाम बड़े नेताओं के प्रतिनिधित्व

के बावजूद बेरोजगारी, पलायन और पिछड़ेपन आज भी झंझारपुर का पर्याय है. 1972 में इस सीट के अस्तित्व में आने के बाद हुए चुनाव में कांग्रेस उम्मीदवार जगन्नाथ मिश्रा यहां से जीतकर लोकसभा पहुंचे. 1980 के चुनाव में जनता पार्टी(एस) के धनिक लाल मंडल यहां से चुने गए. 1984 के चुनाव में कांग्रेस के धनिकलाल मंडल को झंझारपुर की जनता ने चुना. इसके बाद 1989 में जनता दल के टिकट पर देवेंद्र प्रसाद यादव चुनावी मैदान में उतरे और जीत हासिल की. फिर 1991, 1996, 1999 और 2004 के चुनावों में भी उन्हें जीत मिली. पहले के तीन चुनाव देवेंद्र प्रसाद यादव ने जनता दल उम्मीदवार के रूप में जीता. बीच में 1998 के चुनाव में आरजेडी के सुरेंद्र प्रसाद यादव यहां से जीते. 1999 और 2004 के चुनाव में देवेंद्र प्रसाद यादव आरजेडी के टिकट पर लड़े और चुनाव जीता. 2009 के चुनाव में झंझारपुर की जनता ने जेडीयू उम्मीदवार मंगनीलाल मंडल के सिर जीत का सेहरा बांधा. लेकिन 2014 के मोदी लहर में बीजेपी उम्मीदवार बीरेंद्र कुमार चौधरी को यहां का प्रतिनिधित्व करने का मौका मिला.

★ मधुबनी :- मधुबनी बिहार के दरभंगा प्रमंडल का एक प्रमुख शहर और जिला है. दरभंगा और मधुबनी को मिथिला संस्कृति का केंद्र माना जाता है. मैथिली तथा हिंदी यहां की प्रमुख भाषा है. विश्वप्रसिद्ध मिथिला पेंटिंग और मखाना के पैदावार की वजह से मधुबनी को विश्वभर में जाना जाता है. मधुबनी जिला मिथिला पेंटिंग का एक प्रमुख निर्यात केंद्र भी है. दीवार कला, पेपर और कैनवास पर चित्रकला के हालिया विकास की उत्पत्ति मुख्य रूप से मधुबनी के आसपास के गांवों से हुई थीं साथ यहां की कई महिला कलाकारों को पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है जो बिहार राज्य के गौरव को बढ़ाते हैं.1952 में ये सीट दरभंगा-पूर्व के नाम से जाना जाता था. पहले चुनाव में यहां से कांग्रेस के उम्मीदवार अनिरुद्ध सिन्हा जीते थे. 1971 में कांग्रेस ने इस सीट से जगन्नाथ मिश्रा को उतारा और वे जीतकर संसद पहुंचे. बाद में जगन्नाथ मिश्रा बिहार के मुख्यमंत्री भी बने. 1976 में संसदीय सीटों का परिसीमन हुआ और मधुबनी सीट बनी. जिसमें मधुबनी जिले के पश्चिमी इलाकों को शामिल किया गया. मधुबनी संसदीय क्षेत्र में वोटरों की कुल संख्या 1,397,256 है. इसमें 755,812 पुरुष वोटर हैं जबकि 641,444 महिला वोटर हैं. मधुबनी संसदीय क्षेत्र के तहत

विधानसभा की 6 सीटें आती हैं- हरलाखी, बेनीपट्टी, बिस्फी, मधुबनी, केवटी और जाले. 2015 के बिहार विधानसभा चुनाव में इनमें से तीन सीटें आरजेडी, एक बीजेपी, एक कांग्रेस और एक आरएलएसपी ने जीती. 2019 लोकसभा चुनाव में इस सीट से बीजेपी के अशोक कुमार यादव ने जीत हासिल की, उन्हें 5,95,843 वोट मिले थे, जबकि वीआईपी के बद्री कुमार पुरबे 1,40,903 वोटों के साथ दूसरे स्थान पर रहे और आईएनडी. के डॉ शकील अहमद 1,31,530 वोटों के साथ तीसरे स्थान पर रहे थे. मधुबनी लोकसभा सीट के 2014 के चुनाव नतीजों पर गौर करें तो बीजेपी उम्मीदवार हुकुमदेव नारायण यादव को जीत हासिल हुई थी. हुकुमदेव नारायण यादव को 3,58,040 वोट मिले थे. वहीं दूसरे नंबर पर रहे आरजेडी के अब्दुल बारी सिद्दिकी जिन्हें 3,37,505 वोट मिले. मधुबनी लोकसभा सीट पर वोटिंग को लेकर मतदाताओं में खासा उत्साह देखा गया. यहां शाम 6 बजे तक 52.20 फीसदी वोटिंग हुई है.मधुबनी में बेनीपट्टी विधानसभा के बूथ संख्या 52 के प्राथमिक विद्यालय उरैन में लोक गायिका मैथिली ठाकुर ने परिवार संग डाला वोट. इस सीट पर मुख्य मुकाबला भाजपा और राजद के बीच है. बिहार की अधिकतर सीटों की तरह मधुबनी लोकसभा सीट पर भी NDA और महागठबंधन के बीच सीधी टक्कर है. एनडीए ने बीजेपी के मौजूदा सांसद अशोक यादव को फिर से मैदान में हैं तो महागठबंधन की ओर से आरजेडी के अली अशरफ फातमी इस बार चुनौती पेश कर रहे हैं. चुनाव से ठीक पहले फातमी ने जेडीयू को छोड़कर आरजेडी ज्वाइन किया था. 2019 के लोकसभा चुनाव में तो बीजेपी के अशोक यादव ने 4 लाख 54 हजार से अधिक मतों से जीत हासिल की थी. बिहार में सबसे अधिक अंतर से जीत का रिकॉर्ड बनाया था. उनके पिता और बीजेपी नेता हुकुमदेव नारायण यादव के नाम पर मधुबनी से सबसे ज्यादा 5 बार चुनाव जीतने का रिकॉर्ड भी है.

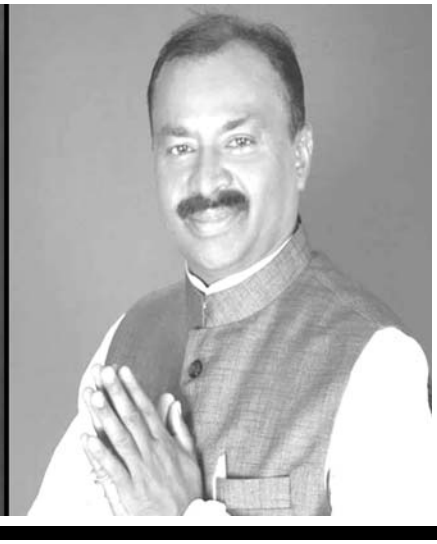

☞ **मधुबनी लोकसभा सीट 2009 से अब तक :-** इस सीट से 2009 में हुए चुनाव में NDA प्रत्याशी के तौर पर बीजेपी के हुकुमदेव नारायण यादव ने आरजेडी के अब्दुल बारी सिद्दीकी को हराया था. 2014 के लोकसभा चुनाव में भी हुकुमदेव नारायण और अब्दुल बारी सिद्दीकी आमने-सामने थे. इस बार भी हुकुमदेव ने मधुबनी में कमल खिलाया. 2019 में बीजेपी ने जीत की हैट्रिक लगाई. इस बार हुकुमदेव नारायण यादव के पुत्र अशोक यादव ने वीआईपी के बद्री कुमार पूर्वे को 4 लाख 54 हजार से अधिक मतों के अंतर से हराया. मधुबनी में अल्पसंख्यक वोटरों की संख्या अच्छी खासी है और यह निर्णायक भूमिका निभाती है. यही कारण है कि एआइएमआइएम ने इस बार मधुबनी से अपना प्रत्याशी खड़ा किया है. मधुबनी लोकसभा क्षेत्र में तीन विधानसभा क्षेत्र ऐसे हैं जिसमें अल्पसंख्यक मतदाताओं की संख्या अधिक है. विस्फी, केवटी और जाले इन तीनों विधानसभा क्षेत्र में मुस्लिम मतदाताओं की संख्या अच्छी खासी है. यही कारण है कि एआइएमआइएम ने मो. वकार सिद्दीकी को अपना उम्मीदवार बनाया है. इसीलिए यह कहा जा रहा है कि मधुबनी लोकसभा में इस बार कांटे की लड़ाई है. मधुबनी लोकसभा में 6 विधानसभा क्षेत्र आते हैं. जिसमें चार मधुबनी जिले के और दो दरभंगा जिले के विधानसभा क्षेत्र शामिल हैं. मधुबनी जिला से हरलाखी, बेनीपट्टी, मधुबनी, बिस्फी हैं. केवटी और जाले विधानसभा सीट दरभंगा जिला का हिस्सा है. हरलाखी से जेडीयू के सुधांशु शेखर, मधुबनी से समीर कुमार महासेठ (राजद) विधायक हैं. बांकी चार सीट भाजपा के खाते में हैं. जाले से पूर्व मंत्री जीवेश कुमार, केवटी से मुरारी मोहन झा, बिस्फी से हरिभूषण ठाकुर बचौल और बेनीपट्टी से विनोद नारायण झा विधायक हैं.

☆ **हाजीपुर :-** हाजीपुर बिहार राज्य के वैशाली जिले का मुख्यालय और सबसे बड़ा शहर है. यह बिहार का एक लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र है. हाजीपुर बिहार का 16वां सबसे अधिक आबादी वाला शहर है, इसके अलावा यह पटना के बाद दूसरा सबसे तेजी से विकसित होने वाला शहर भी है. 2011 की जनगणना के अनुसार इसकी कुल जनसंख्या 1.47 लाख थी. हाजीपुर सीट एससी आरक्षित है. हाजीपुर लोकसभा सीट पर 2014 तक 15 बार संसदीय चुनाव हो चुके हैं, जिनमें से कांग्रेस को 4 बार, कांग्रेस

(गठबंधन) को एक बार, जनता पार्टी को 2 बार, जनता दल को 4 बार, जेडीयू को 2 बार और लोक जनशक्ति पार्टी (एलजेपी) को 2 बार जीत मिली है. इस सीट पर बीजेपी और आरजेडी एक बार भी चुनाव नहीं जीत पाई हैं. रामविलास पासवान 2019 लोकसभा चुनाव नहीं लड़े थे, क्योंकि उनकी तबीयत खराब हो गई थी.हाजीपुर संसदीय क्षेत्र में 6 विधानसभा सीटें आती हैं. इनमें हाजीपुर, लालगंज, महुआ, राजा पाकर, राघोपुर और महनार विधानसभा सीटें शामिल हैं. पटना से सटा हाजीपुर लोकसभा क्षेत्र कई मायनों में अहम है. इसी क्षेत्र से मौजूदा केंद्रीय खाद्य मंत्री राम विलास पासवान आते हैं. पासवान ने कभी यहां से जीत का रिकॉर्ड कायम किया है. पासवान के साथ एक रिकॉर्ड यह भी है कि वे यहां से 8 बार सांसद रह चुके हैं. रामविलास पासवान को दो बार यहां इतने वोट मिले कि रिकॉर्ड बन गया. इसी सीट पर पहली बार कांग्रेस के उम्मीदवार ने चुनाव जीता था. बीजेपी अभी तक इस सीट पर खाता भी नहीं खोल पाई है. 2019 का जनादेश एलजेपी के पशुपति कुमार पारस 5,41,310 वोटों से जीते आरजेडी के शिवचन्द्र राम 3,35,861 वोटों के साथ दूसरे स्थान पर रहे। राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के दसई चौधरी 4,875 वोटों के साथ तीसरे स्थान पर रहे2014 का जनादेश एलजेपी के रामविलास पासवान 4,55,652 वोटों से जीते कांग्रेस के संजीव प्रसाद टोनी 2,30,152 वोटों के साथ दूसरे स्थान पर रहे जेडी(यू) के राम सुन्दर दास 95,790 वोटों के साथ तीसरे स्थान पर रहे।

बिहार की हाजीपुर लोकसभा सीट हर चुनाव में सुर्खियों में रही है. यहां कभी कांग्रेस का दबदबा होता था, लेकिन 1977 के चुनाव में पूर्व केंद्रीय मंत्री स्वर्गीय रामविलास पासवान ने सेंध लगाई थी. इसके बाद तो रामविलास पासवान और उनके परिवार का ही यहां झंडा लहराया. लेकिन 2019 के चुनाव में स्थिति अलग देखने को मिली. रामविलास पासवान के बेटे चिराग पासवान और चाचा पशुपति पारस के बीच मतभेद दिखे. हालांकि, पिछला चुनाव पशुपति पारस ही जीते थे. 2019 के लोकसभा चुनाव में लोजपा से पशुपति कुमार पारस चुनाव लड़े थे. उन्हें इस चुनाव में जीत मिली थी. पशुपति कुमार पारस को 541,310 वोट मिले थे. वहीं, दूसरे नंबर पर राजद के शिवचन्द्र राम रहे थे. इन्हें 3,35,861 वोटों की प्राप्ति हुई थी.

☞ **क्या है चुनावी इतिहास?** :- हाजीपुर सीट पर कभी कांग्रेस का दबदबा हुआ करता था. साल 1957 के चुनाव में राजेश्वर पटेल ने कांग्रेस के टिकट पर चुनाव लड़ा था और जीते थे. वहीं भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के टिकट पर 1967 में वाल्मिकी चौधरी ने चुनाव जीता. लेकिन 1977 के चुनाव में रामविलास पासवान ने कांग्रेस के दबदबे को कम करते हुए विजय पताका लहराया. रामविलास पासवान फिर दूसरी बार 1980 में चुनाव लड़े और इस बार भी वहीं जीते. लेकिन 1984 में जब चुनाव हुआ तो उन्हें कांग्रेस उम्मीदवार रामरतन राम ने रामविलास पासवान को हरा दिया. लेकिन 1989 चुनाव में रामविलास पासवान का जादू ऐसा चला कि कांग्रेस के महावीर पासवान बुरी तरह चुनाव हार गए. इस चुनाव को राम विलास पासवान ने 5 लाख 4 हजार वोटों के अंतर से जीता था.

☞ **जानें जातीय समीकरण** :- यह सीट पर हिंदू बहुल है. मुस्लिम 9 प्रतिशत और जैन 3 प्रतिशत हैं. जातीय आधार पर इस क्षेत्र में पासवान और रविदास की संख्या ज्यादा है. इसके अलावा राजपूत, भूमिहार और कुशवाहा समाज के वोटर्स भी हैं. ओबीसी समुदाय के लोग भी अच्छी तादाद में हैं. हर चुनाव में ये निर्णायक भूमिका में रहते हैं.

☆ **सारण** :- लोकनायक जय प्रकाश नारायण की जन्मभूमि सारण सीट बिहार की सबसे हाई प्रोफाइल संसदीय सीट मानी जाती है. 2008 के परिसीमन से पहले इसका नाम छपरा था. छपरा शहर सारण जिले का मुख्यालय भी है. ये सीट राजपूतों और यादव समुदाय का गढ़ माना जाता है. चुनावी लड़ाई में इसका असर भी देखने को मिलता है. यादव-मुस्लिम वोटों के समीकरण से यहां से लालू यादव 4 बार सांसद रह चुके हैं. लालू यादव ने अपनी संसदीय पारी की शुरुआत 1977 में यहीं से की थी. उनकी पत्नी राबड़ी देवी भी यहां से चुनाव लड़ चुकी हैं. लोकनायक जयप्रकाश नारायण का जन्म सारण के सिताब दियारा में हुआ था. कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री दरोगा राय भी सारण के ही रहने वाले थे. दरोगा राय के बेटे चंद्रिका राय परसा विधानसभा सीट से विधायक हैं. उनकी बेटी ऐश्वर्या राय की शादी लालू यादव के बेटे तेजप्रताप से हुई है. गंगा, गंडक एवं घाघरा नदी से घिरा सारण जिला भारत में मानव बसाव के सार्वाधिक प्राचीन केंद्रों में एक है. यह समतल एवं उपजाऊ इलाका है. भोजपुरी यहां की भाषा है. सोनपुर मेला, चिरांद पुरातत्व स्थल यहां की

पहचान हैं. मढौरा का चीनी मील और मर्टन मील बिहार के पुराने उद्योगों के प्रतीक थे. रेल चक्का कारखाना, डीजल रेल इंजन लोकोमोटिव कारखाना, सारण इंजीनियरिंग, रेल कोच फैक्ट्री भी यहां है. हालांकि शिक्षा और रोजगार के लिए बड़े शहरों की ओर पलायन यहां की आम समस्या है. 2008 में सारण नाम से इस सीट का परिसीमन हुआ. 2009 के चुनाव में भी लालू यादव यहां से जीते. चारा घोटाले में सजा हो जाने के बाद लालू के चुनाव लड़ने पर रोक लग गई और 2014 में राबड़ी देवी इस सीट से उतरीं थी. मोदी लहर में आरजेडी के सारे समीकरण फेल हो गए और चुनाव जीतकर फिर राजीव प्रताप रुडी संसद पहुंचे थे. सारण लोकसभा क्षेत्र में वोटरों की कुल तादाद 1,268,338 है. इसमें से 580,605 महिला मतदाता हैं जबकि 687,733 पुरुष मतदाता हैं. सारण संसदीय सीट के तहत विधानसभा की 6 सीटें आती हैं- मढौरा, छपरा, गरखा, अमनौर, परसा और सोनपुर.

☞ **2019 का जनादेश** :- बीजेपी के राजीव प्रताप रूडी 4,99,342 वोट से जीते। आरजेडी के चंद्रिका राय को 3,60,913 वोट मिले।

☞ **2014 का जनादेश** :- 2014 में सारण सीट से बीजेपी के उम्मीदवार राजीव प्रताप रुडी जीते थे. रुडी ने लालूयादव की पत्नी और बिहार की पूर्व सीएम राबड़ी देवी को हराया. चारा घोटाले में सजा होने के बाद लालू यादव की सदस्यता छिन जाने के बाद राबड़ी देवी सारण से चुनाव मैदान में उतरी थीं लेकिन मोदी लहर में जीत बीजेपी के हाथ लगी. राजीव प्रताप रुडी को 3,55,120 वोट मिले थे. जबकि राबड़ी देवी को 3,14,172 वोट. जेडीयू के सलीम परवेज 1,07,008 वोटों के साथ तीसरे नंबर पर रहे थे. बिहार की सारण लोकसभा सीट पर वोटिंग खत्म हो गई है। शाम 6 बजे तक मिली जानकारी के अनुसार पिछले चुनाव से 2% कम, 54.50% मतदान हुआ है। 2019 में यहां 56.48% वोटिंग हुई थी। एनडीए प्रत्याशी राजीव प्रताप रूडी ने पत्नी और बेटी के साथ अपना वोट कास्ट किया। उन्होंने अमनौर विधानसभा क्षेत्र की बूथ संख्या 12, 13 ,14 को लेकर निवर्तमान सांसद राजीव प्रताप रूडी ने लिखित शिकायत दर्ज कराई है। शिकायत में उन्होंने सारण विकास मंच के संयोजक शैलेंद्र प्रताप सिंह के खिलाफ बूथ कैप्चरिंग जैसे आरोप लगाए हैं। इसके बाद ऑब्जर्वर्स ने मामले की जांच शुरू की है। वोट देने के लिए परिवार संग निकले एनडीए प्रत्याशी राजीव प्रताप रूडी ने कहा कि राजद के कार्यकर्ता और लोग बूथों पर मारपीट कर रहे हैं। पिछड़े, कमजोर खासकर महिलाओं की आवाज दबाने की कोशिश हो रही है। कई बूथों पर निगरानी हुई है और मामला दर्ज किया गया है। इस बार फिर मोदी की सरकार ही आएगी। सारण लोकसभा क्षेत्र बिहार ही नहीं बल्कि भारत के हॉट सीटों में से एक है। एक तरफ भाजपा से राजीव प्रताप रूडी चुनावी मैदान में है। दूसरी तरफ राजद सुप्रीमो लालू प्रसाद यादव की बेटी रोहिणी आचार्य मैदान में है।

☞ **मुजफ्फरपुर** :- मुजफ्फरपुर उत्तरी बिहार के तिरहुत प्रमंडल का मुख्यालय और मुजफ्फरपुर जिले का प्रमुख शहर है. अपने शाही लीची के लिए यह जिला पूरी दुनिया में जाना जाता है. साहित्यकार देवकी नंदन खत्री, रामबृक्ष बेनीपुरी, जानकी वल्लभ शास्त्री और क्रांतिकारी खुदीराम बोस की यह स्थली रही है. जार्ज फर्नान्डिस और कैप्टन जयनारायण प्रसाद निषाद जैसे नेताओं ने मुजफ्फरपुर लोकसभा सीट का प्रतिनिधित्व किया है. 2017 में मुजफ्फरपुर स्मार्ट सिटी के लिए

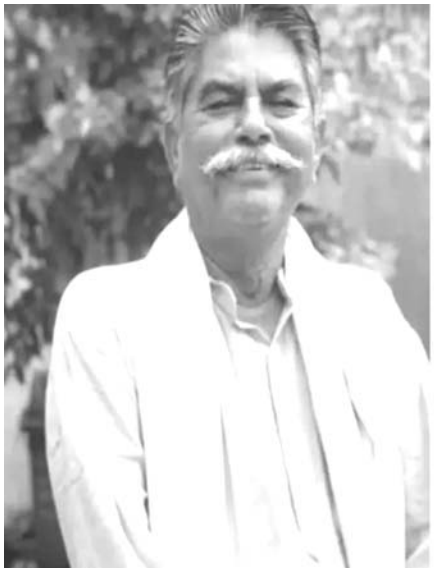

चयनित हुआ. यह जिला ऐतिहासिक रूप से भी काफी समृद्ध है. जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर भगवान महावीर का जन्म वैशाली के निकट बसोकुंड में लिच्छवी कुल में हुआ था. यह स्थान जैन धर्म के अनुयायियों के लिए अत्यंत पवित्र है. मुजफ्फरपुर लोकसभा सीट पर 1952 से 1971 तक कांग्रेस जीती थी. 1977, 1980 में जनता पार्टी की जीत हुई थी. 1989, 1991, 1996 में जनता दल ने जीत हासिल की. 1998 में आरजेडी की जीत हुई और 1999, 2004, 2009 में जेडीयू जीती थी. मुजफ्फरपुर संसदीय क्षेत्र में वोटरों की कुल संख्या है 1,339,949. इनमें से महिला वोटरों की संख्या 622,714 और पुरुष वोटरों की संख्या 717,235 है. मुजफ्फरपुर संसदीय क्षेत्र में विधानसभा की 6 सीटें हैं- गायघाट, औराई, बोचहां, सकरा, कुरहानी और मुजफ्फरपुर. 2019 लोकसभा चुनाव में इस सीट से बीजेपी के अजय निषाद ने जीत हासिल की, उन्हें 6,66,878 वोट मिले थे. जबकि वीआईपी के राज भूषण चौधरी 2,56,890 वोटों के साथ दूसरे स्थान पर रहे और एआईएफबी के अनिरुद्ध सिंह 2,543 वोटों के साथ तीसरे स्थान पर रहे थे. मुजफ्फरपुर लोकसभा सीट पर 2014 में हुए चुनाव में बीजेपी के अजय निषाद जीते थे. अजय निषाद को 4,69,295 वोट मिले थे. दूसरे नंबर पर रहे कांग्रेस के अखिलेश प्रसाद सिंह जिन्हें 2,46,873 वोट मिले थे. जेडीयू के बीजेंद्र चौधरी 85,140 वोटों के साथ तीसरे नंबर पर रहे. इससे पहले 2009 के चुनाव में कैप्टन जयनारायण प्रसाद निषाद ने जेडीयू के टिकट पर यहां से चुनाव जीता था. इस सीट पर वोटरों की संख्या 1,339,949 है.

★ **सिवान लोकसभा क्षेत्र** :- सीवान बिहार राज्य का एक जिला और लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र है. सीवान शहर इस जिले का प्रशासनिक मुख्यालय है. यह जिला 1972 से सारण संभाग का हिस्सा है. राज्य के पश्चिमी भाग में स्थित सीवान जिला, मूल रूप से सारण जिले का एक उप-मंडल था. 1976 में सारण से अलग होने के बाद सीवान एक पूर्ण विकसित जिला बन गया. इतिहास की माने तो सीवान प्राचीन काल में कोसल साम्राज्य का एक हिस्सा था. 8वीं शताब्दी के दौरान सीवान बनारस साम्राज्य का हिस्सा बना. यहां सिकंदर लोदी ने 15वीं शताब्दी में इस क्षेत्र को अपने राज्य के अधीन कर लिया. बाबर ने अपनी वापसी यात्रा में सीवान के पास घाघरा नदी पार की. 17वीं शताब्दी के अंत तक, डच पहले स्थान पर आए और फिर उसके बाद अंग्रेज यहां आए. 1764 में बक्सर की लड़ाई के बाद, यह बंगाल का हिस्सा बन गया. सीवान ने 1857 के स्वतंत्रता आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई. बिहार में पर्दा विरोधी आंदोलन की शुरुआत श्री ब्रज किशोर प्रसाद ने की थी. साथ ही जो 1920 में असहयोग आंदोलन भी शुरु किया था. इसके उत्तर में बिहार का गोपालगंज जिला और पूर्व में बिहार का सारण जिला स्थित है, तो दक्षिण में उत्तर प्रदेश का देवरिया और पश्चिम में बलिया जिला स्थित है. सीवान देश के पहले राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद की जन्मस्थली भी है. सीवान संसदीय क्षेत्र के तहत 6 विधानसभा सीटें आती हैं- सीवान, जीरादेई, दरौली, रघुनाथपुर, दरौंदा और बरहड़िया. एक समय सीवान पूर्व सांसद जर्नादन तिवारी के नेतृत्व में जनसंघ का गढ़ हुआ करता था, लेकिन साल 1980 के दशक के आखिर में मोहम्मद शहाबुद्दीन के उदय के बाद जिले की सियासी तस्वीर बदल गई. बाहुबली नेता मोहम्मद शहाबुद्दीन 1996 से लगातार चार बार सांसद बने. राजनीति में एमए और पीएचडी करने वाले शहाबुद्दीन ने बाहुबल के जरिए सीवान में अपना दबदबा कायम किया. तब माना गया कि सीवान में नक्सलवाद के बढ़ते प्रभाव के डर से हर वर्ग और जाति के लोगों ने शहाबुद्दीन का समर्थन किया था. हालांकि सीवान के चर्चित तेजाब कांड में शहाबुद्दीन को उम्र कैद की सजा होने के बाद यहां की सियासी तस्वीर में बड़ा बदलाव देखने को मिला. शहाबुद्दीन के जेल जाने के बाद यहां ओमप्रकाश यादव का उभार हुआ. साल 2009 में पहली बार निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में ओमप्रकाश यादव चुनाव जीत गए थे. साल 2014 में ओमप्रकाश यादव बीजेपी के टिकट पर दोबारा जीते थे.

☞ **2019 का जनादेश** :- जद(यू) की कविता सिंह 4,48,473 वोटों से जीतीं। राजद के हेना शहाब 3,31,515 वोटों के साथ दूसरे स्थान पर रहे सीपीआई(एमएल)एल के अमर नाथ यादव 74,644 वोटों के साथ तीसरे स्थान पर रहे। अगर 2014 के लोकसभा चुनाव की बात करें तो सीवान के सांसद ओमप्रकाश यादव को 3,72,670 वोट मिले थे. उन्होंने राजद की हिना शहाब को 1 लाख 13 हजार वोटों से हराया.

राजद प्रत्याशी हीना शहाब को 2,58,823 वोट मिले थे. वहीं सीपीआई माले के अमरनाथ यादव ने 81 हजार वोट और जेडीयू के मनोज सिंह ने 79,239 वोट हासिल किए. बता दें कि 2014 लोकसभा चुनाव में कुल वोटर्स 15,63,860 वोटर्स थे. इनमें से 8,84,021 वोटर्स वोट देने के लिए मतदान केंद्र तक पहुंचे थे. उत्तर बिहार में सिवान संसदीय क्षेत्र की पहचान देश के पहले राष्ट्रपति देशरत्न डॉ. राजेंद्र प्रसाद के नाम से होती है, लेकिन समय के साथ इस जिले की पहचान बदल गई। इंटनेशनल चोर नटरवल लाल इसी जिले का था। बाद में शहाबुद्दीन के आतंक से यह जिला हमेशा सुर्खियों में बना रहा। 1995 में जनसंघ के उम्मीदवार पंडित जर्नादन तिवारी को हराकर मो. शहाबुद्दीन राजद से पहली बार सांसद बने। वे लगातार तीन बार सांसद रहे। कानूनी शिकंजा कसने के बाद कोर्ट ने शहाबुद्दीन के चुनाव लड़ने पर रोक लगा दी। 2009 में ओमप्रकाश यादव ने निर्दलीय चुनाव लड़कर शहाबुद्दीन की पत्नी हिना शहाब को हराकर भाजपा का दामन थाम लिया। इसके बाद 2014 में मोदी लहर में ओमप्रकाश फिर हिना शहाब को हराकर सांसद बने। इसके बाद 2019 में यहां से जदयू की कविता सिंह सांसद बनीं। इस लोकसभा सीट में आठ विधानसभा क्षेत्र हैं। ये हैं- दरौली, जीरादेई, रघुनाथपुर, दरौंदा, महाराजगंज, गोरियाकोठी, बड़रिया और सिवान।

★ **बड़ी घटनाएं :-**

☞ 16 जून 2014 की रात तेजाब कांड के चश्मदीद राजीव रोशन की गोली मारकर हत्या।

☞ 23 नवंबर 2014 की रात सांसद ओमप्रकाश यादव के प्रवक्ता श्रीकांत भारतीय की गोली मारकर हत्या।

☞ 13 मई 2016 को हिंदुस्तान के पत्रकार राजदेव रंजन की गोली मारकर हत्या।

★ **महाराजगंज :-** महाराजगंज बिहार राज्य के 40 लोकसभा निर्वाचन क्षेत्रों में से एक है. 2011 की जनगणना के अनुसार यहां की जनसंख्या 24,282 थी, जिसमें से 12,471 पुरुष और 11,811 महिलाएं हैं. महाराजगंज रेलवे स्टेशन सीवान जंक्शन से जुड़ा हुआ है. यह निर्वाचन क्षेत्र छपरा , पटना, वाराणसी, गोरखपुर और भारत की राजधानी नई दिल्ली से भी जुड़ता है. सारण और सिवान जिले देश में रेल-रोड कनेक्टिविटी के लिहाज से काफी अहम जगह पर स्थित हैं. पूर्वी और पश्चिमी भारत को जोड़ने वाली रेल लाइन हो या फिर दूर दक्षिण के राज्यों तक.. यहां से सीधी रेल लाइनें जाती हैं. सारण से लालू यादव लगातार संसदीय चुनाव जीतते रहे. लालू के रेल मंत्री रहते इस इलाके को लगातार ट्रेनों की सौगात मिली. साथ ही मढ़ौरा में रेल चक्का फैक्ट्री भी लगी. ब्रिटिश शासन के खिलाफ आंदोलनों में भी इस इलाके का स्थान अग्रणी रहा था. हालांकि रोजगार की खोज में पलायन इस इलाके से बहुत तेजी से दिल्ली, मुंबई, कोलकाता जैसे बड़े शहरों में हुआ है. इस लोकसभा क्षेत्र में मतदाताओं की कुल संख्या 1,312,219 है. सारण प्रमंडल की महाराजगंज सीट पर सियासत दिलचस्प रही है. 1996 से ही यह सीट जेडीयू के खाते में रही है. तभी से 2009 तक चार बार जेडीयू यह सीट जीती है. केवल एक बार 2009 में उसे पराजय का सामना करना पड़ा था. 1989 में चंद्रशेखर ने महाराजगंज व बलिया से चुनाव लड़ा था वे दोनों जगह से जीते थे मगर उन्होंने महाराजगंज सीट छोड़कर बलिया अपने पास रखा था. इसी कार्यकाल में वे प्रधानमंत्री बने. महाराजगंज लोकसभा क्षेत्र के तहत विधानसभा की 6 सीटें आती हैं- गोरियाकोठी, महाराजगंज, एकमा, मांझी, बनियापुर और तरैया. इन 6 सीटों में से 4 एकमा, मांझी, बनियापुर और तरैया सारण जिले में आते हैं और बाकी के दो गोरियाकोठी और महाराजगंज सिवान जिले में. महाराजगंज क्षेत्र में राजपूत समुदाय की अच्छी खासी आबादी है और यादव समुदाय की भी. इस सीट पर राजपूत समुदाय से आने वाले बाहुबली नेता प्रभुनाथ सिंह की अच्छी पकड़ मानी जाती है. वे यहां से 4 बार सांसद रह चुके है. पहले जनता दल, फिर समता पार्टी और बाद में आरजेडी के टिकट पर यहां से सांसद चुने गए थे. लेकिन 2014 के मोदी लहर में बीजेपी उम्मीदवार के सामने उन्हें मात खानी पड़ी. प्रभुनाथ सिंह हत्या केस में उम्रकैद की सजा काट रहे हैं.

☞ **2019 का जनादेश :-** 2019 लोकसभा चुनाव में इस सीट से बीजेपी के जनार्दन सिंह सिग्रीवाल ने जीत हासिल की, उन्हें 546,352 वोट मिले थे. जबकि राजद के रणधीर सिंह 3,15,580 वोटों के साथ दूसरे स्थान पर रहे और बसपा के साधु यादव 25,039 वोटों के साथ तीसरे स्थान पर रहे थे.

☞ **2014 का जनादेश :-** 16वीं लोकसभा के लिए 2014 में हुए चुनाव में महाराजगंज सीट से बीजेपी के जनार्दन सिंह सिग्रीवाल जीते. उन्होंने दबंग छवि के नेता प्रभुनाथ सिंह को मात

दी. सिग्रीवाल को 3,20,753 वोट मिले थे. जबकि प्रभुनाथ सिंह को 2,82,338 वोट. तीसरे नंबर पर रहे एक और बाहुबली नेता जेडीयू के मनोरंजन सिंह उर्फ धूमल सिंह जिन्हें 1,49,483 वोट मिले. बिहार का महाराजगंज सीवान जिले का एक नगर है. महाराजगंज लोकसभा क्षेत्र दो जिलों के विधानसभा सीटों से मिलकर बनी हुई है. सीवान जिले की 2 और सारण जिले की 4 विधानसभा सीटें इस क्षेत्र में आती हैं. महाराजगंज में राजपूत वोटरों की संख्या अधिक है. इसलिए इसे बिहार का चित्तौड़गढ़ भी कहा जाता है. महाराजगंज लोकसभा सीट से अभी बीजेपी के जनार्दन सिंह सिग्रीवाल सांसद हैं. महाराजगंज लोकसभा सीट से ज्यादातर राजपूत और भूमिहार बिरादरी के ही सांसद चुने जाते हैं. इस सीट से ही साल 1989 में देश के पूर्व प्रधानमंत्री चंद्रशेखर चुनाव लड़े और संसद पहुंचे थे. साल 2019 के लोकसभा चुनाव परिणाम की बात करे तो बीजेपी के उम्मीदवार जनार्दन सिंह सिग्रीवाल को 5,46,352 वोट मिले थे. बीजेपी उम्मीदवार सिग्रीवाल ने आरजेडी के रणधीर सिंह को 2,30,772 वोटों से हराया था. आरजेडी के नेता रणधीर सिंह को इस चुनाव में 3,15,580 वोट मिले थे 22 हजार से ज्यादा मतदाताओं ने 2014 के चुनाव में इस सीट पर NOTA का बटन दबाया था. 2014 के लोकसभा चुनाव में इस सीट से बीजेपी ने जनार्दन सिंह सिग्रीवाल को चुनावी मैदान में उतारा था. उन्होंने ये सीट बीजेपी के खाते में डाल दी थी. सिग्रीवाल को 3,20,753 वोट मिले थे. सिग्रीवाल ने आरजेडी के नेता प्रभुनाथ सिंह को हराया था. आरजेडी के उम्मीदवार प्रभुनाथ सिंह को 2,82,338 वोट मिले थे. जेडीयू से इस सीट से मनोरंजन सिंह ने चुनाव लड़ा था. उन्हें इस सीट से 1,49,483 वोट मिले थे. 2024 के चुनाव में महाराज गंज लोकसभा क्षेत्र से एनडीए प्रत्याशी जनार्दन सिंह सिगरीवाल एवं कांग्रेस के आकाश सिंह के बीच सीधी भिड़ंत हैं। महाराजगंज लोकसभा क्षेत्र में गोरियाखोटी विधानसभा सीट बीजेपी के खाते में हैं। महाराजगंज विधानसभा सीट से कांग्रेस के विधायक हैं. एकमा विधानसभा सीट से आरजेडी के विधायक हैं. मांझी विधानसभा सीट से सीपीएम का विधायक हैं. बनियापुर विधानसभा सीट से आरजेडी के विधायक हैं. तरैया विधानसभा सीट से जनक सिंह विधायक हैं.

☆ **गोपालगंज** :- गोपालगंज बर्ष 1976 में सारण से अलग होकर जिला बना था. यह बिहार के पिछड़े जिलों में गिना जाता है. गोपालगंज संसदीय क्षेत्र के तहत विधानसभा की 6 सीटें आती हैं, जिनमें बैकुंठपुर, बरौली, गोपालगंज, कुचाइकोट, भोरे और हथुआ विधानसभा सीटें शामिल हैं. साल 2015 के बिहार विधानसभा चुनाव में इन 6 सीटों में से 2-2 सीटों पर बीजेपी और जेडीयू को जीत मिली थी, जबकि आरजेडी ने एक और कांग्रेस ने एक सीट पर बाजी मारी थी. गोपालगंज संसदीय क्षेत्र एससी वर्ग के लिए सुरक्षित सीट है. गौरतलब है कि छह विधानसभा क्षेत्र वाली इस संसदीय सीट पर ब्राह्मणों की भी बड़ी तादाद है, जिससे यहां मुकाबला रोचक रहता है. गंडक नदी के पश्चिमी तट पर बसा गोपालगंज जिला भोजपुरी भाषी है और गन्ने के उत्पादन के लिए जाना जाता है. यह उत्तर प्रदेश की सीमा से सटा हुआ है. यहां ग्रामीण जनसंख्या 93.93 प्रतिशत और शहरी जनसंख्या 6.07 प्रतिशत है. साल 2009 में जेडीयू के पूर्णमासी राम ने इस सीट का प्रतिनिधित्व किया था. साल 2014 की मोदी लहर में गोपालगंज से बीजेपी के जनकराम ने जीत हासिल की थी. गोपालगंज संसदीय क्षेत्र में वोटरों की कुल संख्या 13 लाख 49 हजार 72 है. इसमें से 7 लाख 29 हजार 998 पुरुष वोटर और 6 लाख 19 हजार 74 महिला वोटर हैं.

☞ **2019 का जनादेश** :- इस लोकसभा सीट से कुल 13 उम्मीदवार अपनी किस्मत आजमा रहे थे. इस लोकसभा सीट पर जनता दल यूनाइटेड (जेडीयू) ने डॉ. आलोक कुमार सुमन को उम्मीदवार बनाया था, जबकि बहुजन समाज पार्टी ने कुणाल किशोर विवेक को चुनाव मैदान में उतारा था. जेडी(यू) के आलोक कुमार सुमन 5,68,150 वोट से जीते आरजेडी के सुरेंद्र राम को 2,81,716 वोट मिले नोटा को 51,660 जनता ने चुना। 2014 के लोकसभा चुनाव में गोपालगंज की सीट से बीजेपी के जनक राम विजयी रहे. उनको 4 लाख 78 हजार 773 वोट

मिले थे. उन्होंने कांग्रेस उम्मीदवार को 2 लाख 86 हजार 936 वोटों से हराया था. दूसरे नंबर पर रहीं कांग्रेस की डॉ. ज्योति भारती को 1 लाख 91 हजार 837 वोट मिले थे. जेडीयू के अनिल कुमार 1 लाख 419 वोटों के साथ तीसरे नंबर पर रहे थे. गंडक नदी के किनारे बसा गोपालगंज पूर्णत: खेती पर आधारित है। वर्ष 2009 से यह संसदीय क्षेत्र अनुसूचित जाति के लिए सुरक्षित है। पूर्व में यह क्षेत्र कांग्रेस का गढ़ रहा। यहां वर्ष 1962 से 1977 तक लगातार चार बार कांग्रेस के द्वारिकानाथ तिवारी सांसद चुने गए। 1980 में कांग्रेस के नगीना राय सांसद बने। 2009 में जदयू के पूर्णमासी राम सांसद चुने गए। मोदी लहर में 2014 में पहली बार भारतीय जनता पार्टी के जनक राम सांसद चुने गए। 2019 में जदयू के उम्मीदवार आलोक कुमार सुमन यहां से सांसद बने। पूर्व मुख्यमंत्री लालू प्रसाद की पत्नी राबड़ी देवी का गोपालगंज गृह जनपद है। यहां छह विधानसभा सीटें हैं-बैकुंठपुर, गोपालगंज, बरौली, कुचायकोट, हथुआ और भोरे।

☞ **बड़ी घटनाएं :-** सासामुसा स्थित चीनी मिल में 23 दिसंबर 2018 को मिल का ब्वायलर फटने से 12 मजदूरों की मौत हो गई। 16 अगस्त 2017 को जहरीली शराब पीने से शहर के खजुरबानी मोहल्ले में 18 लोगों की मौत हो गई। और पांच लोगों की आंख की रोशनी चली गई।

विकास और स्थानीय मुद्दे पिछले पांच साल में गोपालगंज जिला मुख्यालय को बड़ी रेल लाइन से जोड़ा गया। राजकीय पॉलिटेक्निक कॉलेज खोला गया, जबकि इंजीनियरिंगकॉलेज का काम प्रगति पर है।बेरोजगारी, बंद हथुआ चीनी मिल को चालू कराने की मांग और सिंचाई के अपर्याप्त साधन प्रमुख स्थानीय मुद्दे हैं। गोपालगंज की खास बातें गोपालगंज बिहार का लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र है। देश के लिए 1952 में पहली बार हुए लोकसभा चुनावों के दौरान इस निर्वाचन क्षेत्र का गठन किया गया था। गोपालगंज नगर पालिका और जिला मुख्यालय है। यह क्षेत्र गंडक नदी के किनारे पर स्थित है। इस इलाके की सीमाएं चम्पारण, सिवान जिले के साथ ही उत्तर प्रदेश के देवरिया जिले से जुड़ती हैं। कई छोटी बड़ी नदियों से घिरे होने के कारण यह क्षेत्र बेहद उपजाऊ है। यहां गन्ना उत्पादन सबसे ज्यादा होता है। यह क्षेत्र प्रदेश की राजधानी पटना से करीब 147 किलोमीटर दूर है, जबकि राष्ट्रीय राजधानी नई दिल्ल्ली से इस क्षेत्र की दूरी 955 किलोमीटर है।

☞ **गोपालगंज में 11 प्रत्याशी रहे मैदान में :-** गोपालगंज से एनडीए, महागठबंधन, बसपा, एमआईएम समेत 11 प्रत्याशी चुनावी मैदान में हैं। एनडीए से डॉ. आलोक कुमार सुमन और महागठबंधन के प्रत्याशी प्रेम नाथ चंचल उर्फ चंचल पासवान के बीच आमने सामने की टक्कर है। इस लड़ाई में किसका पलड़ा भारी होगा यह 4 जून को स्पष्ट हो पाएगा।

☆ **वैशाली :-** वैशाली बिहार राज्य का एक जिला और लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र है. यह तिरहुत डिवीजन का एक हिस्सा है. 1972 में मुजफ्फरपुर से अलग होकर वैशाली को एक अलग जिला बनाया गाया. 2011 की जनगणना के मुताबिक इसकी जनसंख्या 34.95 लाख थी. यहां की औसत साक्षरता दर 66.60 फीसदी है, जिसमें 75.41 फीसदी पुरुष और 56.73 प्रतिशत महिलाएं साक्षर हैं. वैशाली सीट पर वोटरों की कुल संख्या 12 लाख 78 हजार 891 है. इसमें से 6 लाख 81 हजार 119 पुरुष वोटर हैं, जबकि 5 लाख 97 हजार 772 महिला वोटर हैं. वैशाली संसदीय सीट के तहत विधानसभा की 6 विधानसभा सीटें आती हैं, जिनमें मीनापुर, कांति, बरुराज, पारू, साहेबगंज और वैशाली लोकसभा सीटें शामिल हैं. बिहार की वैशाली लोकसभा सीट लंबे समय तक आरजेडी के वरिष्ठ नेता और पूर्व केंद्रीय मंत्री रघुवंश प्रसाद सिंह का सियासी गढ़ रहा है. वैशाली सीट से कांग्रेस के दिग्विजय नारायण सिंह ने पहली बार चुनाव जीता था. वो लगातार पांच बार यहां से लोकसभा के लिए चुने जा चुके हैं. उधर, इस सीट से जीतने वाली पहली महिला जनप्रतिनिधि थीं किशोरी सिन्हा थी. साल 1980 और 1984 में किशोरी सिन्हा, 1989 में उषा सिन्हा यहां से जीतने में कामयाब रहीं थी. साल 1994 में हुए उपचुनाव में समता पार्टी की लवली आनंद इस सीट से चुनकर संसद पहुंचीं थी. वो बाहुबली आनंद मोहन की पत्नी हैं. मोदी लहर में बीजेपी के सहयोगी दल एलजेपी को साल 2014 और 2019 में कामयाबी मिली थी.

☞ **2019 का जनादेश :-** लोकसभा चुनाव में इस सीट से एलजेपी के वीणा देवी ने जीत

हासिल की, उन्हें 5,68,215 वोट मिले थे. जबकि आरजेडी के रघुवंश प्रसाद सिंह 3,33,631 वोटों के साथ दूसरे स्थान पर रहे और आईएनडी. की आभा राय 27,497 वोटों के साथ तीसरे स्थान पर रहे थे.

☞ **2014 का जनादेश :-** 16वीं लोकसभा के लिए 2014 में हुए चुनाव में वैशाली सीट से एलजेपी के रामा किशोर सिंह विजेता रहे. उनको 3 लाख 05 हजार 450 वोट मिले थे. गौरतलब है कि रामविलास पासवान की पार्टी एलजेपी इस चुनाव में एनडीए के साथ मिलकर लड़ी थी और उसे मोदी लहर का पूरा फायदा मिला था. आरजेडी उम्मीदवार और पूर्व केंद्रीय ग्रामीण विकास मंत्री रघुवंश प्रसाद सिंह दो नंबर पर रहे. उनको 2 लाख 06 हजार 183 वोट मिले. 1 लाख 04 हजार 229 वोटों के साथ बाहुबली मुन्ना शुक्ला की पत्नी और निर्दलीय उम्मीदवार अनु शुक्ला तीसरे नंबर पर रहीं. इस सीट से 2009 के चुनाव में रघुवंश प्रसाद सिंह ने जेडीयू के विजय कुमार शुक्ला को 21 हजार 405 वोट से हराया था. वैशाली लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र भगवान महावीर की जन्मस्थली और भगवान बुद्ध की कर्मभूमि है। इसके अलावा जैन मतावलंबियों के लिए पवित्र नगरी भी है। वैशाली राष्ट्रीय स्तर पर फल उत्पादन के लिए जाना जाता है। वैशाली लोकसभा सीट 1977 में पहली बार गठित हुआ। इस सीट पर कांग्रेस के अलावा जनता दल, राजद, जनता पार्टी, कांग्रेस, बिहार पीपुल्स पार्टी और लोजपा ने जीत दर्ज कर चुकी है। दिग्विजय नारायण सिंह, किशोरी सिन्हा, उषा सिन्हा, शिवशरण सिंह, रघुवंश प्रसाद सिंह इस क्षेत्र के चर्चित नाम हैं। वैशाली, कांटी, मीनापुर, बरूराज, साहेबगंज और पारू इस इलाके की विधानसभाएं हैं।

☞ **वैशाली के वोटरों का हिसाब :-** 17 लाख 18 हजार 311 मतदाता राजपूत, यादव और भूमिहार जाति की संख्या सबसे अधिक और साक्षरता दर: 66%। पिछले पांच साल में वैशाली लोकसभा क्षेत्र में हाजीपुर- सुगौली रेलपथ का

निर्माण चल रहा है। देवरिया-मुजफ्फरपुर पथ का चयन एनएच के लिए हुआ है। कांटी थर्मल की दूसरी यूनिट की शुरुआत हुई। 142 छोटी-बड़ी सड़कों का निर्माण हुआ। रघई पुल चालू हो गया है। मोतीपुर स्टेशन के विस्तार की योजना की शुरुआत हुई। यहां के चुनावी मुद्दे में सड़क, जलजमाव. सिंचाई. चीनी मिल अहम हैं। 2024 के लोकसभा चुनाव में लोजपा रामविलास की पार्टी ने वीणा देवी को अपना प्रत्याशी बनाया है तथा राजद ने विजय कुमार शुक्ला को अपने उम्मीदवार बनाया है. यह सीट पूर्व से ही हॉट सीट की श्रेणी में रहा है यहाँ से कई बाहुबलियों ने अपना किस्मत आजमाया है।

★ **शिवहर :-** शिवहर पहले मुजफ्फरपुर फिर हाल तक सीतामढी जिले का अंग रहा है. इस जिले के पूर्व एवं उत्तर में सीतामढी, पश्चिम में पूर्वी चंपारण तथा दक्षिण में मुजफ्फरपुर जिला स्थित है. शिवहर बिहार का सबसे छोटा एवं आर्थिक और सामाजिक दृष्टिकोण से अत्यंत ही पिछड़ा जिला है. बारिश एवं बाढ़ के दिनों में इसका संपर्क पड़ोसी जिलों से भी पूरी तरह कट जाता है. बज्जिका एवं हिन्दी यहां की मुख्य भाषाएं हैं. शिवहर लोकसभा सीट का प्रतिनिधित्व स्वतंत्रता सेनानी ठाकुर जुगल किशोर सिन्हा जैसी शख्सियतों ने भी किया है. जुगल किशोर सिन्हा को भारत में सहकारी आंदोलन के जनक के रूप में जाना जाता है. उनकी पत्नी राम दुलारी सिन्हा भी स्वतंत्रता सेनानी थीं. वे केंद्रीय मंत्री और गवर्नर भी रही थीं. वे बिहार की पहली महिला पोस्ट ग्रेजुएट थीं. आजादी के बाद देश में जब पहला चुनाव हुआ तो इस सीट का नाम था मुजफ्फरपुर नॉर्थ-वेस्ट सीट. 1953 में कांग्रेस के टिकट पर इस सीट से स्वतंत्रता सेनानी ठाकुर जुगल किशोर सिन्हा जीतकर लोकसभा पहुंचे थे. इस संसदीय क्षेत्र में वोटरों की कुल संख्या 1,269,056 है. इसमें 591,390 महिला वोटर और 677,666 पुरुष मतदाता हैं. शिवहर लोकसभा क्षेत्र के तहत विधानसभा की

6 सीटें आती हैं- मधुबन, चिरैया, ढाका, शिवहर, रिगा और बेलसंड.

☞ **2019 का जनादेश :-** बीजेपी की रमा देवी 6,08,678 वोटों से जीती। आरजेडी के सैयद फैसल अली को 2,68,318 वोट मिले। आईएनडी. के केदार नाथ प्रसाद को 18,426 वोट मिले।

☞ **2014 का जनादेश :-** 2014 में 16वीं लोकसभा के लिए हुए चुनाव में शिवहर सीट बीजेपी के खाते में गई. बीजेपी की उम्मीदवार रमा देवी को इस चुनाव में 3,72,506 वोट हासिल हुए, वहीं आरजेडी के मोहम्मद अवनारुल हक को 2,36,267 वोट हासिल हुए थे. जेडीयू के शाहिद अली खान 79,108 वोटों के साथ तीसरे स्थान पर रहे. जबकि इस सीट से पूर्व सांसद और जेल में सजा काट रहे बाहुबली आनंद मोहन की पत्नी लवली आनंद को 46,008 वोट मिले और वे चौथे स्थान पर रहीं थी बिहार का शिवहर जिला राज्य के सबसे छोटे जिलों में से एक है। शिवहर पहले सीतामढ़ी जिले का अनुमंडल था। 1994 में शिवहर को नया जिला बना दिया गया। बिहार की शिवहर लोकसभा क्षेत्र से अभी बीजेपी की रमा देवी सांसद हैं। रमा देवी ने 2019 के लोकसभा चुनाव में राष्ट्रीय जनता दल के उम्मीदवार सैयद फैजल अली को हराया था। यह सीट पहले कांग्रेस का गढ़ हुआ करती थी। अब यह सीट बीजेपी का गढ़ है। रमा देवी यहां लगातार तीन बार से सांसद हैं। शिवहर 1994 में सीतामढ़ी से अलग होकर नया जिला बना। शिवहर लोकसभा क्षेत्र में 6 विधानसभा क्षेत्र शामिल हैं: शिवहर लोक सभा में 12 उम्मीदवार मैदान हैं। यहां आमने सामने की लड़ाई है। राजद से रितु जायसवाल और जेडीयू से बाहुबली आनंद मोहन की पत्नी लवली आनंद से सीधी लड़ाई है। दोनों के बीच मुकाबला टक्कर का होने वाला है। आज शाम छह बजे तक सभी के भाग्य का फैसला ईवीएम में कैद हो जाएगा।

★ **पूर्वी चंपारण :-** पूर्वी चंपारण का मुख्यालय मोतिहारी है। इस क्षेत्र की सीमाएं नेपाल से जुड़ती हैं। पुराण में वर्णित है कि राजा उत्तानपाद के पुत्र भक्त ध्रुव ने यहां के तपोवन नामक स्थान पर ज्ञान प्राप्ति के लिए घोर तपस्या की थी। यह क्षेत्र देवी सीता की शरणस्थली भी रहा है। यहां भगवान बुद्ध ने लोगों को उपदेश दिए और विश्राम किया। यहां कई बौद्ध स्तूप भी हैं। आजादी की लड़ाई में नील आंदोलन समेत कई प्रमुख आंदोलनों को महात्मा गांधी ने यहीं से शुरू किया था। इस क्षेत्र में प्रमुख शैक्षिक संस्थारनों में महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग शामिल हैं। यहां से एनडीए से राधामोहन सिंह उम्मीदवार हैं जबकि महागठबंधन से राजेश कुमार कुशवाहा उम्मीदवार हैं। बीजेपी और वीआईपी के बीच कांटे की टक्कर होगी। कुल मिलाकर 12 उम्मीदवार मैदान में है। पूर्वी चंपारण लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र बिहार के 40 लोकसभा निर्वाचन क्षेत्रों में से एक है. परिसीमन से पहले पूर्वी चंपारण लोकसभा सीट मोतिहारी सीट के नाम से जानी जाती थी. आजादी के बाद से इस सीट पर कांग्रेस का बर्चस्व रहा था. लेकिन 1977 में जनता पार्टी उम्मीवार ने पहली बार इस सीट पर कब्जा जमाया. उसके बाद इस सीट से 5 बार बीजेपी जीती थी. 1952 में देश में हुए पहले चुनाव से ही इस सीट पर कांग्रेस का परचम लहराया. 1971 तक इस सीट से पांच बार कांग्रेस के विभूति मिश्रा विजयी रहे थे. लेकिन इमरजेंसी के बाद हुए 1977 के चुनाव में यहां का गणित बदला. जनता पार्टी के ठाकुर रामापति सिंह चुनाव जीते और कांग्रेस का बर्चस्व खत्म हुआ. 1980 में यहां से सीपीआई के कमला मिश्र मधुकर जीते थे. 1984 में कांग्रेस की प्रभावति गुप्ता जीतीं थी. 1989 में यहां से बीजेपी ने अपने पुराने कार्यकर्ता और आरएसएस स्वयंसेवक राधामोहन सिंह को उतारा था. राधामोहन सिंह चुनाव जीत गए. 1991 में फिर सीपीआई के टिकट पर कमला मिश्र मधुकर चुनाव जीते थे. लेकिन 1996 का चुनाव जीतकर फिर राधामोहन सिंह ने अपना परचम लहराया था. 1998 के चुनाव में राधामोहन सिंह चुनाव हार गए और आरजेडी की रमा देवी चुनाव जीती थी. लेकिन 1999 में अटल लहर में बीजेपी के टिकट पर राधामोहन जीत हासिल करने में कामयाब रहे थे. 2004 में फिर इस सीट पर सियासत ने पलटी मारी और बीजेपी को हार का सामना करना पड़ा. आरजेडी के ज्ञानेंद्र कुमार जीतने में कामयाब

रहे थे. इस लोकसभा क्षेत्र में वोटरों की कुल संख्या 1,187,264 है. इनमें से 640,901 पुरुष वोटर और 546,363 महिला वोटर हैं. बिहार की पूर्वी चंपारण लोकसभा क्षेत्र के तहत विधानसभा की 6 सीटें आती हैं- हरसिद्धी, गोविंदगंज, केसरिया, कल्याणपुर, पिपरा और मोतिहारी.

☞ **2019 का जनादेश** :- बीजेपी के राधा मोहन सिंह 5,74,081 वोट से जीते। आरएलएसपी के आकाश प्रसाद सिंह को 2,81,500 वोट मिले। नोटा को 22,706 जनता ने वोट दिए।

☞ **2014 का जनादेश** :- 2014 के लोकसभा चुनाव में बीजेपी के राधामोहन सिंह ने आरजेडी के विनोद कुमार श्रीवास्तव को हराया. राधामोहन सिंह को 4,00,452 वोट मिले थे. जबकि आरजेडी उम्मीदवार विनोद कुमार श्रीवास्तव को 2,08,289 वोट. तीसरे नंबर पर जेडीयू उम्मीदवार अवनीश कुमार सिंह रहे थे जिन्हें 1,28,604 वोट हासिल हुए थे. वही अब 2024 के इस संग्राम में पूर्वी चंपारण की मोतिहारी सीट पर दिग्गज राधा मोहन सिंह चुनावी मैदान में हैं, जो मोतिहरी में अपने किए गए विकास कार्यों के साथ-साथ प्रधानमंत्री मोदी और नीतीश कुमार के विकास कार्य पर वोट मांग रहे हैं. वहीं उन्हें वीआईपी के राजेश कुशवाहा टक्कर दे रहे हैं. वीआईपी के उम्मीदवार को मुकेश सहनी के वोट बैंक के साथ-साथ आरजेडी के एमवाई समीकरण और कुशवाहा जाति के होने से कुशवाहा वोटर पर उम्मीद है.

★ **पश्चिम चंपारण** :- पश्चिम चंपारण नेपाल की सीमा से सटा हुआ उत्तरी बिहार का हिस्सा है. चंपारण इलाका बिहार के तिरहुत प्रमंडल के अंतर्गत आता है और भोजपुरी भाषी जिला है. महात्मा गांधी की कर्मभूमि चंपारण लंबे समय से सियासी सक्रियता का केंद्र रहा है. 2002 के परिसीमन के बाद 2008 में वाल्मिकी नगर और पश्चिमी चंपारण दो अलग-अलग सीटों के रूप में अस्तित्व में आई. इससे पहले पश्चिम चंपारण का अधिकांश हिस्सा बेतिया सीट के तहत आता था. पश्चिम चंपारण के उत्तर में नेपाल तथा दक्षिण में गोपालगंज जिला स्थित है. इसके पूर्व में पूर्वी चंपारण है जबकि पश्चिम में इसकी सीमा यूपी के पडरौना तथा देवरिया जिले से लगती है. गंडक और सिकरहना तथा इसकी सहायक नदियों के पास होने से पश्चिमी चंपारण जिले की मिट्टी उपजाऊ है. कृषि और छोटे-छोटे गृह उद्योग ही यहां के लोगों के रोजगार का प्रमुख जरिया है. अच्छी क्वालिटी के बासमती चावल तथा गन्ने के उत्पादन के लिए ये जिला मशहूर है. उत्तर प्रदेश और नेपाल की सीमा से लगा पश्चिम चंपारण का इलाका देश के स्वाधीनता संग्राम के दौरान काफी सक्रिय रहा. आजादी के आंदोलन के समय चंपारण के ही एक रैयत राजकुमार शुक्ल के निमंत्रण पर महात्मा गांधी अप्रैल 1917 में मोतिहारी आए और नील की खेती से त्रस्त किसानों के अधिकार की लड़ाई लड़ी. अंग्रेजों के समय चंपारण को स्वतंत्र इकाई बनाया गया था. प्रशासनिक सुविधा के लिए 1972 में इसका विभाजन कर पूर्वी चंपारण और पश्चिमी चंपारण दो अलग-अलग जिले बना दिए गए. परिसीमन के बाद 2009 और 2014 के चुनावों में बीजेपी के संजय जायसवाल ने इस सीट से जीत हासिल की. डॉ. संजय जायसवाल के पिता डॉ. मदन प्रसाद जायसवाल भी लोकसभा सांसद रह चुके हैं. 2019 चुनाव से पहले बीजेपी और जेडीयू एकजुट हो गए और बदले समीकरणों में महागठबंधन की चुनौती भी बड़ी है. पश्चिम चंपारण संसदीय क्षेत्र में मतदाताओं की कुल संख्या है 1,220,868. इसमें से 658,427 पुरुष मतदाता हैं जबकि 562,441 महिला वोटर हैं. पश्चिम चंपारण लोकसभा सीट के तहत विधानसभा की 6 सीटें आती हैं- नौतन, चनपटिया, बेतिया, रक्सौल, सुगौली और नरकटिया. 2015 के विधानसभा चुनाव के नतीजों पर गौर करें तो इस संसदीय क्षेत्र की 6 विधानसभा सीटों में से 4 बीजेपी ने जीते थे जबकि 1-1 सीट आरजेडी और कांग्रेस के हाथ आई थी.

☞ **2019 का जनादेश** :- 2019 लोकसभा चुनाव में इस सीट से बीजेपी के डॉ. संजय जयसवाल ने जीत हासिल की, उन्हें 6,03,706 वोट मिले. जबकि आरएलएसपी के बृजेश कुमार कुशवाह को 3,09,800 वोट मिले और नोटा को मतदाताओं ने 45,699 मत दिए. 2014 के चुनाव में पश्चिम चंपारण लोकसभा सीट से बीजेपी के डॉ. संजय जायसवाल ने जेडीयू उम्मीदवार और फिल्म निर्देशक प्रकाश झा को हराया था. प्रकाश

झा इस सीट से चुनावी मैदान में अपनी किस्मत आजमाने उतरे थे लेकिन मोदी लहर में जीत बीजेपी के हाथ लगी. बीजेपी उम्मीदवार डॉ. संजय जायसवाल को 3,71,232 वोट मिलेल थे जबकि प्रकाश झा को 2,60,978 वोट मिले थे. वहीं आरजेडी के रघुनाथ झा को 1,21,800 वोट मिले थे.

एक सर्वे के अनुसार ए.छ.क.ए.। गठबंधन में शामिल राजद के लिए पश्चिमी चंपारण लोकसभा की विधानसभा सीटों पर राघोशरण पांडेय पहली पसंद रहे। प. चंपारण से 5 विधानसभा सीटों पर राजद से राघोशरण ही पहली पसंद हैं। बिहार की पश्चिमी चंपारण लोकसभा सीट से 40% लोगों ने राजद के राघोशरण पांडेय को समर्थन दिया। जबकि दूसरे नंबर पर प्रत्याशी शशि भूषण सिंह को सिर्फ 18% लोगों ने ही पसंद किया।

★ **वाल्मीकिनगर :-** वाल्मीकिनगर लोकसभा सीट का इलाका नेपाल की सीमा से सटा हुआ है और बिहार के सुदूर उत्तर में पड़ता है. साल 2002 के परिसीमन के बाद साल 2008 में पहली बार ये लोकसभा सीट अस्तित्व में आई. इससे पहले ये सीट बगहा के नाम से जानी जाती थी. साल 2014 में इस सीट से बीजेपी के सतीश चंद्र दुबे जीतकर लोकसभा पहुंचे थे. आजादी के बाद से चंपारण के इलाके में कांग्रेस हर चुनाव में अपना दमखम दिखाती आ रही थी, लेकिन इमरजेंसी के बाद हालात बदले और बीजेपी ने यहां अपनी पकड़ मजबूत कर ली. परिसीमन के बाद जब 2009 में पहली बार चुनाव हुए तो यहां से जेडीयू के वैद्यनाथ प्रसाद महतो जीते. उन्होंने निर्दलीय उम्मीदवार फखरुद्दीन को हराया था. इस लोकसभा क्षेत्र में मतदाताओं की संख्या 12 लाख 75 हजार 653 है. इनमें से पुरुष वोटरों की संख्या 6 लाख 90 हजार 155 है, जबकि महिला वोटरों की संख्या 5 लाख 85 हजार 498 है. नेपाल की सीमा से सटे होने के कारण और नक्सल प्रभाव के कारण ये इलाका सुरक्षा की दृष्टि से काफी संवेदनशील माना जाता है. वाल्मीकिनगर संसदीय क्षेत्र के तहत विधानसभा की 6 सीटें आती हैं, जिनमें वाल्मीकिनगर विधानसभा सीट, रामनगर, नरकटियागंज, बगहा, लौरिया और सिकटा विधानसभा सीटें शामिल हैं. 2019 का जनादेश में जदयू के बैद्यनाथ प्रसाद महतो 6,02,660 वोटों से जीते। कांग्रेस के शाश्वत केदार को 2,48,044 वोट मिले। बसपा के दीपक यादव को 62,963 वोट मिले। साल 2014 के लोकसभा चुनाव में वाल्मीकिनगर सीट से बीजेपी के सतीश चंद्र दुबे ने जीत दर्ज की थी. सतीश चंद्र दुबे को 3 लाख 64 हजार 13 वोट हासिल हुए थे और कांग्रेस के पूर्णमासी राम को एक लाख 18 हजार वोटों से हराया था. पिछले लोकसभा चुनाव में जेडीयू के वैद्यनाथ प्रसाद महतो तीसरे नंबर पर रहे थे. उनको 81 हजार 612 वोट हासिल हुए थे.

राजनीति के मायने में बिहार सबसे चर्चित राज्यों में से एक है. यहां की जनता सभी मुद्दों को देखते हुए वोट करती है. बिहार के लोकसभा क्षेत्रों की बात करें तो सबसे पहली सीट वाल्मीकि नगर है. परिसीमन के बाद यह लोकसभा सीट साल 2008 में अस्तित्व में आई है. साल 2009 में यहां पहली बार लोकसभा के चुनाव हुए, वाल्मीकि नगर लोकसभा क्षेत्र से जनता दल यूनाइटेड (JDU) के सुनील कुमार कुशवाहा सांसद हैं. इस सीट में साल 2020 में उपचुनाव हुए थे. जेडीयू के उम्मीदवार सुनील कुमार कुशवाहा ने जीत हासिल की है. सुनील कुमार कुशवाहा को उपचुनाव के नतीजों में 403,360 वोट मिले. जेडीयू प्रत्याशी ने कांग्रेस उम्मीदवार प्रवेश कुमार मिश्रा को 22,000 वोटों से हराया था. प्रवेश कुमार मिश्रा को 2020 के उपचुनाव में 380,821 वोट मिले. पिछली बार के 2019 के लोकसभा चुनाव परिणाम की बात करें तो यहां पर जेडीयू उम्मीदवार बैद्यनाथ प्रसाद महतो ने जीत दर्ज की थी. बैद्यनाथ प्रसाद महतो को 602660 वोट मिले थे. महतो ने कांग्रेस उम्मीदवार शाश्वत केदार को हराया था. कांग्रेस उम्मीदवार को 248044 वोट मिले थे. जेडीयू सांसद के निधन के बाद इस सीट पर साल 2020 में उपचुनाव कराया गया. जेडीयू से सुनील कुमार कुशवाहा ने जीत दर्ज कर एक बार फिर पार्टी के खाते में ये सीट दे दी. वाल्मीकि नगर लोकसभा सीट ब्राम्हण बाहुल्य सीट है. यहां ब्राम्हण मतदाताओं की संख्या 2 लाख से ज्यादा है. इस सीट पर थारु जनजाति और अल्पसंख्यक मतदाताओं की संख्या करीब 2-2 लाख है. इसके साथ ही यहां कुशवाहा और यादव समाज के मतदाता भी काफी संख्या में हैं. इस सीट पर कुशवाहा, यादव और अल्पसंख्यक वोटरों का रुझान ही पार्टी के मतदाताओं की हार और जीत तय करती है. वाल्मीकि नगर लोकसभा सीट में 6 विधानसभा आती हैं- 1. वाल्मीकि नगर, 2. रामनगर, 3. नरकटियागंज, 4. बगहा, 5. लौरिया, 6 सिकटा विधानसभा क्षेत्र है। वाल्मीकिनगर लोकसभा सीट का इलाका नेपाल की सीमा से सटा हुआ है और बिहार के सुदूर उत्तर में पड़ता है. साल 2002 के परिसीमन के बाद साल 2008 में पहली बार ये लोकसभा सीट अस्तित्व में आई. इससे पहले ये सीट बगहा के नाम से जानी जाती थी. साल 2014 में इस सीट से बीजेपी के सतीश चंद्र दुबे जीतकर लोकसभा पहुंचे थे.

आजादी के बाद से चंपारण के इलाके में कांग्रेस हर चुनाव में अपना दमखम दिखाती आ रही थी, लेकिन इमरजेंसी के बाद हालात

बदले और बीजेपी ने यहां अपनी पकड़ मजबूत कर ली. परिसीमन के बाद जब 2009 में पहली बार चुनाव हुए तो यहां से जेडीयू के वैद्यनाथ प्रसाद महतो जीते. उन्होंने निर्दलीय उम्मीदवार फखरुद्दीन को हराया था. इस लोकसभा क्षेत्र में मतदाताओं की संख्या 12 लाख 75 हजार 653 है. इनमें से पुरुष वोटरों की संख्या 6 लाख 90 हजार 155 है, जबकि महिला वोटरों की संख्या 5 लाख 85 हजार 498 है. नेपाल की सीमा से सटे होने के कारण और नक्सल प्रभाव के कारण ये इलाका सुरक्षा की दृष्टि से काफी संवेदनशील माना जाता है. बिहार के इकलौते टाइगर रिजर्व को अपने आप में समेटे वाल्मीकि नगर लोकसभा क्षेत्र में अबकी बार आर पार की लड़ाई चल रही है. यहां वर्तमान सांसद सुनील कुमार एनडीए की ओर से जदयू के प्रत्याशी हैं, वहीं राजद ने बगहा के चीनी मिल मालिक दीपक यादव को अपना प्रत्याशी बनाया है. कांटे की टक्कर के बीच दोनों प्रमुख गठबंधनों के उम्मीदवारों की मुसीबत बागी प्रत्याशियों ने बढ़ा रखी है.? बता दें कि पिछले चुनाव में कांग्रेस के प्रत्याशी रहे प्रवेश मिश्रा जहां इस बार निर्दलीय चुनाव लड़ रहे हैं, वहीं कल तक बीजेपी में रहने वाले दिनेश अग्रवाल ने भी स्वतंत्र उम्मीदवार के रूप में प्रचार दाखिल कर चुनावी अखाड़ा में उतर चुके हैं. जबकि असम में निर्दलीय दो बार सांसद रहे गणा सुरक्षा पार्टी के नव कुमार सरनिया उर्फ हीराबाई इस बार वाल्मीकिनगर से चुनाव लड़कर राजनीतिक तापमान को और गर्मा दिया है. वाल्मीकिनगर सीट पर बहुजन समाज पार्टी ने दुर्गेश सिंह चौहान ,आजाद समाज पार्टी ने सफी मोहम्मद मियां को अपना उम्मीदवार बनाया है. वहीं चंदेश्वर मिश्र, परशुराम साह और शंभू प्रसाद भी निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में मैदान में हैं.

☞ **एनडीए का गढ़ रहा है वाल्मीकिनगर :-** भारत नेपाल सीमा पर स्थित वाल्मीकिनगर लोकसभा क्षेत्र वैसे तो एनडीए का गढ़ माना जाता है. वर्तमान सांसद सुनील कुमार के पिता बैजनाथ महतो 2019 के चुनाव में सांसद बने थे.

1 साल बाद ही उनके निधन के बाद रिक्त हुए इस सीट पर सुनील कुमार विजयी हुए. 2014 में बीजेपी के सतीश चंद्र दुबे यहां से सांसद बने, वहीं 2009 के चुनाव में बैजनाथ प्रसाद महतो जदयू से सांसद निर्वाचित हुए थे. परिसीमन के पूर्व वाल्मीकिनगर लोकसभा क्षेत्र बगहा लोकसभा क्षेत्र के नाम से जाना जाता था. इस सीट पर समता पार्टी के जमाने से लगातार एनडीए ही जीत हासिल करती रही है.

★ **मतदान में पांचवां चरण भी नहीं खींच पाया बड़ी लकीर :-** पांचवे चरण की पांच सीटों पर शाम छः बजे तक 55.85 प्रतिशत मतदान हुआ। इन पांच सीटों पर 2019 के लोकसभा चुनाव में 57.07 फीसदी बोटिंग हुई थी। इस लिहाज से पिछले बार के मुकाबले 1. 22 प्रतिशत कम मतदान हुआ है। मुजफ्फरपुर में सबसे अधिक 58.10 प्रतिशत और मधुबनी में सबसे कम 52.20 प्रतिशत मतदान रिकॉर्ड किया गया। राज्य निर्वाचन आयोग के अनुसार सीतामढ़ी में 57.55 प्रतिशत, मधुबनी में 52.20 प्रतिशत, मुजफ्फरपुर में 58.10 प्रतिशत, सारण में 54. 50 प्रतिशत और हाजीपुर (सु) 56.84 प्रतिशत मतदान हुआ। इस चरण का मतदान खत्म होने के साथ ही चिराग पासवान, राजीव प्रताप रूडी, रोहिणी आचार्य, देवेशचंद्र ठाकुर, मो. एए फातमी, शिवचंद्र राम सहित 80 उम्मीदवारों का भाग्य ईवीएम में बंद हो गया। पांचवें चरण के मतदान के साथ ही, राज्य की 60 फीसदी लोकसभा क्षेत्रों (24 लोकसभा क्षेत्रों) में चुनाव संपन्न हो गया। सारण में मतदान के दौरान पथराव, मारपीट व अफसरों के चोटिल होने की भी घटनाएं हुई। बड़ा तेलपा बूथ पर पहुंची राजद प्रत्याशी राहिणी आचार्य के खिलाफ एक गुट के लोगों ने हंगामा कर नारेबाजी की और पथराव किया। पथराव में कुछ गाड़ियों के शीशे फूटने की बात सामने आ रही है। वहीं, रिविलगंज में पथराव के दौरान अपर थानाध्यक्ष के हाथ में चोट आई। डोरीगंज में प्रशासन व ग्रामीणों में तीखी झड़प हुई। इस दौरान पथराव में उत्पाद आयुक्त का सिर फट गया।●

बिहार का स्वास्थ्य विभाग भ्रष्टाचार के चरमसुख को प्राप्त हो गया!

● शशि रंजन सिंह/राजीव शुक्ला

जब लोकतंत्र में नौकरशाही हावी हो जाता है तो सत्ता पर भ्रष्टाचार हावी हो जाता है। आज राज्य के मुखिया के कमजोर और बीमार रहने के कारण नौकरशाही पूरी तरह से हावी हो गई है, मुख्यमंत्री ने राज्य के पूर्व मुख्य सचिव को अपने पावर का दुरुपयोग कर अपना प्रधान सचिव बना लिया। उड़ीसा कैडर के एक पूर्व भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी और एक पूर्व अंगरक्षक को भी अपना सलाहकार बना दिया। अब पूरे राज्य को मुख्यमंत्री सचिवालय के माध्यम से यह तिकरी ही चला रही है। पिछले 35 साल से राज्य सत्ता लालू और नीतीश कुमार की ही जोड़ी चला रही है। आज बिहार में लोकतंत्र कहीं ना कहीं राजतंत्र में तब्दील हो गया है और लोकतंत्र जब राजतंत्र में तब्दील हो जाए तो वह तानाशाह तंत्र का रूप ले लेती है। ऐसे तो राज्य के सभी विभागों में भ्रष्टाचार का बोलबाला है, लेकिन जनता से सीधे जुड़े हुए विभाग शिक्षा और स्वास्थ्य दोनों भ्रष्टाचार के चरम सुख को प्राप्त कर रहे हैं।

स्वास्थ्य विभाग में भ्रष्टाचार, अकर्मणयता और तानाशाही तीनों समान रूप से प्रभावि है। स्वास्थ्य विभाग के भ्रष्टाचार का यह आलम है कि फर्जी डिग्रीधारी, हरिजन अत्याचारी, महिला अत्याचारी और भ्रष्टाचारी डॉक्टर आई. एस. ठाकुर को सेवानिवृत्ति के उपरांत पटना चिकित्सा महाविद्यालय एवं अस्पताल जैसे बड़े और प्रतिष्ठित अस्पताल का अधीक्षक और

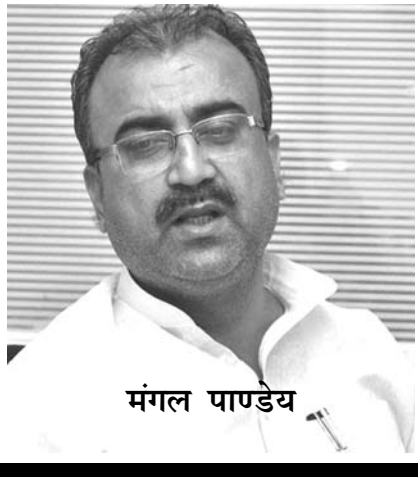

मंगल पाण्डेय

प्राध्यापक भी बना दिया गया और साथ ही उन्हें बिहार कोषागार संहिता-2011 के नियम-84 के तहत वित्तीय शक्ति भी प्रदान कर दी गई। बिहार सरकार स्वास्थ्य विभाग अधिसूचना संख्या-239(1), दिनांक-06/05/2024 के द्वारा डॉक्टर आई.एस. ठाकुर को सेवानिवृत्ति के उपरांत संविदा आधारित अधीक्षक बनाने के आदेश का सामान्य प्रशासन विभाग के संकल्प संख्या-10000, दिनांक-10/07/2015 की कंडिका 3(3) के तहत मुख्य सचिव बिहार की अध्यक्षता में गठित राज्य स्तरीय समिति की दिनांक -01/04/2024 को बैठक कर सामान्य प्रशासन विभाग के ज्ञापन संख्या-5335 , दिनांक-02/04/2024 के द्वारा डॉक्टर ठाकुर को अधीक्षक पद पर संविदा आधारित नियोजन की घटनोत्तर स्वीकृति दी गई। अधिसूचना के कंडिका 3(1) में कहा गया कि डॉक्टर ठाकुर को असैनिक चिकित्सक सह मुख्य चिकित्सा पदाधिकारी, पटना द्वारा निर्गत स्वास्थ्य प्रमाण पत्र एवं इस आशय का शपथ पत्र पटना चिकित्सा महाविद्यालय, पटना को समर्पित करेंगे कि उनके विरुद्ध कोई निगरानी का मामला/आपराधिक मामला/विभागीय कार्रवाई

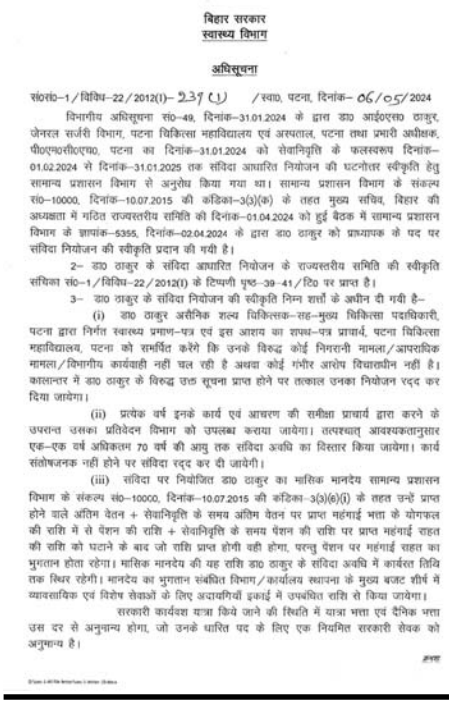

बिहार सरकार
स्वास्थ्य विभाग

अधिसूचना

सं0सं0–1/विविध–22/2012(I)– 239 (1) /स्वा0, पटना, दिनांक– 06/05/2024

विभागीय अधिसूचना सं0–49, दिनांक–31.01.2024 के द्वारा डा0 आई0एस0 ठाकुर, जेनरल सर्जरी विभाग, पटना चिकित्सा महाविद्यालय एवं अस्पताल, पटना तथा प्रभारी अधीक्षक, पी0एम0सी0एच0, पटना का दिनांक–31.01.2024 को सेवानिवृत्ति के फलस्वरूप दिनांक–01.02.2024 से दिनांक–31.01.2025 तक संविदा आधारित नियोजन की घटनोत्तर स्वीकृति हेतु सामान्य प्रशासन विभाग से अनुरोध किया गया था। सामान्य प्रशासन विभाग के संकल्प सं0–10000, दिनांक–10.07.2015 की कंडिका–3(3)(क) के तहत मुख्य सचिव, बिहार की अध्यक्षता में गठित राज्यस्तरीय समिति की दिनांक–01.04.2024 को हुई बैठक में सामान्य प्रशासन विभाग के ज्ञापांक–5355, दिनांक–02.04.2024 के द्वारा डा0 ठाकुर को प्राध्यापक के पद पर संविदा नियोजन की स्वीकृति प्रदान की गयी है।

2– डा0 ठाकुर के संविदा आधारित नियोजन के राज्यस्तरीय समिति की स्वीकृति संचिका सं0–1/विविध–22/2012(I) के टिप्पणी पृष्ठ–39–41/टि0 पर प्राप्त है।

3– डा0 ठाकुर के संविदा नियोजन की स्वीकृति निम्न शर्त्तों के अधीन दी गयी है–

(i) डा0 ठाकुर असैनिक शल्य चिकित्सक–सह–मुख्य चिकित्सा पदाधिकारी, पटना द्वारा निर्गत स्वास्थ्य प्रमाण–पत्र एवं इस आशय का शपथ–पत्र प्राचार्य, पटना चिकित्सा महाविद्यालय, पटना को समर्पित करेंगे कि उनके विरुद्ध कोई निगरानी मामला/आपराधिक मामला/विभागीय कार्यवाही नहीं चल रही है अथवा कोई गंभीर आरोप विचाराधीन नहीं है। कालान्तर में डा0 ठाकुर के विरुद्ध उक्त सूचना प्राप्त होने पर तत्काल उनका नियोजन रद्द कर दिया जायेगा।

(ii) प्रत्येक वर्ष इनके कार्य एवं आचरण की समीक्षा प्राचार्य द्वारा करने के उपरान्त उसका प्रतिवेदन विभाग को उपलब्ध कराया जायेगा। तत्पश्चात् आवश्यकतानुसार एक–एक वर्ष अधिकतम 70 वर्ष की आयु तक संविदा अवधि का विस्तार किया जायेगा। कार्य संतोषजनक नहीं होने पर संविदा रद्द कर दी जायेगी।

(iii) संविदा पर नियोजित डा0 ठाकुर का मासिक मानदेय सामान्य प्रशासन विभाग के संकल्प सं0–10000, दिनांक–10.07.2015 की कंडिका–3(3)(6)(i) के तहत उन्हें प्राप्त होने वाले अंतिम वेतन + सेवानिवृत्ति के समय अंतिम वेतन पर प्राप्त महंगाई भत्ता के योगफल की राशि में से पेंशन की राशि + सेवानिवृत्ति के समय पेंशन की राशि पर प्राप्त महंगाई राहत की राशि को घटाने के बाद जो राशि प्राप्त होगी वही होगा, परन्तु पेंशन पर महंगाई राहत का भुगतान होता रहेगा। मासिक मानदेय की यह राशि डा0 ठाकुर के संविदा अवधि में कार्यरत तिथि तक स्थिर रहेगी। मानदेय का भुगतान संबंधित विभाग/कार्यालय स्थापना के मुख्य बजट शीर्ष में व्यावसायिक एवं विशेष सेवाओं के लिए अदायगियाँ इकाई में उपबंधित राशि से किया जायेगा।

सरकारी कार्यवश यात्रा किये जाने की स्थिति में यात्रा भत्ता एवं दैनिक भत्ता उस दर से अनुमान्य होगा, जो उनके धारित पद के लिए एक नियमित सरकारी सेवक को अनुमान्य है।

क्रमश

–2–

(iv) संविदा पर नियोजित डा0 ठाकुर को आकस्मिक अवकाश के अतिरिक्त सरकारी सेवकों की भाँति क्षतिपूर्ति अवकाश भी अनुमान्य होगा।

(v) अधिसूचना में भविष्य में किसी प्रकार की त्रुटि पाये जाने पर तदनुसार संशोधन कर लिया जायेगा।

4– प्रस्ताव में माननीय मंत्री, स्वास्थ्य विभाग, बिहार का अनुमोदन प्राप्त है।

बिहार राज्यपाल के आदेश से
06/5/24
(दिनेश कुमार झा)
सरकार के उप सचिव

ज्ञापांक–1/विविध–22/2012(I)– 239 (1) /स्वा0, पटना, दिनांक– 06/05/2024

प्रतिलिपि:– महालेखाकार, बिहार, वीरचन्द पटेल पथ, पटना/वित्त (वै0दा0नि0को0) विभाग, बिहार, पटना को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यार्थ प्रेषित।

प्रतिलिपि:– अवर सचिव, प्रभारी "ई" गजट शाखा, वित्त विभाग, बिहार, पटना को सूचनार्थ एवं राजपत्र के अगले असाधारण अंक में प्रकाशनार्थ प्रेषित।

प्रतिलिपि:– कार्यपालक निदेशक, राज्य स्वास्थ्य समिति, शेखपुरा, पटना को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यार्थ प्रेषित।

प्रतिलिपि:– प्रमण्डलीय आयुक्त, पटना/जिला पदाधिकारी, पटना/प्राचार्य, पटना चिकित्सा महाविद्यालय, पटना को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यार्थ प्रेषित।

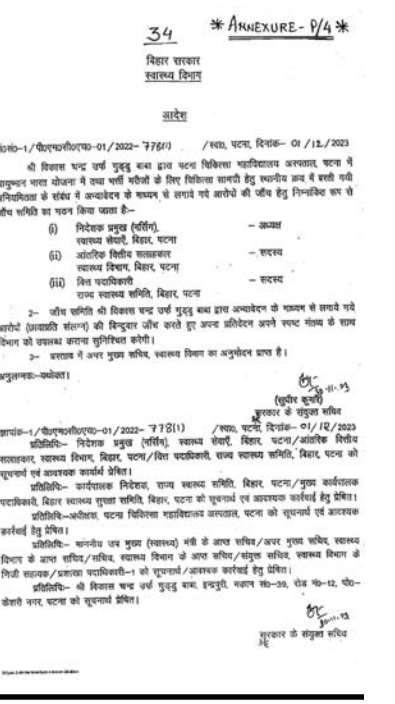

प्रतिलिपि:– डा0 आई0एस0 ठाकुर, प्रभारी अधीक्षक, पटना चिकित्सा महाविद्यालय एवं अस्पताल, पटना को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यार्थ प्रेषित।

प्रतिलिपि:– माननीय मंत्री, स्वास्थ्य विभाग के आप्त सचिव/अपर मुख्य सचिव, स्वास्थ्य विभाग के प्रधान आप्त सचिव/सचिव, स्वास्थ्य विभाग के आप्त सचिव/निदेशक प्रमुख, स्वास्थ्य सेवाएँ, बिहार, पटना/प्रशाखा पदाधिकारी, प्रशाखा–3, 7, 9, 17 एवं 18ए को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यार्थ प्रेषित।

प्रतिलिपि:– आई0टी0 मैनेजर, स्वास्थ्य विभाग, बिहार, पटना को विभागीय वेबसाईट पर अपलोड करने हेतु प्रेषित।

प्रतिलिपि:– डी0पी0एम0यू0 लीड, स्वास्थ्य विभाग, बिहार, पटना को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यार्थ प्रेषित।

6/5/24
सरकार के उप सचिव

34 * ANNEXURE- P/4 *

बिहार सरकार
स्वास्थ्य विभाग

आदेश

सं0सं0–1/पी0एम0सी0एच0–01/2022– 776(1) /स्वा0, पटना, दिनांक– 01/12/2023

श्री विकास चन्द्र उर्फ गुड्डु बाबा द्वारा पटना चिकित्सा महाविद्यालय अस्पताल, पटना में आयुष्मान भारत योजना में तथा भर्ती मरीजों के लिए चिकित्सा सामग्री हेतु स्थानीय क्रय में बरती गयी अनियमितता के संबंध में अभ्यावेदन के माध्यम से लगाये गये आरोपों की जाँच हेतु निम्नांकित रूप से जाँच समिति का गठन किया जाता है:–

(i) निदेशक प्रमुख (नर्सिंग), स्वास्थ्य सेवाएँ, बिहार, पटना – अध्यक्ष
(ii) आंतरिक वित्तीय सलाहकार, स्वास्थ्य विभाग, बिहार, पटना – सदस्य
(iii) वित्त पदाधिकारी, राज्य स्वास्थ्य समिति, बिहार, पटना – सदस्य

2– जाँच समिति श्री विकास चन्द्र उर्फ गुड्डु बाबा द्वारा अभ्यावेदन के माध्यम से लगाये गये आरोपों (छायाप्रति संलग्न) की बिन्दुवार जाँच करते हुए अपना प्रतिवेदन अपने स्पष्ट मंतव्य के साथ विभाग को उपलब्ध कराना सुनिश्चित करेगी।

3– प्रस्ताव में अपर मुख्य सचिव, स्वास्थ्य विभाग का अनुमोदन प्राप्त है।

अनुलग्नक:–यथोक्त।

(सुधीर कुमार)
सरकार के संयुक्त सचिव

ज्ञापांक–1/पी0एम0सी0एच0–01/2022– 778(1) /स्वा0, पटना, दिनांक– 01/12/2023

प्रतिलिपि:– निदेशक प्रमुख (नर्सिंग), स्वास्थ्य सेवाएँ, बिहार, पटना/आंतरिक वित्तीय सलाहकार, स्वास्थ्य विभाग, बिहार, पटना/वित्त पदाधिकारी, राज्य स्वास्थ्य समिति, बिहार, पटना को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यार्थ प्रेषित।

प्रतिलिपि:– कार्यपालक निदेशक, राज्य स्वास्थ्य समिति, बिहार, पटना/मुख्य कार्यपालक पदाधिकारी, बिहार स्वास्थ्य सुरक्षा समिति, बिहार, पटना को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्रवाई हेतु प्रेषित।

प्रतिलिपि:–अधीक्षक, पटना चिकित्सा महाविद्यालय अस्पताल, पटना को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्रवाई हेतु प्रेषित।

प्रतिलिपि:– माननीय उप मुख्य (स्वास्थ्य) मंत्री के आप्त सचिव/अपर मुख्य सचिव, स्वास्थ्य विभाग के आप्त सचिव/सचिव, स्वास्थ्य विभाग के आप्त सचिव/संयुक्त सचिव, स्वास्थ्य विभाग के निजी सहायक/प्रशाखा पदाधिकारी–1 को सूचनार्थ/आवश्यक कार्रवाई हेतु प्रेषित।

प्रतिलिपि:– श्री विकास चन्द्र उर्फ गुड्डु बाबा, इन्द्रपुरी, मकान सं0–39, रोड नं0–12, पो0–केशरी नगर, पटना को सूचनार्थ प्रेषित।

सरकार के संयुक्त सचिव

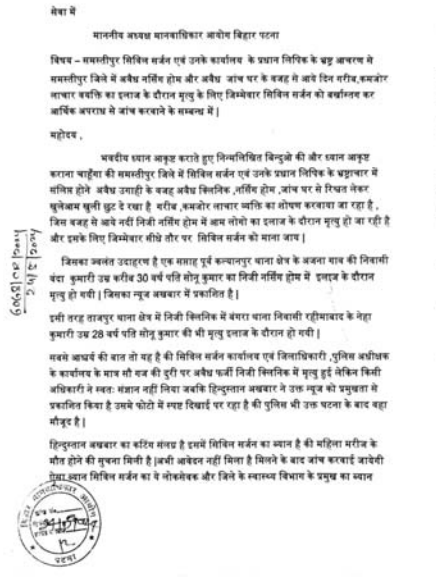

नहीं चल रही हो अथवा कोई गंभीर आरोप विचाराधीन नहीं है। जहां तक विभागीय कार्रवाई का प्रश्न है तो बिहार सरकार स्वास्थ्य विभाग पत्रांक संख्या-17 विविध/206/03/409 (17), दिनांक-11/05/ 2005 के द्वारा संचालित विभागीय कार्रवाई प्राप्त जानकारी के अनुसार लंबित है। जहां तक गंभीर आरोप का मामला है तो बिहार सरकार स्वास्थ्य विभाग आदेश संख्या-778 (1) दिनांक-30/11/2023 द्वारा डॉक्टर आई. एस. ठाकुर, पटना चिकित्सा महाविद्यालय, पटना अस्पताल में आयुष्मान भारत योजना में तथा भर्ती मरीजों के लिए चिकित्सा सामग्री हेतु स्थानीय क्रय में बरती गई अनियमिता की जांच के लिए गठित 3 सदस्य समिति का गठन किया गया है, जिसमें निदेशक प्रमुख नर्सिंग, आंतरिक वित्तीय सलाहकार और वित्त पदाधिकारी राज्य स्वास्थ्य समिति बिहार की जांच अभी चल रही है और जहां तक आपराधिक मामले की बात है तो आशा कुमारी परिचारिका ग्रेड ए जो अनुसूचित जाति की महिला है, उनको प्रताड़ित और जाति सूचक शब्द द्वारा अपमानित करने का मामला राज्य अनुसूचित जाति आयोग बिहार और वरिय पुलिस अधीक्षक पटना द्वारा जांच की जा रही है। इन पर पहले से ही डॉक्टर विनोद पासवान जूनियर स्नाकोत्त्तर छात्र को सर्जरी विभाग पीएमसीएच पटना द्वारा एमएस जनरल सर्जरी के पेपर में कम अंक देकर जान बूझकर प्रसारित करने के लिए राष्ट्रीय अनुसूचित आयोग द्वारा बिहार के मुख्य सचिव को पत्र लिखकर कार्रवाई को कहा गया था, जो मामला अभी भी

सेवा में

माननीय अध्यक्ष मानवाधिकार आयोग बिहार पटना

विषय – समस्तीपुर सिविल सर्जन एवं उनके कार्यालय के प्रधान लिपिक के भ्रष्ट आचरण से समस्तीपुर जिले में अवैध नर्सिंग होम और अवैध जांच घर के वजह से आये दिन गरीब,कमजोर लाचार व्यक्ति का इलाज के दौरान मृत्यु के लिए जिम्मेवार सिविल सर्जन को बर्खास्त कर आर्थिक अपराध से जांच करवाने के सम्बन्ध में।

महोदय,

भवदीय ध्यान आकृष्ट कराते हुए निम्नलिखित बिन्दुओ की और ध्यान आकृष्ट कराना चाहूँगा की समस्तीपुर जिले में सिविल सर्जन एवं उनके प्रधान लिपिक के भ्रष्टाचार में संलिप्त होने अवैध उगाही के वजह अवैध क्लिनिक ,नर्सिंग होम ,जांच घर से रिश्वत लेकर खुलेआम खुली छूट दे रखा है गरीब ,कमजोर लाचार व्यक्ति का शोषण करवाया जा रहा है , जिस वजह से आये नदी निजी नर्सिंग होम में आम लोगो का इलाज के दौरान मृत्यु हो जा रही है और इसके लिए जिम्मेवार सीधे तौर पर सिविल सर्जन को माना जाय।

जिसका ज्वलंत उदाहरण है एक सप्ताह पूर्व कल्याणपुर थाना क्षेत्र के अजना गाव की निवासी चंदा कुमारी उम्र करीब 30 वर्ष पति सोनू कुमार का निजी नर्सिंग होम में इलाज के दौरान मृत्यु हो गयी। जिसका न्यूज अखबार में प्रकाशित है।

इसी तरह ताजपुर थाना क्षेत्र में निजी क्लिनिक में बंगरा थाना निवासी रहीमाबाद के नेहा कुमारी उम्र 28 वर्ष पति सोनू कुमार की भी मृत्यु इलाज के दौरान हो गयी।

सबसे आश्चर्य की बात तो यह है की सिविल सर्जन कार्यालय एवं जिलाधिकारी ,पुलिस अधीक्षक के कार्यालय के मात्र सौ गज की दुरी पर अवैध फर्जी निजी क्लिनिक में मृत्यु हुई लेकिन किसी अधिकारी ने स्वतः संज्ञान नहीं लिया जबकि हिन्दुस्तान अखबार ने उक्त न्यूज को प्रमुखता से प्रकाशित किया है उसमे फोटो में स्पष्ट दिखाई पर रहा है की पुलिस भी उक्त घटना के बाद वहा मौजूद है।

हिन्दुस्तान अखबार का कटिंग संलग्न है इसमें सिविल सर्जन का ब्यान है की महिला मरीज के मौत होने की सुचना मिली है।अभी आवेदन नहीं मिला है मिलने के बाद जांच करवाई जायेगी ऐसा ब्यान सिविल सर्जन का ये लोकसेवक और जिले के स्वास्थ्य विभाग के प्रमुख का ब्यान

इनके मानसिकता को दर्शाता है की ऐसे लोग सिविल सर्जन के पद के लायक नहीं है गैर जिम्मेवार ,कर्तव्यहीन सिविल सर्जन है , आम लोगो के लिए खतरा है ये।

जबकि इस तरह के मामले में सिविल सर्जन को स्वतः संज्ञान लेकर या जिला प्रशासन को संज्ञान लेकर अवैध जांच घर और नर्सिंग होम को सिल कर प्राथमिकी दर्ज करनी चाहिए। धन्यवाद देता हू समस्तीपुर हिन्दुस्तान के पत्रकार महोदय को कम से पुलिस और सिविल सर्जन की तरह मैनेज तो नहीं हुए। जो जनहित के लिए सरकार से वेतन ले रहे है ऐसे लोग बिक रहे है हत्यारों के हाथो ऐसे भ्रष्ट लोकसेवको पर कठोर कारवाई करनी चाहिए अन्यथा ऐसे लोगो के संरक्षण में हत्याए होते रहेगी।

अतः श्रीमान से आग्रह है उक्त मृत्यु के लिए गैर जिमेवार सिविल सर्जन एवं संलिप्त अवैध नर्सिंग संचालक पर प्राथमिकी दर्ज करवाई जाय साथ ही सिविल सर्जन एवं उनके प्रधान लिपिक की संम्पति की जांच आर्थिक अपराध इकाई से जांच करवाई जाय।

एवं पीड़ित परिवार को 50 लाख का मुवावजा दिलवाई जाय।

विस्वास्भाजन
Ravindra Nath Singh.
रविन्द्रनाथ सिंह उर्फ़ चिंटू सिंह
पूर्व जिला सांसद प्रतिनिधि समस्तीपुर
पता - ग्राम ,दुबौली –पोस्ट ,ठाठोपुर
थाना - बहेरी जिला –दरभंगा
मो - 7004238997
Email..ravindranathsingh24@gmail.com
24.5.2024

हिन्दुस्तान

पटेल मैदान के पीछे निजी अस्पताल में शनिवार सुबह हुई घटना, परिजनों का हंगामा

ऑपरेशन के बाद गर्भवती की मौत, अस्पताल छोड़ भागे कर्मी

बवाल

पटेल मैदान के पीछे स्थित निजी अस्पताल में जांच को पहुंची पुलिस।

ताजपुर एवं समस्तीपुर में महिला मरीज के मौत होने की सूचना मिली है। अभी आवेदन नहीं मिला है। मिलने के बाद उसकी जांच की जाएगी। दोषी के विरुद्ध कार्रवाई की जाएगी।

- डॉ. एसके चौधरी, सीएस, समस्तीपुर।

ताजपुर में प्रसव बाद महिला की मौत, बवाल

झोला छाप के झांसे में फंस आये थे परिजन

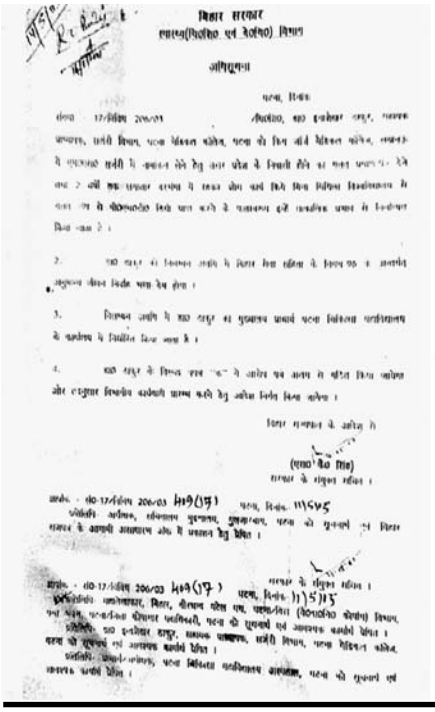

बिहार सरकार
स्वास्थ्य(चिकित्सा एवं जे०स्वा०) विभाग
अधिसूचना

PROFORMA FOR HISTORY SHEET
(USE CAPITAL LETTERS ONLY) Doctors Code No:
(a) Name of M.O: DR.INDRA SHEKHAR THAKUR
(b) Father's Name: SRI KAPIL DEO THAKUR
Signature of Medical Officer

दिनांक- 02/08/2021

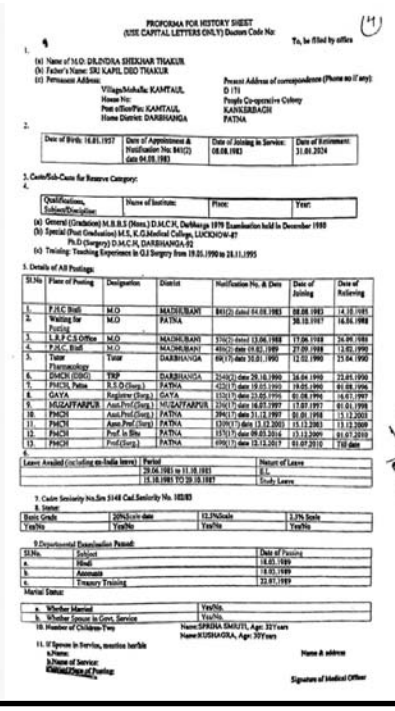

सेवा में,
अपर महानिदेशक,
निगरानी अन्वेषण ब्यूरो,
6- सर्कुलर रोड, पटना

विषय : फर्जी तरीके से प्राप्त फर्जी डिग्री धारक डॉ०(प्रो०) इंद्र शेखर ठाकुर विभागाध्यक्ष शल्य चिकित्सा सह अधीक्षक पीएमसीएच पटना के विरुद्ध कार्रवाई करने व सेवा से बर्खास्त करने के संबंध में।

महाशय,

अनुरोध पूर्वक कहना है कि डॉक्टर प्रोफेसर इंद्र शेखर ठाकुर विभागाध्यक्ष शल्य चिकित्सा विभाग सह अधीक्षक पीएमसीएच पटना पर कई गंभीर आरोप है जिसकी जांच सरकार की सक्षम एजेंसी से , जैसे निगरानी अन्वेषण ब्यूरो एवं केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो पटना द्वारा किए जाने की आवश्यकता है इनके विरुद्ध लगाए गए गंभीर आरोप है कि:

(no subject)

सेवा में,
निदेशक,
राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग

विश्वासभाजन
(आशा कुमारी)
परिचारिका श्रेणी 'ए'
पिता-जोगेश्वर चौधरी
पता-आशा निकेतन, राजीव नगर,
पो०-केशरी नगर, पटना

विचाराधीन है और जांच चल रही है। राज्य स्वास्थ्य समिति बिहार द्वारा डॉक्टर निहारिका, निदेशक प्रमुख मानसिक रोग, आपदा प्रबंधन खाद्य एवं औषधि नियंत्रण विभाग स्वास्थ्य सेवाएं बिहार पटना को श्रीमती आशा कुमारी परिचारिका श्रीनि को अधीक्षक PMCH द्वारा बार-बार जाति सूचक टिप्पणी कर प्रताड़ित करने की जांच का आदेश दिया गया। खुद पूजा भगत ने राज्य महिला आयोग सहित तमाम आयोग में पत्र लिखकर डॉक्टर आई. एस. ठाकुर पर कई संगीन आरोप लगाते हुए न्याय की मांग की, लेकिन डॉक्टर आई. एस. ठाकुर की पैरवी और पैसे के बदौलत पूजा भगत, डॉक्टर आई.एस. ठाकुर का बाल भी बांका नहीं कर सकी। अनुसूचित जाति-जनजाति कर्मचारी संघ बिहार के द्वारा अपर मुख्य सचिव स्वास्थ्य विभाग को पत्र लिखकर डॉक्टर आई. एस. ठाकुर के खिलाफ कार्रवाई करने की मांग की गई, जिस पर जांच चल रही है।

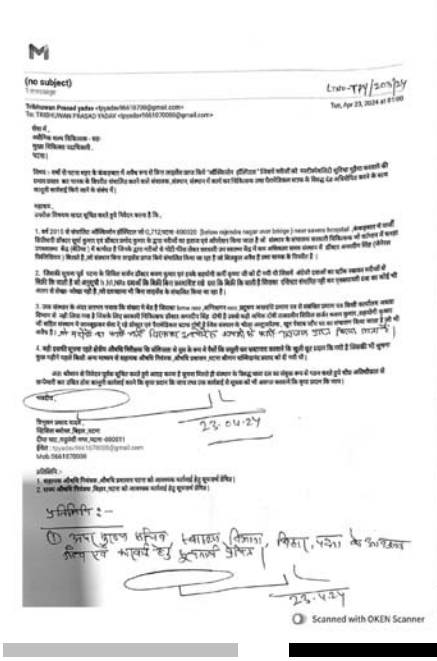

राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के कार्यक्रम को संचालित करने वाले संगठन राज्य स्वास्थ्य समिति बिहार का जिसमें राजनीतिक दबाव और पैसों के खनक के कारण पशुपतिनाथ डिस्ट्रीब्यूटर प्राइवेट लिमिटेड को फर्जी कागजात के आधार पर 102 एंबुलेंस संचालन का ठेका दे दिया। यह मामला पटना उच्च न्यायालय से होते हुए देश के उच्चतम न्यायालय तक गया माननीय न्यायालय ने राज्य स्वास्थ्य समिति के इस कार्रवाई की निंदा करते हुए इसे नये सिरे से करने का आदेश दिया। राज्य स्वास्थ्य समिति ने अपने बचाव में

अनुसूचित जाति/जनजाति कर्मचारी संघ, बिहार

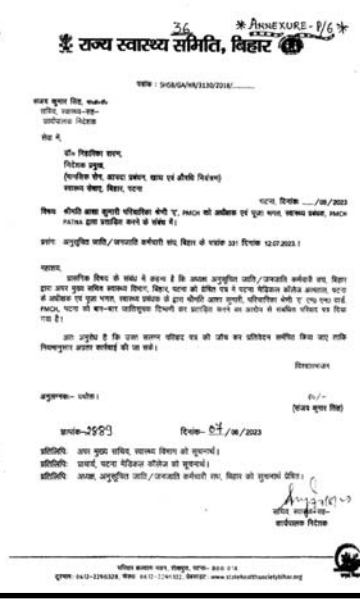

राज्य स्वास्थ्य समिति, बिहार

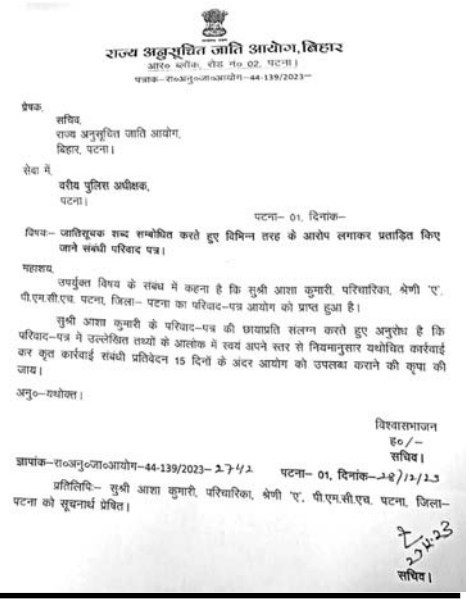

राज्य अनुसूचित जाति आयोग,बिहार

रविन्द्रनाथ सिंह

पटना उच्च न्यायालय और सर्वोच्च न्यायालय नई दिल्ली में महंगे और बड़े-बड़े अधिवक्ता की फौज खड़ी कर दी, लेकिन जब केवल सच के द्वारा लोक सूचना अधिकार के तहत राज्य स्वास्थ्य समिति से पूछा गया तो उनके ओर से स्वास्थ्य प्रशिक्षक कृष्ण कुमार उपाध्याय, जिनके ऊपर आय से अधिक संपत्ति का मामला चल रहा है और जिन्होंने ग्रामीण स्तर पर स्वास्थ्य प्रशिक्षक की भूमिका निभाई है, उनके द्वारा कहा गया है कि उच्चतम न्यायालय और सर्वोच्च न्यायालय में राज्य स्वास्थ्य समिति को मात्र 22800 खर्च हुए। अब 102 एंबुलेंस संचालन में स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों द्वारा सर्वोच्च न्यायालय, नई दिल्ली के आदेश की गलत व्याख्या कर 102 एंबुलेंस

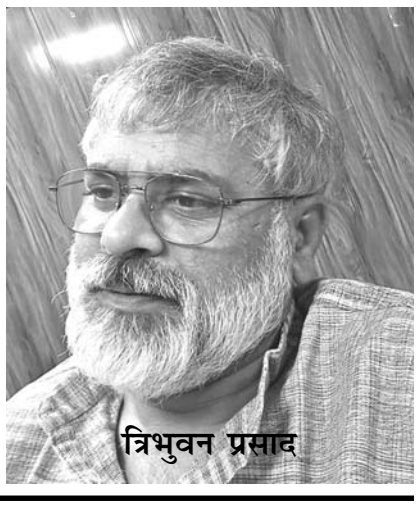

त्रिभुवन प्रसाद

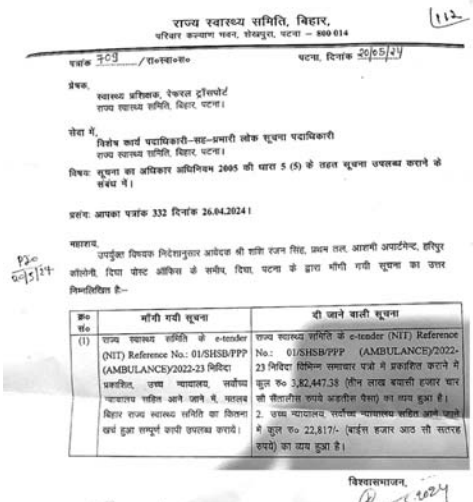

राज्य स्वास्थ्य समिति, बिहार,

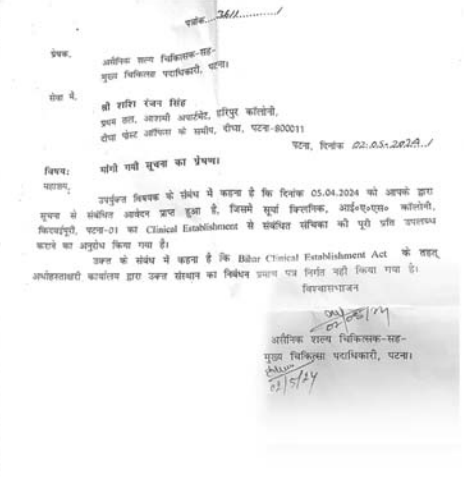

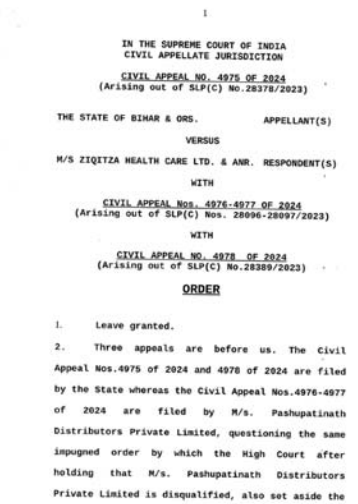

IN THE SUPREME COURT OF INDIA
CIVIL APPELLATE JURISDICTION

CIVIL APPEAL NO. 4975 OF 2024
(Arising out of SLP(C) No.28378/2023)

THE STATE OF BIHAR & ORS. APPELLANT(S)

VERSUS

M/S ZIQITZA HEALTH CARE LTD. & ANR. RESPONDENT(S)

WITH

CIVIL APPEAL Nos. 4976-4977 OF 2024
(Arising out of SLP(C) Nos. 28096-28097/2023)

WITH

CIVIL APPEAL NO. 4978 OF 2024
(Arising out of SLP(C) No.28389/2023)

ORDER

1. Leave granted.

2. Three appeals are before us. The Civil Appeal Nos.4975 of 2024 and 4978 of 2024 are filed by the State whereas the Civil Appeal Nos.4976-4977 of 2024 are filed by M/s. Pashupatinath Distributors Private Limited, questioning the same impugned order by which the High Court after holding that M/s. Pashupatinath Distributors Private Limited is disqualified, also set aside the disqualification of M/s. BVG India Ltd. which is a consortium and remitted back the matter to the State for fresh consideration after excluding M/s. Pashupatinath Distributors Private Limited.

संचालक जुक्तीजा हेल्थ केयर लिमिटेड से पैसे की बारगेन चल रही है। अगर सरकार ईमानदारी से चलती तो इस टेंडर को रद्द करते हुए अभी तक नया टेंडर निकाल कर पारदर्शी तरीके से निविदा का कार्य संपन्न होने का होता, लेकिन पैसों के खनक के आगे सब बेकार है।

स्वास्थ्य विभाग में नीचे से लेकर ऊपर तक भ्रष्टाचार ही भ्रष्टाचार है। राजधानी पटना से लेकर समतीपुर जैसे शहरों तक फर्जी और बिना निबंधन के नर्सिंग होम संचालित किये जा रहे हैं और अकुशल चिकित्सकों द्वारा मरीज मार दिए जा रहे हैं। पटना के व्यस्ततम आयकर चौराहे के ठीक निकट की किदवईपुरी में सूर्या क्लिनिक संचालित है, जो बिना निबंधन के चल रहा है। इसकी सूचना लोग सूचना अधिकार के तहत खुद पटना के सिविल सर्जन ने दी। मजेदार बात यह है कि इस क्लीनिक का अनुदान भी स्वास्थ्य विभाग के द्वारा दिया जा रहा है। मतलब जिस संस्था का निबंधन क्लिनिकल एस्टेब्लिशमेंट एक्ट के तहत भी नहीं हुआ हो, उसे राज्य सरकार द्वारा अनुदान दिया जा रहा है। सूत्रों से प्राप्त जानकारी के अनुसार कई महिलाएं भी सूर्या क्लीनिक के द्वारा मौत के घाट उतार दी गई। सूर्या क्लिनिक, जिसको सरकार द्वारा अनुदान मिलता है, उस सूर्या क्लिनिक का निबंधन भी क्लिनिकल एस्टेब्लिशमेंट एक्ट के तहत नहीं है। ऐसा ही एक मामला समस्तीपुर से जुड़ा है, जिसमें गर्भवती महिला के ऑपरेशन के बाद उसकी मौत हो गई और सभी अस्पतालकर्मी मृत महिला के शरीर को छोड़कर भाग गए। समस्तीपुर में अवैध नर्सिंग होम में हुए मरीज की मौत के बाद कार्रवाई नहीं होने के बाद पूर्व सांसद प्रतिनिधि रविंद्र नाथ सिंह ने मानवाधिकार आयोग को और मुख्यमंत्री को पत्र लिखकर सिविल सर्जन और प्रधान लिपिक समस्तीपुर पर जांच की मांग की है। साथ ही मृत गर्भवती महिला को न्याय दिलाने की भी मांग की है। पटना के ही समाजसेवी त्रिभुवन प्रसाद यादव ने फर्जी नर्सिंग होम और अवैध दवा दुकान के खिलाफ मुहिम छेड़ रखी है। अभी हाल में ही त्रिभुवन प्रसाद यादव ने सिविल सर्जन पटना को पत्र लिखकर कंकड़बाग पटना में बिना निबंधन के वर्षों से संचालित अस्पताल पर अवैध रूप से मरीजों से वसूली का आरोप लगाया है। जिसके द्वारा बिना मरीज को भर्ती किए हुए बीमा कंपनी के साथ मिलकर करोड़ों की हेराफेरी की जा रही है। उस पर कार्रवाई के लिए सिविल सर्जन पटना को पत्र लिखा गया। प्राप्त जानकारी के अनुसार सिविल सर्जन पटना द्वारा एक कमेटी का गठन भी कर दिया गया, लेकिन कमेटी द्वारा अभी तक "ऑक्सीजोंन अस्पताल'' कंकड़बाग की जांच नहीं की गई, क्योंकि पैसा बोलता है।

पूरे स्वास्थ्य विभाग में भ्रष्टाचार के कारण सरकारी राजस्व को नुकसान लग रहा है साथ ही कई मरीजों की जान भी जा रही है लेकिन नीतीश कुमार की कुंभकर्णी नींद की सरकार सो रही है और उनके त्रिनेत्र दीपक कुमार, मनीष कुमार और हरेंद्र कुमार पैसों की वसूली कर सरकारी राजस्व और गरीब मरीजों के मौत के साथ खेल रहे हैं। चाहे मंत्री मंगल पांडे हो या तेजस्वी यादव, उन्हें स्थानांतरण से लेकर निविदा आमंत्रण तक सिर्फ अपना हिस्सा चाहिए।●

बिहार

मास्कर स्टिंग • अस्पताल खोलने की बात कहकर हेल्थ माफियाओं के गढ़ में घुसी मास्कर की टीम तो हुआ सनसनीखेज खुलासा

150 से ज्यादा अवैध नर्सिंग होम में फर्जी डॉक्टर बन हर हफ्ते 20-25 सर्जरी कर रहा कंपाउंडर; एक ऑपरेशन का लेता है 5-6 हजार रुपए, एनेस्थेटिस्ट भी खुद

125 निजी अस्पताल ही जिले में है निबंधित, सीएस बोले-कई हो चुके बंद

हर गली और चौराहों पर बिना डॉक्टर के चल रहे हैं नर्सिंग होम

जान से खिलवाड़

समस्तीपुर, हिन्दुस्तान संवाददाता। समस्तीपुर जिले में हर गली व चौराहों पर निजी नर्सिंग होम संचालित है। इसमें अधिकांश के पास ना तो कोई सुविधा है और ना ही विशेषज्ञ डॉक्टर। इसके बावजूद बड़ा-बड़ा बोर्ड लगाकर मरीजों का शोषण व दोहन किया जाता है। जिसके कारण आए दिन हंगामा व मरीजों की मौत के मामले भी सामने आ रहा है। इसके बावजूद इन नर्सिंग होम पर कोई कारवाई नहीं हो पा रही है। हालांकि सीएस डॉ. एसके चौधरी ने कहा कि कई निजी अस्पतालों पर कार्रवाई की जा चुकी है। उनके द्वारा जिला मुख्यालय के से लेकर ग्रामीण स्तर तक संचालित दर्जनों निजी अस्पतालों को बंद कराया जा चुका है। यह लगातार जारी है।

125 निजी अस्पताल ही है रजिस्टर्ड : समस्तीपुर जिले में लगभग 125 निजी अस्पताल ही निबंधित है। जिसका निबंधन स्वास्थ्य विभाग के द्वारा दिया गया है। लेकिन विडंबना यह है कि जिले में लगभग एक हजार अस्पताल संचालित है। केवल जिला मुख्यालय में ही दो सौ से अधिक निजी नर्सिंग होम व अस्पताल संचालित है। इनमें डॉक्टर नहीं कंपाउंडर के भरोसे संचालन किया जाता है।

02 दो से अधिक प्राइवेट अस्पताल शहर में संचालित

- विभाग ने कई बार कार्रवाई की, फिर भी मनमानी जारी
- एक या दो कर्मियों के भरोसे होता मरीजों का इलाज

अस्पताल से मांगी गयी रिपोर्ट

शहर के महिला कॉलेज रोड में संचालित जनता हॉस्पिटल से अब रिपोर्ट मांगी गयी है। सीएस डॉ. एसके चौधरी ने अस्पताल संचालक को पत्र देकर अस्पताल में उपलब्ध सुविधा एवं ऑन ड्यूटी चिकित्सकों की सूची मांगी है। साथ ही डॉक्टरों की ड्यूटी रोस्टर भी देने को कहा गया है। विदित हो कि पिछले दिनों उक्त अस्पताल की शिकायत के बाद औषधि विभाग के द्वारा भी जांच की गयी थी।

सीएस की आयोग और सीएम से की शिकायत

समस्तीपुर। जिले में अवैध नर्सिंग होम में आये दिन मरीजों की मौत के बावजूद कार्रवाई नहीं होने पर मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष एवं मुख्यमंत्री से सिविल सर्जन की शिकायत की गयी है। इसमें मानवाधिकार आयोग एवं मुख्यमंत्री से समस्तीपुर के सीएस एवं उनके प्रधान लिपिक की संपत्ति की आर्थिक अपराध इकाई से जांच कराने की मांग की गयी है। दरभंगा जिला के बहेड़ी थाना के दुबौली निवासी पूर्व सांसद प्रतिनिधि रविन्द्रनाथ सिंह उर्फ चिट्टू सिंह ने मानवाधिकार आयोग व मुख्यमंत्री को भेजे पत्र में कहा है कि स्वास्थ्य विभाग की मिलीभगत से जिले में अवैध नर्सिंग होम व जांच घरों का संचालन किया जा रहा है। एक सप्ताह पूर्व कल्याणपुर के अंजना निवासी सोनू कुमार की पत्नी चंदा कुमार की नर्सिंग होम में इलाज के दौरान मौत हो गयी थी। ताजपुर में नेहा कुमारी की भी इलाज के दौरान मौत हुई। सीएस डॉ. एसके चौधरी ने बताया कि जिले में जो भी अस्पताल हैं, उनकी समय-समय पर जांच की जा रही है। कार्रवाई भी की जा रही है। आर्थिक अपराध इकाई को दिए गए आवेदन के बारे में मेरे पास कोई सूचना नहीं है। पत्र आने पर जवाब दिया जाएगा।

गंभीर आरोप

- सीएस की संपत्ति की ईओयू से जांच कराने की मांग
- दरभंगा निवासी चिट्टू सिंह ने सीएम व आयोग को लिखा पत्र
- पिछले सप्ताह दो महिलाओं की इलाज के दौरान हुई थी मौत

अपराधी पास पुलिस फेल

- हत्या के डेढ़ महीने बीत जाने के बाद भी अब तक नहीं की गई पुलिस प्रशासन द्वारा कोई कार्रवाई।
- नहीं मिल सका पीड़ित परिवार को अब तक न्याय ।
- मृतक के परिवार के लोग खा रहे हैं दर दर की ठोकरें।
- बिहार पुलिस की हर कथन हो रही है झूठी साबित।

● गुड्डू कुमार सिंह

मामला बिहार के पटना रामकृष्ण नगर का है। आपको बताते चलें की दिनांक 13 मार्च 2024 को सुनील कुमार की हत्या गोली मारकर संचार कॉलोनी रोड नं0 2 रामकृष्ण नगर में कर दी गयी थी लेकिन आवेदन के डेढ़ महीने के बाद भी अपराधियों को पुलिस पकड़ पाने में अभी तक असफल रही है। रामकृष्णा नगर थाना कांड संख्या 222/24 के अनुसंधानकर्ता के द्वारा नीचे लिखित बिन्दुओं पर जांच कराने पर हत्या के कारण और अपराधियों पर से पर्दा उठ जायेगा।आपको बताते चले की सुनील कुमार गांव में रहकर खेती-बाड़ी का कार्य करते थे। पुलिस द्वारा मामले की जांच सही ढंग से पड़ताल होगी तो बहुत सारी बात की जानकारी प्राप्त हो सकती थी। पर पुलिस की जाँच (कार्यवाही) बहुत धीमी गति में चल रही है यूं कहें की नहीं के बराबर जिसकी वजह से

अपराधी आज भी खुलेआम घूम रहे हैं। जब पूरे मामले की जांच पुलिस द्वारा सही ढंग से किया जाए तो नीचे लिखित बिन्दुओं पर मजबूतती से पड़ताल करें और सीसीटीवी फुटेज में हत्या के स्थल या मौजूद प्रत्यक्षदर्शी का स्थान और घटना के बाद भी वहां पर मौजूद रहना और सिर्फ पिस्टल देखने की बात भी हजम नहीं होती है। लगभग डेढ़ महीने के बाद भी अपराधी खुल्लेआम घूम रहे हैं। युं कहें कि पुलिस प्रशासन पुरी पड़ताल को करने में असमर्थ साबित हुई है। अभी भी भय का माहौल बना हुआ है। मृतक के परिवार जन का कहना है कि सुनील कुमार की हत्या के घटना स्थल पर पहले से मौजूद सौरभ

सैदानीचक, निखिल तुलसीचीक (खैराटाली), राजेश घटना स्थल के समीप किराना दुकान के मालिक, मिथिलेश पिपरा पर सख्ख्ती से पूछताछ होगा तो बहुत सारी बातें खुलकर सामने आयेगी। पूछने पर इन सभी लोगों की बात में संदिग्धता लगती है और मुझे आशंका है की हत्या की जानकारी को यह लोग छुपा रहे हैं या फिर इस हत्या में यह लोग भी शामिल हैं। प्राथमिकी में इनलोगों को नामजद अभियुक्त के रूप में दर्ज कर कारवाही किया जाये।सीसीटीवी में मौजूद इन चारों प्रत्यक्षदर्शी हत्या की गुत्थी सुलझा सकते हैं।मृतक की पत्नी द्वारा कहा गया की मेरे पति सुनील कुमार की रामकृष्ण नगर में रहने वाली महिला मित्र मीना कुमारी, पति अखिलेश कुमार की पुत्री पायल और अनु भी मेरे पति के हत्या के विषय में अलग-अलग बात को बताती हैं। मीना कुमारी की पुत्री पायल के मित्र प्रिंस कुमार ने उनको फोन करके बताया की सुनील कुमार का हत्या हो गया है। मीना का पति अखिलेश कुमार कुछ और बात बताते हैं। मेरे पति सुनील कुमार से मीना के पति ने लगभग एक लाख 25 हजार रूपये लिया था। जिसमें कुछ पैसा लौटाया है। हत्या के दिन भी हत्या होने के चंद मिनट पहले मींना कुमारी मेरे पति सुनील कुमार से मिली थी। यह बात उसने मेरे परिवार

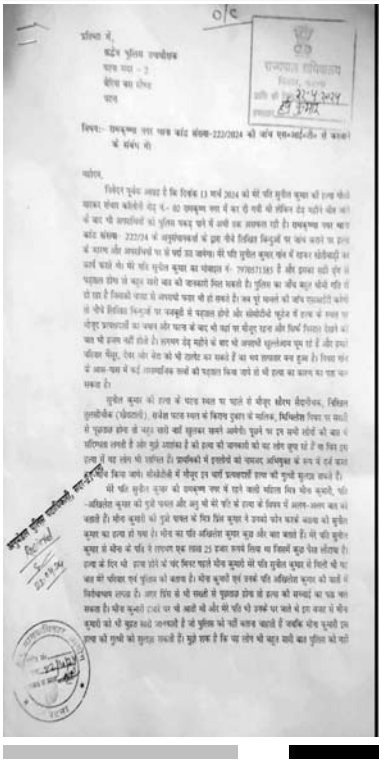

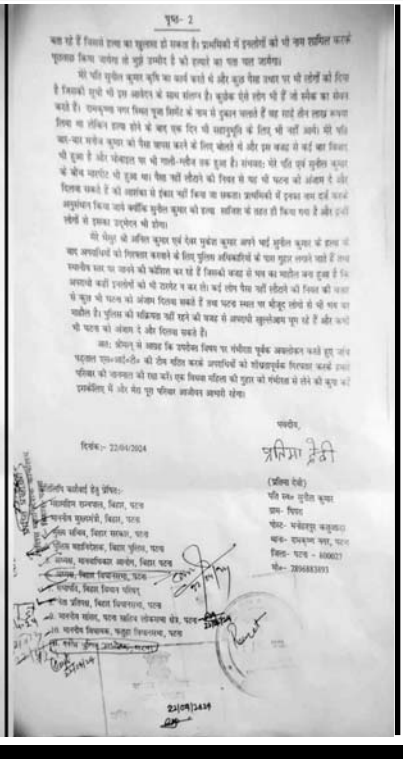

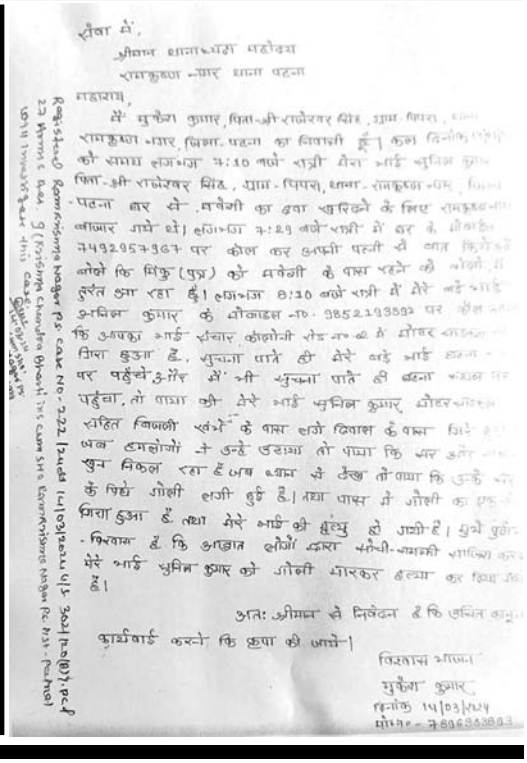

मुख्यमंत्री सचिवालय

CM Secretariat
Bihar

2024016944

दिनांक :- 22-Apr-2024

डायरी संख्या :- 2024016944

नाम :- Pratima Devi

संपर्क सूत्र :- 7896883893

नोट :- यह एक इलेक्ट्रॉनिक प्राप्ति रशीद है| इस पर हस्ताक्षर की आवश्यकता नहीं है |

संपर्क सूत्र : 4,देशरत्न मार्ग, पटना, बिहार, पिनकोड : 800001
E: cmbihar@nic.in, P: +91 (612) 2215601, 2217289

URL: http://cmsonline.bihar.gov.in

एवं पुलिस को बताया है। मीना कुमारी एवं उनके पति अखिलेश कुमार की बातों में विरोध ाभाष लगता है। अगर प्रिंस से भी सख्ती से पूछताछ होगा तो हत्या की सच्चाई का पता चल सकता है। मीना कुमारी हमारे घर भी आती थी और मेरे पति भी उनके घर जाते थे इस वजह से मीना कुमारी को भी जानकारी है। जो पुलिस को नहीं बताना चाहती हैं जबकि मीना कुमारी इस हत्या की गुत्थी को सुलझा सकती हैं। मुझे शक है कि यह लोग भी बहुत सारी बात पुलिस को नहीं बता रहे हैं, जिससे हत्या का खुलासा हो सकता है। प्राथमिकी में इनलोगों का भी नाम शामिल करके पूछताछ किया जायेगा तो मुझे उम्मीद है की हत्यारे का पता चल जायेगा। मेरे पति सुनील कुमार कृषि (किसान) का कार्य करते थे और कुछ पैसा उधार पर भी लोगों को दिया है जिसकी सूची थी इस आवेदन के साथ संलग्न है। कुछेक ऐसे लोग भी हैं जो स्मैक का सेवन करते हैं। रामकृष्णा नगर स्थित पूजा सिमेंट के नाम से दुकान चलाते हैं। यह साढ़े तीन लाख रूपया लिया था लेकिन हत्या होने के बाद एक दिन भी सहानुभूति के लिए भी नहीं आये। मेरे पति बार-बार मनोज कुमार को पैसा वापस करने के लिए बोलते थे और इस वजह से कई बार मोबाइल पर फोन कर गाली-गलौज तक किया है। संभवत मेरे पति एवं सुनील कुमार के बीच मारपीट भी हुआ था। पैसा नहीं लौटाने की नियत से यह भी घटना को अंजाम दे और दिलवा सकते हैं। ऐसी आशंका से इंकार नहीं किया जा सकता है। मृतक के भाई के द्वारा अपने भाई सुनील कुमार के हत्या के बाद अपराधियों की गिरफ्तारी के लिए पुलिस अधिकारियों के पास बार-बार गुहार लगाया जा रहा है तथा स्थानीय स्तर पर जानने की कोशिश की जा रही हैं जिसकी वजह से भय का माहौल बना हुआ है कि अपराधी कहीं इनलोगों को भी टारगेट न कर ले। कई लोग पैसा नहीं लौटाने की नियत की वजह से कुछ भी घटना को अंजाम दिलवा सकते हैं तथा घटना स्थल पर मौजूद लोगो से भी भय का माहौल है। पुलिस की सक्रियता नहीं रहने की वजह से अपराधी खुल्लेआम घूम रहे हैं और कोई भी घटना को अंजाम दे और दिलवा सकते हैं जिसकी सूचना महामहिम राज्यपाल, बिहार, पटना, माननीय मुख्यमंत्री, बिहार, पटना मुख्य सचिव, बिहार सरकार, पटना, पुलिस महानिदेशक, बिहार पुलिस, पटना, अध्यक्ष, मानवाधिकार आयोग, बिहार पटना, अध्यक्ष, बिहार विधानसभा, पटना सभापति, बिहार विधान परिषद्, नेता प्रतिपक्ष, बिहार विधानसभा, पटना-52 माननीय सांसद, पटना संसदीय लोकसभा क्षेत्र, पटना-10. माननीय विधायक, फतुहा विधानसभा, पटना सहित मृतक के परिजनों द्वारा कई आला अधिकारियों को दी गई है फिर भी अब तक नहीं की गई कोई कार्रवाई, प्रशासन के कान में जूं तक नहीं रेंग रही है। क्यों न कहे की बिहार पुलिस की बातें हवा हवाई साबित हो रही है और अपराधी अपराध पर अपराध किये जा रहे हैं।अब सवाल उठता है कि आखिरकार पुलिस अपराधियों तक क्यों नहीं पहुंच पा रही है? क्या अपराधी स्थानीय थे? कहीं बाहरी शार्प शूटर का इस्तेमाल तो नहीं हुआ है? कौन हो सकता है हत्या के पीछे? जमीनी विवाद या फिर पैसे का लेन देन? हो सकता है पुलिस के मुखबिर भी इस मामले पर पर्दा डाल रहे हों? शेखपुरा, पिपरा और सैदानीचक में भी असामाजिक तत्वों का जमावड़ा है और तो और स्मैक का भी वर्चस्व इस क्षेत्र में हावी है। पुलिस अगर मृतक सुनील कुमार की पत्नी के दिये आवेदन की सही ढंग से पड़ताल करेगी तो हत्या की गुत्थी सुलझ जाएगी। वही दूसरी तरफ पटना रामकृष्ण नगर थाना प्रभारी से केवल सच टीम की बात हुई तो थाना प्रभारी कृष्ण चन्द्र भारती ने बताया कि सुनील हत्याकांड में कार्रवाई चल रही है तथा जल्द से जल्द अपराधियों की गिरफ्तारी की जाएगी। फिलहाल अभी तक किसी भी अपराधी की गिरफ्तारी नहीं हुई है।●

रामराज के सपने को साकार करना चाहते हैं मोदी

● डॉ० लक्ष्मीनारायण सिंह

सदियों के इंतजार के बाद अयोध्या में राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा भले ही 22 जनवरी 2024 को हुई लेकिन असल नींव तो इसकी 2014 केंद्र में मोदी सरकार बनते ही पड़ चुकी थी। मोदी के लिए रामराज सही मायने तो गरीब, निर्धन और बेसाहारा लोगों के जीवन की उन्नति में छिपा है, इन वर्गों में ममता, समानता और खुशहाली लाने के लिए सतत और संतुलित विकास की जरूरत पड़ती है तभी तो केंद्र में मोदी सरकार बनते ही लोगों के सपनों को सफल करने के लिए तमाम जन कल्याणकारी योजनाओं को शुरुआत की गई इसमें प्रधानमंत्री जनधन योजना, उज्ज्वला योजना, हर घर जल योजना, बेटी पढ़ाओ ,बेटी बचाओ योजना, नारी शक्ति, बंधन, आयुष्मान भारत योजना, पीएम आवास योजना ,किसान सम्मान निधि योजना प्रमुख है। पीएम जन धन योजना देश की आजादी के बाद की सबसे पहले ऐसी योजना बनी जिसमें जन को धन से जोड़ने का काम किया गया। इसकी शुरुआत 28 अगस्त 2014 में पूरे देश में हुई इस योजना के जरिए निर्धन वर्ग के लोगों का आर्थिक सशक्तिकरण के साथ बैंकिंग सेवाओं से वंचित बहुत बड़ी आबादी से जोड़ा गया। केंद्र एवं राज्य सरकार से मिलने वाली सुविधाओं को लाभार्थियों के खाते में प्रत्यक्ष हस्तांतरण यानी डीबी टी के माध्यम से भेजा गया। इन योजनाओं के जरिए अब तक 51.55 करोड़ लाभार्थियों को 277620 करोड़ रुपए जनधन खाते में भेजा गया, रामराज की अवधारणा सर्वे भवंतु सुखिनः के अनुरूप 2018 में आयुष्मान भारत योजना की शुरुआत की गई। यह योजना बिना जाति धर्म मजहब के भेदभाव के आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों को उत्तम स्वास्थ्य सुविधा मुहैया कराती है। इस योजना के 10 करोड़ से अधिक परिवारों को प्रति वर्ष 5 लाख रुपए तक का मुफ्त इलाज की सुविधा की सुरक्षा मिलती है। इसका लाभ लेने वालों की संख्या देश में तकरीबन 55 करोड़ से अधिक है।

स्वच्छता और पर्यावरण संरक्षण रामराज का आधार है। इसे पूरा करने के लिए दो अक्टूबर 2014 को पूरे देश में स्वच्छ भारत अभियान की शुरुआत की गई, इस कार्य में सरकार के साथ-साथ जन भागीदारी भी सुनिश्चित की गई। यह दुनिया की इकलौती सबसे बड़ी स्वच्छता अभियान है, इस मिशन के तहत 11 करोड़ से अधिक व्यक्ति घरेलू शौचालय के निर्माण कार्य किया गया ,देश में इस मिशन के अधिक व्यापक प्रभाव से 2019 तक 6 लाख गांव में खुले में शौचालय से मुक्त कर लिया गया। रामराज में कोई भूखा न सोए इस लक्ष्य को पूरा करने के लिए पीएम गरीब कल्याण अन्न योजना ,अपनी महती भूमिका अदा कर रही है। यह योजना देश की 54 फीसदी आबादी को खाद्य सुरक्षा प्रदान करती है। देश में इस योजना का लाभ 81 करोड़ लोगों को प्रति माह 5 किलो राशन उपलब्ध कराया जाता है। यह दुनिया का सबसे बड़ा खाद्य सुरक्षा कार्यक्रम है। महिलाओं को चूल्हा और गोईठा से खाना बनाते समय धूएं से कई तरह की बीमारियां हो जाती है। इस धुएं से महिलाओं को बचाने के उद्देश्य पीएम उज्जवला योजना की शुरुआत की गई। इसके तहत शहरियों एंव ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले बीपीएल परिवारों को मुफ्त रसोई गैस कनेक्शन उपलब्ध कराया गया, इसके तहत पिछले कुछ वर्षों में 8.5 करोड़ से अधिक एलपीजी कनेक्शन दिए गए। एलपीजी कनेक्शन का दायरा 95 फीसदी से अधिक आबादी तक पहुंच चुका है। इसी तरह देश में रहने वाले गरीब और बेघर लोगों को आवास उपलब्ध कराने के लिए पीएम आवास योजना 15 जून 2025 को शुरू की गई, गरीबी के आधार बनाकर प्रतिवर्ष इस योजना के तहत ग्रामीण और शहरी क्षेत्र में रहने वाले का भारतीयों की सूची जारी की जाती है जिसमें लोगों को पक्की छत मिल सके, ठीक इसी तरह से देश के हर नागरिक को पीने के लिए स्वच्छ पानी मिल सके, इसके लिए केंद्र, राज्य सरकार के सहयोग से हर घर जल योजना का शुभारंभ किया गया। इस योजना के तहत प्रत्येक ग्रामीण घर में नल के पानी की आपूर्ति प्रावधान किया गया। गरीबों के जीवन में उजाला लाने के लिए पीएम सौभाग्य योजना शुरू की गई। इस योजना के तहत निर्धारित गरीब लोग जो विद्युत कनेक्शन के बिना जीवन यापन करते हैं उन परिवारों को केंद्र सरकार की तरफ से मूफ्त बिजली कनेक्शन दिया गया जिससे उन घरों में भी उजाला फैलाई जा सके। जो स्वंय विद्युत कनेक्शन लेने में सक्षम नहीं है। गांव में संपर्क बनाने के लिए पीएम ग्राम सड़क योजना के तहत सड़कों का निर्माण किया जा रहा है, केंद्र सरकार द्वारा चलाए जा रहे योजनाओं को धरातल पर विभिन्न मंत्रालयों से तकरीबन 300 सरकारी योजना चल रही है, जिससे लोगों को जीवन स्तर और आसान बना रहा है। जो काम पिछले 70 सालों में ना हो पाया वह काम मोदी सरकार कुछ वर्षों में कर दिया। इस संदर्भ में विपक्षी पार्टियां भले ही ना समझे परंतु जनता खुब समझती है। मोदी रामराज लाना चाहते हैं ,जनता मोदी राज चाहती है।यह बातें भाजपा मीडिया प्रभारी डॉ लक्ष्मी नारायण सिंह पटेल भाजपा कार्यालय मां तारा उत्सव पैलेस गोविंदपुर फतुहा में भाजपा कार्यकर्ताओं की एक बैठक को संबोधित करते हुए कहा। जिसका अध्यक्षता भाजपा मंडल के वरिष्ठ उपाध्यक्ष अनिल कुमार शर्मा तथा मुख्य अतिथि सुप्रसिद्ध होम्योपैथिक चिकित्सक डॉ लक्ष्मी नारायण सिंह पटेल थे।●

हिंदू विवाह पर सर्वोच्च फैसला देकर संस्कारों की हुई पुष्टि

● डॉ० लक्ष्मीनारायण सिंह

देश की सर्वोच्च अदालत में हिंदू विवाह को लेकर फैसला देकर संस्कारों एवं पारंपरिक रिवाजों को पुष्टि किया है ,साथ ही उन्हें कानूनी दृष्टि से आवश्यक स्वीकार किया है, पाश्चात्य संस्कृति की आंधी में हिंदू विवाह की पवित्रता समाज में समय के साथ घटी है और उसमें सुधार सुदृढ़ता की जरूरत है। हाल के वर्षों में भारत में हिंदू विवाह परंपरा एवं संस्कृति से अनेक विकृतियां जुड़ गई है, डेटिंग संस्कृति की शुरुआत के साथ लव मैरिज का प्रचलन बढ़ा है। संभावित दूल्हा और दुल्हन अपने दम पर जीवन साथी चुनना पसंद करते हैं। विवाह के साथ प्री वेडिंग का प्रचलन भी अनेक विकृतियों का वाहक भी बना है। आयोजनों में शराब एवं नशा का प्रचलन भी दुर्घटनाओं का कारण बना है इनके कारण विवाह होने से पहले ही उसमें दरार बढ़ते हुए देखा जा रहा है। जो लोग विवाह को मात्र एक पंजीकरण मानते हैं, उन्हें देश के सर्वोच्च न्यायालय के फैसले से सचेत हो जाना चाहिए। उन्हें सात फेरों का अर्थ समझना होगा, बिना सात फेरों हिंदू रीति रिवाज एवं वैवाहिक आयोजनों के कोर्ट की दृष्टि में भी विवाह मान्य नहीं होगा। हिंदू व्यवहार कोर्ट का ताजा फैसला न केवल स्वागत योग्य बल्कि इसमें दूरगामी परिणाम सुखद होंगे, इसमें हिंदू संस्कृति एवं संस्कारों को बल मिलेगा पारिवारिक संस्थाओं को मजबूती मिलेगी, हिंदू विवाह से जुड़ा यह फैसला सुनाते हुए सुप्रीम कोर्ट ने कहा की शादी गाने और डांस ,शराब पीने और खाने का आयोजन या अनुचित दबाव डालकर दहेज और गिफ्ट की मांग करने का मौका नहीं है। विवाह कमर्शियल ट्रांजैक्शन नहीं है। यह एक गंभीर बुनियादी संस्कृति एवं पारिवारिक आयोजन है, जिसे एक पुरुष और एक महिला के बीच संबंध बनाने के लिए मनाया जाता है, जो भविष्य के अच्छे पारिवारिक के लिए पति और पत्नी का दर्जा प्राप्त करते हैं। यह भारतीय हिंदू समाज व्यवसाय की बुनियादी इकाई एंव मजबूत

सांस्कृतिक एवं पारिवारिक आयाम है। सुप्रीम कोर्ट ने साफ किया है कि बिना सात फेरों के हिंदू विवाह को मानता नहीं मिल सकती है, अर्थात शादी के लिए हिंदू विवाह अधिनियम में जो नियम और प्रावधान बनाए गए हैं, उसका पालन करना होगा, कोर्ट ने अपने फैसलों में हिंदू विवाह अधिनियम 1955 के तहत हिंदू विवाह को कानूनी आवश्यकताओं और पवित्रता को स्पष्ट किया है। अधिनियम के अनुसार एक हिंदू विवाह किसी भी पक्ष के पारंपरिक संस्कारों के अनुसार संपन्न किया जाएगा। समारोह में सप्तपदी (दूल्हा और दुल्हन द्वारा पवित्र अग्नि के चारों ओर संयुक्त रूप से सात कदम उठाना शामिल) है और जब सातवां चरण एक साथ लेते हैं तो विवाह पूर्ण और बाध्यकारी हो जाता है। कुल मिलाकर हिंदू विवाह एक संस्था है, संस्कार है। विवाह कोई व्यावसायिक लेन-देन नहीं है।

विवाद की स्थिति में समारोह के प्रमाण पेश करना जरूरी है, कोर्ट में सात फेरों और उससे जुड़े समारोह का मूल्य समझने की कोशिश हिंदू विवाह को न केवल मजबूती प्रदान करेगी बल्कि आधुनिकता की आंधी में धुंधलाते मूल्यों को नियंत्रित करने का काम करेगी इसमें कोई शक नहीं की विवाह संस्कार का मूल महत्व पहले की तुलना में कम हुआ है अब विवाह बहुतों के लिए दिखावा, मजबूरी समझौता भर रह गया है। हिंदू विवाह एक आदर्श परंपरा एवं संस्कार है। हिंदू धर्म में विवाह को 16 संस्कारों में से एक संस्कार माना जाता है। अन्य धर्म में विवाह पति और पत्नी के बीच एक प्रकार का करार होता है जिसे विशेष परिस्थितियों में थोड़ा भी जा सकता है परंतु हिंदू विवाह पति और पत्नी के बीच जन्म अंतर का संबंध होता है जिसे किसी भी परिस्थितियों में नहीं तोड़ा जा सकता। अग्नि के साथ फेरे लेकर और ध्रुव तारा साक्षी मानकर दो तन, मन तथा आत्मा एक पवित्र बंधन में बंध जाते हैं। यह दो परिवार का मिलन है। हिंदू विवाह के सात वचनों में से कम से कम तीन ऐसे हैं जो अपने बुजुर्गों की देखभाल करने का बादा करते हैं। न्यायालय द्वारा इस फैसले के लिए न्याधीश को कोटि-कोटि धन्यवाद लेते हैं धन्यवाद देने वालों में अनील कुमार शर्मा, शोभा पटेल, रेखा शर्मा, पुजा कुमारी, साधना सिंह एडवोकेट, रवि प्रकाश आदि।●

अच्छे नेता की पहचान जाति और चेहरा से नहीं

● डॉ० लक्ष्मीनारायण सिंह

भारत में लोकसभा चुनाव की प्रक्रिया जारी है। समाज को देश चलाने के लिए अच्छे लोगों का चुनाव करना है जो देश को ईमानदारी पूर्वक अपराध और भ्रष्टाचार पर नियंत्रण के साथ - साथ कर्मठता पूर्वक विकास और समाज को आगे बढ़ा सके। इस समय सबसे बड़ी समस्या है बढ़ता हुआ अपराध और भ्रष्टाचार? इन समस्याओं को कौन रोक सकेगा। वैसे लोगों को उम्मीदवार बनाकर भेजना चाहिए जिनका इतिहास रहा हो अपराध भ्रष्टाचार के विरुद्ध आंदोलन। ऐसे लोगों के बदले सुंदर चेहरे वाले को लोकसभा चुनाव में उम्मीदवार खड़ा कर दिया जाता है। उदाहरण अनेकों हैं ! यहां पर उदाहरण है बक्सर लोकसभा उम्मीदवार मिथिलेश तिवारी, चेहरा से सुंदर अवश्य हैं, आवाज में मौनी बाबा और कार्यों में दो ही काम जानते हैं कार्यकर्ताओं से नारा लगवाना ,माला पहनना फोटो खिंचवाना आदि।मोदी जी द्वारा लगभग 300 योजनाएं चलाई जा रही है शायद एक भी योजना गरीबों तक नहीं पहुंचाएं होंगे और नहीं योजनाओं की सूची भी आम नागरिकों की कौन कहे कार्यकर्ताओं को भी सूची नहीं दिया गया होगा। आज पूरा बिहार अपराध की नगरी भ्रष्टाचार का साम्राज्य है। मिथिलेश तिवारी शायद अपराध और भ्रष्टाचार के विरुद्ध धरना, प्रदर्शन, आमरण अनशन किया होगा। इसी प्रकार सारण लोकसभा क्षेत्र में सुंदर चेहरा वाले राजीव प्रताप रूढ़ी को लोकसभा उम्मीदवार बनाया गया है। कोरोना काल में एंबुलेंस के लिए हाहाकार मची हुई थी दूसरी ओर रूड़की ने इसे उजागर करने के लिए को एंबुलेंस छिपाकर रखे हुए था। यह घटना का पर्दाफाश भाजपा के लोगों को करना चाहिए था वह काम पप्पू यादव ने किया। ऐसे घटनाओं को उजागर करने के लिए पप्पू यादव को उपहार के बदले जेल भेज दिया गया तथा राजीव प्रताप रूढ़ी को सत्य हरिचंद का प्रमाण पत्र दे दिया गया। मोदी जी कोई भगवान नहीं है की ऐसी घटनाओं के बारे में जानते रहते हैं। ऐसी घटना के बारे में जानते हैं शायद राजीव प्रताप रूड़की को चुनाव से वंचित कर देते।●

भारत का खिलौना अमेरिका, ब्रिटेन आदि देशों में निर्यात किए जा रहे हैं

● डॉ० लक्ष्मीनारायण सिंह

भारत का खिलौना निर्यात पांच-छः वर्षों में तेजी से बढ़कर 2600 करोड़ रुपए के स्तर पर पहुंच गया है। भारत से अमेरिका, ब्रिटेन,यूरोपीय यूनियन, ऑस्ट्रेलिया, यूएई, दक्षिण अफ्रीका सहित कई देशों को खिलौने निर्यात किया जा रहे हैं। भारतीय खिलौना उद्योग का कारोबार करीब डेढ़ अरब रुपए डॉलर का है जो वैश्विक बाजार हिस्सेदारी का 0.5 फीसदी है लेकिन जिस तरह भारत में खिलौना उद्योग को प्रोत्साहन दिया जा रहा है उससे खिलौना उद्योग छलांग लगाते हुए तीन अरब डॉलर की ऊंचाई पर पहुंचने की संभावना रखता है स्पष्ट है कि दुनिया में भारतीय खिलौना बाजार को ऊंचाई मिलने की कई कारण है। मेक इन इंडिया अभियान में खिलौना निर्माण क्षेत्र में चीन को झटका देते हुए खिलौने निर्माण को भारत के लिए फायदे का सौदा साबित कर दिया है। गौरव है कि चीन से खिलौना खरीदारी करने वाले कई खरीदार अब तेजी से भारत की ओर रूख कर रहे हैं, यह कुछ छोटी बात नहीं है। दुनियां में कोई एक दशक पहले खिलौने की भारत से किसी तरह कीघ खरीदारी होती थी, लेकिन मेक इन इंडिया के कारण कई बड़ी-बड़ी खिलौना कंपनियों ने भारत में खासतौर से दिल्ली में अपना आधार

तैयार किया है। अंतरराष्ट्रीय खिलौना कंपनियों को भी आपूर्ति करती है। अब वह समय बीत गया है कि जब पांच छः वर्ष पहले तक भारत खिलौना के लिए दूसरे देशों पर निर्भर,भारत में 80 फीसदी खिलौने चीन से आयात किए जाते थे। हम उम्मीद करते हैं कि घरेलू बाजार के सस्ते और गुणवत्तापूर्ण खिलौनों से देश के बच्चों खिलौने पर आधारित खेलों से मनोरंजन करने वाले करोड़ों लोगों के चेहरे का मुस्कान बनेगी, खिलौने से विदेशी मुद्रा की कमाई की जा सकेगी। यह बातें भाजपा मीडिया प्रभारी डॉ लक्ष्मी नारायण सिंह पटेल ने भाजपा कार्यकर्ताओं को एक बैठक को संबोधित करते हुए कहा।यह बैठक भाजपा कार्यालय मां तारा उत्सव पैलेस गोविंदपुर फतुहा में किया गया। इस अवसर पर, भाजपा जिला मंत्री शोभा देवी, फतुहा नगर के वरिष्ठ उपाध्यक्ष अनील कुमार शर्मा, बब्लू शाह आदि मौजूद थे।●

संघर्ष नहीं सहयोग, अशांति नहीं शांति चाहिए : डीडीसी

जमुई एक ऐतिहसिक जिला है। यह संयोग है कि जमुई शब्द में दो अक्षर और दो मात्रा है। ज+म+उ+ई=जमुई। प्रत्येक अक्षर और प्रत्येक मात्रा जमुई के विशेषताओं को बताने के लिए आतुर है। ज से जनमानस, म से मौसम, उ से उत्साहपूर्वक और ई से ईमानदारी। अर्थात जिस भूखंड का जनमानस विपरीत मौसम में भी उत्साहपूर्वक और ईमानदारी से जीवन व्यतीत करे उसे जमुई कहते हैं। जमुई सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक और राजनैतिक दृष्टिकोण से अत्यंत ही समृद्धिशाली जिला हैं। सामाजिक दृष्टिकोण से त्रेतायुग युग में गिद्धेश्वर में गिद्धराज जटायु का राजपाट था। लंका का आततायी राजा रावण बहुत ही अत्याचारी था। वह जगत जननी सीताजी का अपहरण कर लंका ले जा रहा था। जब वह गिद्धेश्वर पहुँचा, तो जटायु को यह अत्याचार बर्दास्त से बाहर था। उसने सीता मैया को मुक्त कराने के लिए रावण के साथ युद्ध करने लगे। घमासान युद्ध हुआ। अंत में जटायु वीरगति को प्राप्त किये। इसी कारण यह स्थान गिद्धेश्वर कहलाता है। आर्थिक दृष्टिकोण से गिद्धौर भारत में राजघरानो में पहला और अंतिम राजघराना गिद्धौर ही रहा है। वर्तमान समय में भी भारतीय खान ब्यूरो के रिपोर्ट के अनुसार जमुई के सोनो प्रखंड में 222.88 मिलियन टन सोना का भंडार है। राजनैतिक दृष्टिकोण से जदीश लोहार, श्रीकृष्ण सिंह, कुमार कालिका सिंह, सहदेव हलुवाई आदि अनेक नेताओं ने भारत को स्वतंत्रता दिलाने में सब कुछ न्योक्षावर कर दिये। इस समृद्ध ऐतिहसिक जिला का वर्तमान **डी०डी०सी० सुमित कुमार** हैं। उनके साथ केवल सच मासिक पत्रिका के विशेष प्रतिनिधि **प्रो० रामजीवन साहु** ने साक्षात्कार किया, प्रस्तुत है इसके प्रमुख अंश :-

★कृपया अपना संक्षिप्त परिचय बतायें?

मेरा नाम सुमित कुमार है। मेरे पूज्य पिताजी का नाम श्री कृष्णा प्रसाद सिंह हैं, जो बैंक प्रबंधक पद से अवकाशप्राप्त हैं। मुझे अति गर्व है कि मेरे पूजनीय दादा श्री स्वतंत्रता सेनानी थे। मैं गया जिला का स्थायी निवासी हूँ।

★ आप अपने शैक्षणिक योग्यता के बारे में बताएं?

मैंने 1992 में मैट्रक, 1994 में इन्टरमीडिएट, 1997 में स्नातक और उसके बाद पटना विश्वविद्यालय से भूगोल विषय से मास्टर डिग्री प्राप्त किया हूं।

★ सेवा के क्षेत्र में काम करना है, यह प्रेरणा आपको कहाँ से मिली?

यह मेरे लिए अत्यंत ही मार्मिक प्रश्न है। छठा वर्ग में ही निर्णय करना पड़ा कि मुझे क्या करना है। घटना छोटी है, परन्तु अत्यंत ही रुचिकर है। गया जिला का तात्कालीन जिला अधिकारी श्री अशोक कुमार सिंह थे। मैं उस समय छठी कक्षा का विद्यार्थी था। एक शिकायत को लेकर मैं उनसे मिलने जिला अधिकारी के कक्ष में गया। बाल स्वभाव और पुरुषार्थी समझ मेरे शिकायत का उन्होने तुरंत निष्पादन कर दिये और पुत्रवत उन्होने मेरी शुप्त उत्कंठा को यह कहकर झकझोर दिये कि आपको प्रशासनिक सेवा में आना है। फलस्वरूप मैने 2010 बिहार लोक सेवा आयोग की परीक्षा में उतीर्ण हो गया।

★ आपका अंतिम लक्ष्य क्या है?

मेरा अंतिम लक्ष्य है। संघर्ष नहीं सहयोग चाहिए। अशांति नहीं शांति चाहिए।

★ अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए आपने क्या-क्या किये?

अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए मैंने बिना थके, बिना रुके अपने दायित्वों का निर्वहन किया।

★ आप सर्वप्रथम किस पद पर अपना योगदान दिये?

मैं सर्वप्रथम 2010 में बिहार लोक सेवा आयोग की परीक्षा में उतीर्ण हुआ और 2011में शिवहर में उप समाहर्ता के पद पर अपना योगदान दिया। उसके बाद 2015 के फरवरी में वैशाली जिला आया। 2015 में ही लगभग ढाई वर्षों तक हाजीपुर में जेल अधिक्षक के रूप में कार्य किया। तथा वैशाली के महुआ अनुमंडल में लोक शिकायत पदाधिकारी रहा। 2019 में पटना जिला के बाढ़ अनुमंडल एसडीएम रहे। 2022 में समाज कल्याण विभाग में उप सचिव, वरीय प्रशासी पदाधिकारी तथा संयुक्त निदेशक के रूप में कार्य किया हूं।

★ जमुई जिला में आपने कब योगदान दिया?

जमुई जिला में मैंने 29 जनवरी 2024 को अपना योगदान दिया।

★ 2023-24 में आपने किन-किन कार्यों का सम्पादन किये?

जमुई में योगदान किये हुए मुझे मात्र 94 दिन ही हुये हैं। इस अल्प अवधि में जो कार्य हुये, वह अग्रवत हैं :- जिला स्थापना दिवस, बिहार -दिवस, गरही महोत्सव,प्रधान मंत्री, मुख्य मंत्री ,गृह मंत्री का चुनावी सभा औ2024 का लोक सभा चुनाव शांतिपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ।

★ आपके किन कार्यों के लिए जमुई की जनता आपको याद करती रहेगी?

मैं चाहता हूँ कि आम आदमी का मस्तिष्क परिवर्तित हो।एक छोटा सा उदाहरण प्रस्तुत करता हूँ। जिले का विकास राशन कार्ड, पेंशन, आंगनवाड़ी, दो -चार पदाधिकारियों पर कार्यवाही स्थानांतरण से नहीं हो सकता बल्कि आम जनता का सहयोग प्राप्त कर चौड़े सड़कों का निर्माण, रेलवे या मैट्रो ट्रैन का विकास, सुगम परिवहन, नयी तकनीक पर आधारित उद्योगों का विस्तार, पर्यटन, सांस्कृतिक मेला, सिंचाई से जुड़े बड़े प्रोजेक्ट, जलवायु आधारित कृषि का विकास, पर्यावरण पर आधारित संस्कृति का संरक्षण, गंगा उदवह योजना के माध्यम से पेयजल संकट का निवारण इत्यादि किये जाने की आवश्यकता है।

जमुई का बदलता समीकरण

इस बार का लोकसभा चुनाव में जमुई में स्थानीय तौर पर बहुत कुछ बदलता देखा गया है। जमुई में जो कभी एक दुसरे के धुर-बिरोधी हुआ करते थे अपने राजनैतिक आकांक्षाओं के कारण एक ही मंच को साझा कर रहे थे। एक ही परिवार के दो भाई दोनो अलग-अलग धाराओं के प्रचार में लगे थे। जो परिवार कभी लोजपा प्रत्यासी को जमुई में देखना नहीं चाहते थे वे जमुई से लोजपा प्रत्यासी के जीत को पक्का करने के लिए दिन-रात एक कर दिया था। जो नेता और जाती को भाजपा का मजबूत स्तम्भ माना जाता था वह भाजपा नहीं राजद उम्मीदवार को मजबूत कर रहे थे। जमुई से हमारे जिला ब्यूरो **अजय कुमार** की रिर्पोट :-

जमुई हमेशा से राजनीति के दो धुरी के रूप में जाना जाता रहा है। पिछले तीन-चार दशकों से जमुई जिले को नरेन्द्र-जयप्रकाश के अपने-अपने विचारधारा के रूप में जनता जानती रही है। पिछले एक दशक से जमुई लोकसभा क्षेत्र में चिराग की एंट्री ने तीसरी धुरी तैयार करने का भरसक प्रयास किया पर नरेन्द्र-जयप्रकाश के समानांतर धरा अभी तक तैयार नहीं हो सका है। हालांकि पिछले दो बार से चिराग पासवान जमुई सुरक्षित क्षेत्र से सांसद रहे हैं। 2024 के लोकसभा चुनाव में चिराग के हाजीपुर चले जाने के कारण वे जमुई से अपने बहनोई अरूण भारती को जमुई के चुनावी रण में उतारा है। इस बार के लोकसभा चुनाव में वह सभी संभाबनाएं जुड़ते चले गये जिसकी कल्पना भी कोई नहीं कर सकता। नरेन्द्र सिंह के स्वर्ग सिधार जाने के बाद से नरेन्द्र सिंह की धुरी धीरे-धीरे सिमटती जा रही है और इस बार के लोकसभा चुनाव मे तो मानो नरेन्द्र सिंह की धुरी समाप्त करने के लिए उनके ही बेटे और पूर्व विधायक भाजपा के नेता रहे अजय प्रताप ने महत्ती भूमिका अदा कर दी है।

आपको बता दूँ कि समाजबादियो की धरती रहे जमुई जिले से निकले जयप्रकाश नारायण यादव और नरेन्द्र सिंह की कर्मभूमि और जन्मभूमि दोनो ही जमुई में ही रही है। दोनो ने जमुई जिले से ही राजनीति का ककहरा शुरू किया था। दोनो राजद के नेता रहे हैं। जयप्रकाश नारायण यादव राजद प्रमुख लालू प्रसाद यादव और उनके परिवार के बेहद करीबी रहे हैं और जब से राजनीति की शुरूआत किया है तब से वे राजद के सच्चे और मजबूत सिपाही रहे हैं। जयप्रकाश ना0 यादव विधायक, मंत्री के साथ-साथ मुंगेर और बांका लोकसभा क्षेत्र से सांसद एवं केन्द्रीय मंत्री तक रह चुके हैं। जयप्रकाश के भाई विजय प्रकाश जमुई के विधायक और बिहार सरकार में मंत्री भी रह चुके हैं। जयप्रकाश के परिवार से उनके माता, बेटी और भाई विधायकी के चुनाव में भाग्य आजमा चुके हैं। इनका परिवार वेगवर्ड तथा राजद के विचारधारा के हिमायती रहे हैं। जयप्रकाश कभी राजद के मुंगेर प्रमंडल के सर्बमान्य नेता रहे हैं।

वहीं देखा जाय तो नरेन्द्र सिंह खुद उनके पिता और उनके तीनो बेटे जमुई जिले से ही विधायक बने। जमुई जिले के चकाई, जमुई और सिकन्दरा विधानसभा क्षेत्रों में उनका मजबूत पकड़ रहा है। नरेन्द्र सिंह और उनका परिवार कभी भी किसी एक पार्टी में स्थाई तौर पर नहीं रहे हैं। वर्तमान में नरेन्द्र सिंह के छोटे बेटे सुमित कुमार सिंह चकाई से निर्दलीय विधायक और बिहार सरकार में मंत्री पद पर हैं। जमुई लोकसभा क्षेत्र में वर्तमान में नरेन्द्र सिंह के दोनो बेटे अलग-अलग विचारधाराओं के साथ मिल कर वोट मांग रहे हैं। सुमित जहां एनडीए के लिए वोट मांगते नजर आए तो वहीं अजय प्रताप राजद प्रत्यासी रहे अर्चना रविदास के लिए वोट मांगते और मंच साझा करते दिखे। अजय प्रताप जमुई विधानसभा क्षेत्र तथा सुमित सिंह चकाई विधानसभा क्षेत्र के लिए राजनीति करते रहे हैं। तीन-चार दशकों से धुर बिरोधी रहे अजय-विजय साथ-साथ मंच साझा कर रहे थे।

वर्ष 2024 का जमुई लोकसभा चुनाव का परिणाम चाहे जो भी हो पर स्व0 नरेन्द्र सिंह का इन्द्रजाल का तिलिस्म इस बार पूरी तरह से दरकते नजर आया है। जिले के दो धुरी, दो धारा और दो विचारधारा इस बार एक ही धारा में बहते नजर आया है। जमुई विधानसभा क्षेत्र में

भले ही इस बार पूर्व केन्द्रीय मंत्री दिग्विजय सिंह की बेटी भाजपा के श्रेयसी सिंह विधायक रही हों पर हमेशा से जमुई विधानसभा क्षेत्र नरेन्द्र-जयप्रकाश के हिसाब से ही राजनैतिक करबटें बदलता रहा है। अजय प्रताप और विजय प्रकाश जमुई विधानसभा क्षेत्र के केन्द्रबिन्दु में रहे हैं और इन्हीं दोनो के बीच पिछले कई बार से चुनावी संधर्ष रहा है। आपको बता दूँ कि हमेशा से एक पक्ष से प्रताड़ित जनता दूसरे पक्ष के पास इस उदेश्य से पूरे आशा के साथ जाते थे कि दूसरे पक्ष से उसे सहयोग निश्चित ही मिलेगा और मिलता भी था। इस बार पहली बार नरेन्द्र सिंह के बेटे अजय प्रताप जयप्रकाश नारायण यादव के भाई विजय प्रकाश के साथ मंच साझा करते दिखे। पूर्व विधायक अजय प्रताप राजद प्रत्यासी रहे अर्चना रविदास के लिए वोट मांग रहे थे। जमुई की जनता पहली बार अजय प्रताप और विजय प्रकाश को एक मंच पर देख कर दुनियां के किसी सातबें अजूबे के रूप में देखा है।

जमुई सुरक्षित लोकसभा में छः विधानसभा पड़ता है उसमें से चार जमुई जिले के जमुई, सिकन्दरा,झाझा और चकाई है और इन चारों पर एनडीए का कब्जा है तो वहीं एक मुंगेर जिला का तारापुर और एक शेखपुरा जिले से शेखपुरा विधानसभा क्षेत्र है। लोजपा प्रमुख चिराग पासवान का इस बार जमुई छोड़ हाजीपुर चले जाने के कारण वे अपने बहनोई अरूण भारती को जमुई सु0 से लोजपा उम्मीदवार बनाया है तो राजद ने अर्च्रणा रविदास को मैदान में उतारा है। अर्चणा रविदास मुंगेर के रहने वाले मुकेश यादव की धर्मपत्नी हैं। अर्चना रविदास को राजद ने स्थानीय और जमुई की बेटी के तौर पर प्रोजेक्ट किया है। इस बार के चुनाव में जातीबाद पूरी तरह से क्षेत्र में हॉवी रहा है। राजद ने चुनावी मैदान को फतह करने के लिए इस बार तमाम जातियों को अपने पक्ष में करने के लिए तमाम हथकंडे अपनाए गये हैं। एक यादव की धर्मपत्नी और राजद उम्मीदवार दूसरे स्थानीय और स्थानीय बेटी का भरपूर लाभ उठाने का प्रयास राजद के द्वारा उठाया गया और वे इसमें सफल भी रहे हैं। दूसरी तरफ करीब 25 प्रतिशत का अंतर जो पिछले लोकसभा में देखा गया था उसे पाटने में शायद कामयाब हो भी जाय राजद उम्मीदवार तो अंतर बहुत कम रहेगाा।

इस कारण से यह चुनाव का परिणाम को लेकर जनता में कॉफी असमंजस की स्थिति उत्पन्न हो गई है।

इस बार के लोकसभा चुनाव में सिर्फ नरेन्द्र सिंह के बेटे अजय प्रताप ही नहीं तेली समाज के भाजपा नेता डॉ नीरज साह और पूर्व भाजपा झाझा विधायक रहे रविन्द्र यादव के परिवार भी एनडीए गठबंधन में रहते हुए भी राजद उम्मीदवार का साथ दिया है। तेली और राजपूत जाती को भाजपा का कोर वोटर माना जाता है। हमने महसुस किया है कि इन जाती के वोटर भले ही भाजपा को वोट दिया हो पर वे खुल कर सामने नहीं आये ऐसे में इन जातियों के बहुत सारे वोटर बूथ पर पहुँचने से भी गुरेज किया। वहीं बूथ मेनेजमेंट में भी लोजपा पूरी तरह से सक्रिय नहीं दिखी। लोजपा के नये उम्मीदवार को पाकर वोटर थोड़े नाराज जरूर हुए पर वोट मोदी के नाम पर जरूर पड़ा है। मुसहर जाती के लोगों को पहले बरगला कर वोट ले लिया जाता था पर इस बार इन वोटरों को कोई बरगला नहीं सका और मांझी समुदाय का एकमुस्त वोट एनडीए को गया है। वहीं अजय प्रताप, डॉ0 नीरज साह सहीत डॉ0 रविन्द्र यादव जैसे भाजपाई का राजद उम्मीदवार को मदद देना बहुत कुछ बया कर देता है। 19 मई को हुए लोकसभा चुनाव का परिणाम भले ही 4 जून को आएगा और फिर पता चलेगा कि जमुई में किसका सिक्का चला है पर इस लोकसभा चुनाव में जमुई जिले का समीकरण बहुत कुछ बदल चुका है।●

तीन वर्षों का इंतजार हुआ खत्म
15 जून से सैलानी कर सकते हैं ककोलत का दीदार

● **मनीष कमलिया/कृष्ण कुमार चंचल**

भीषण गर्मी झेल रहे लोगों के लिए बड़ी खुशखबरी है। लोगों को ठंड और सर्दी का एहसास दिलाने के लिए बिहार सरकार का पर्यटन विभाग पूरी तरह तैयार है। आम लोगों के लिए बहुत जल्द जिले का प्रसिद्ध शीतल जलप्रपात ककोलत सैलानियों के लिए खोल दिया जाएगा। लोग यहां जाकर सर्दी का एहसास कर सकते हैं। उसके अलावा वाटरफॉल का आनंद ले सकते हैं। जिले के गोविन्दपुर प्रखंड स्थित प्रसिद्ध शीतल जलप्रपात ककोलत को लेकर नया अपडेट आया है। जिले में प्राकृतिक सौंदर्य से भरा शीतल जलप्रपात ककोलत पिछले कोरोना काल से बंद पड़ा था। लोग इसके खुलने का इंतजार करते हैं। शीतल जलप्रपात ककोलत जिला मुख्यालय से मात्र 33 किलोमीटर की दूरी पर है। राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 20 पर 15 किलोमीटर दक्षिण की ओर जाने पर फतेहपुर से एक सड़क अलग होती है। इस सड़क को गोविन्दपुर-फतेहपुर रोड के नाम से जाना जाता है। यह सड़क सीधे थाली मोड़ को जाती है। वहां से पांच किलोमीटर दक्षिण ककोलत जलप्रपात है। जलप्रपात से कुछ दूर ही रहने पर लोगों को शीतलता का एहसास होने लगता है। चारों तरफ हरियाली लोगों का झूम कर स्वागत करती है। ककोलत खूबसूरत दृश्यों से भरा पड़ा है।

☞ **आकर्षण है झरना** :- जलप्रपात की ऊंचाई 150 फीट से ज्यादा है। ठंडे पानी का ये शीतल जलप्रपात जिले में प्रसिद्ध है। गर्मी के चार माह पूरे जिले के अलावा पड़ोसी राज्यों से लोग यहां पिकनिक मनाने आते हैं। जलप्रपात के चारों तरफ जंगल है। यहां का दृश्य अद्भुत आकर्षण उत्पन्न करता है। यह दृश्य आंखों को ठंडक

प्रदान करता है। पौराणिक कथाओं के अनुसार एक प्राचीन राजा ऋषि के अभिशाप द्वारा अजगर में बदल गया था और झरने के भीतर रहता था। लोक कथाओं के मुताबिक कृष्ण अपनी रानियों के साथ स्नान करने के लिए यहां आया करते थे। ये भारत में सबसे अच्छे झरने में से एक है और झरने का पानी पूरे वर्ष ठंडा रहता है।

☞ **सैलानियों के लिए व्यवस्था** :- बिहार सरकार के पर्यटन विभाग की ओर से मिल रही जानकारी के मुताबिक अगले महीने यानी 15 जून से सैलानियों के लिए जलप्रपात को खोल दिया जाएगा। पर्यटकों के लिए इस बार विशेष तैयारी की गई है। उनकी बेसिक जरूरतों का ख्याल रखा गया है। पर्यटन विभाग की ओर से सैलानियों के लिए पर्यटक रूम, चेंजिंग रूम, सेल्फी प्वाइंट और टॉयलेट की विशेष व्यवस्था की गई है। सैलानियों को आकर्षित करने के लिए उनके खाने-पीने का भी विशेष इंतजाम रहेगा। सैलानी रात में ठहरना चाहे, उसके लिए भी इंतजाम रहेगा। उसके अलावा दिन में भी वहां ठहर सकते हैं। बिहार के कई स्वादिष्ट डिस का इंतजाम भी रहेगा, ताकि सैलानी आराम से यहां लजीज व्यंजन का लाभ उठा सकें।

☞ **पहुंचने का रास्ता** :- प्रशासन की ओर से बुजुर्ग और दिव्यांगों के लिए विशेष व्यवस्था की गई है। वो भी इसका आनंद ले सकते हैं। वाटरफॉल के शुद्ध और ठंडे पानी से नहाने के बाद आपको गर्मी में भी सर्दी का एहसास होगा। हवाई मार्ग की बात करें, तो नवादा से निकटतम हवाई अड्डा गया और पटना है। कोलकाता, दिल्ली, रांची, मुंबई, वाराणसी, लखनऊ और काठमांडू से जाने के लिए गया से नियमित उड़ानें मौजूद हैं। नवादा सीधे लखीसराय रेलवे स्टेशन से जुड़ा हुआ है। नवादा, पटना, गया के अलावा कोलकाता के साथ सड़क से जुड़ा हुआ है।●

युवक को जलाकर हत्या करने के मामले में दो गिरफ्तार

बीते 08 मई को पत्थर से हत्या कर पेट्रोल एवं जंगली पत्ती से शव को जलाया था

● मनीष कमलिया

कौआकोल थाना क्षेत्र के दनिया गांव में बीते आठ मई को एक युवक को जिंदा जलाकर हत्या किए जाने के मामले में पुलिस ने मुख्य आरोपित सुरेश राय सहित दो लोगों को गिरफ्तार किया है। इसकी जानकारी शुक्रवार को पुलिस अधीक्षक कार्तिकेय के. शर्मा के द्वारा प्रेसवार्ता कर कर दी गई। बताया कि बिहार-झारखंड की सीमा पर कौआकोल थाना इलाके में एक युवक की जिंदा जलाकर हुई निर्मम हत्या के मामले में दो आरोपी को गिरफ्तार किया गया है, जो कि कौआकोल थाना क्षेत्र के झरनमा गांव निवासी प्यारे राम के पुत्र सुरेश राय और स्व. पूरन राय के पुत्र रुपेश राय उर्फ लालू शामिल है। दोनों आरोपी को जिले के परनाडाबर थाना इलाके से पकड़ा गया। एसपी ने बताया कि शराब मामले में सुरेश राय के चचेरे भाई को उत्पाद पुलिस द्वारा गिरफ्तार किया गया था। सुरेश को शक था कि झारखंड राज्य के गिरीडीह जिला अंतर्गत गांव थाना के डूमरझारा गांव निवासी सोमर साव के पुत्र मुकेश कुमार साव ने ही छापेमारी कराई और उसके घर की महिला पुष्पा देवी की गिरफ्तारी हुई। इसी से गुस्साए सुरेश ने अपने सहयोगियों के साथ मिलकर मुकेश की हत्या कर दी। एसपी ने कहा कि युवक मुकेश की घटना के समय पहले तो उसे मारपीट कर हत्या कर दी और इसके बाद शव की पहचान न हो सके इसलिए इसे जलाने की कोशिश की गई। पुलिस ने अर्द्धजले शव को प्राप्त किया था। इस मामले में मृतक की मां दरवा देवी ने नौ मई को कौआकोल थाना में केस दर्ज कराया था।

☞ **शराब धंधेबाजों के बीच मनमुटाव के बाद हुई घटना :-** एसपी ने बताया कि शराब धंधेबाजों के बीच मनमुटाव के बाद घटना को अंजाम दिया गया। मृतक और आरोपित लोग मिलकर शराब का धंधा करते थे, बाद में मनमुटाव हुआ। इस बीच उत्पाद थाना पकरीबरावां की टीम द्वारा सुरेश राय के चचेरे भाई के घर छापेमारी की गई। जहां से भाई की पत्नी पुष्पा देवी की गिरफ्तारी की गई थी। जिसके बाद हत्या की घटना को अंजाम दिया गया। घटना के दिन मृतक मुकेश शराब लेकर ही आ रहा था। रास्ते में पत्थर से कूचकर उसकी हत्या की गई और पहचान न हो इसके लिए शव को जला दिया गया। जिसमें कुल नौ लोगों को इस कांड में आरोपित किया गया था। जिसमें से चार के खिलाफ आरोप सत्य पाया गया है।

☞ **क्या था मामला :-** कौआकोल थाना में हुई प्राथमिकी के अनुसार कौआकोल थाना क्षेत्र के रानीगदर में तालाब का निर्माण हो रहा था। जिसमें मृतक युवक झारखंड राज्य के गिरीडीह जिला अंतर्गत गांवा थाना के डूमरझारा गांव निवासी सोमर साव का पुत्र मुकेश कुमार साव का ट्रैक्टर मिट्टी ढुलाई के काम में लगा हुआ था। घटना के दिन मुकेश अपने भाई छोटू साव के साथ बाइक पर डीजल लेकर ट्रैक्टर में डालने के लिए घर से निकला था। रास्ते में झरनमां के पास पूर्व से घात लगाए बैठे लोगों ने बाइक को रोककर मुकेश को उतार लिया और उसके साथ मारपीट करने लगे। फिर बाइक तथा उसके उपर पेट्रोल छिड़क कर आग लगा दी।

☞ **छोटा भाई बना था प्रत्यक्षदर्शी :-** इस पूरी घटना को मुकेश के भाई छोटू ने देखा था, उसने ही घटना की जानकारी घर वालों को दी थी। जबतक घरवाले घटना स्थल पर पहुंचे तब तक मुकेश की मौत हो चुकी थी। स्वजन ने इसकी सूचना कौआकोल थाना को दी, यहां की पुलिस ने झारखंड का मामला बताकर पहले अपना पल्ला झाड़ लिया था। परंतु एसपी ने मामले को संज्ञान लिया और नौ मई को प्राथमिकी कौआकोल थाना में दर्ज हुआ। जिसमें कुल नौ लोगों को आरोपित किया गया था। मृतक की मां दरवा देवी ने लिखित आवेदन थाना में झरनमा गावं के सुरेश राय, विकास राय एवं बाघा राय, दनिया गावं के प्रकाश भुला, रानीगदर गांव के किशोरी राय, गिरीडीह जिला के राजोखर गांव के विकास साव, जमुई जिला के पलमरूआ गांव के शंकर साव एवं रोपाबेल गावं के सुनील साव और नवादा जिला के कादिरगंज गांव के राजेंद्र यादव को आरोपित बनाया गया था। तब से सभी आरोपित फरार चल रहे थे।●

बिजली की ट्रिपिंग से उपभोक्ता हलकान

गर्मी के बीच दिनभर बिजली की आवाजाही रहती है जारी, शिकायत पर नहीं होता कोई समाधान

☞ 08 से 10 बार तक दिन में ट्रिप करती है बिजली ☞ 04 से 06 घंटों तक औसतन प्रतिदिन गुल हो रही बिजली

● मनीष कमलिया

मौसम की मार के बीच उमस भरी गर्मी सितम ढा रही है। घर-परिवार में लोग गर्मी से परेशान हैं। यह तकलीफ उस समय और बढ़ जाती है जब बिजली बार-बार कटती रहती है। शहर में बिजली आपूर्ति की स्थिति खस्ताहाल है। अभी गर्मी की वजह से बिजली की खपत अधिक बढ़ी हुई है। सप्लाई का लोड बढ़ा हुआ है। जिससे वोल्टेज डाउन हो रहे हैं, तो लाइन ट्रिप कर जा रही हैं। शहरवासियों में बिजली संकट को लेकर हर दिन परेशानी है। दिन हो या रात, सुबह हो या शाम। हर वक्त ट्रिपिंग हो रही है। लो वोल्टेज और बिजली ट्रिप की समस्या ने उपभोक्ताओं को परेशान कर रखा है। पिछले पखवारे भर से बिजली की आवाजाही से लोगों की समस्या बढ़ गई है। कमोबेश प्रतिदिन की स्थिति यह है कि दिन में 8 से 10 बार बिजली ट्रिप करती है। एक बार बिजली गई, तो आधे से एक घंटे की प्रतीक्षा आम है। कई बार मरम्मत के नाम पर चार से पांच घंटों तक बिजली आपूर्ति बंद हो जाती है। ऐसे में नागरिकों का पारा सातवें आसमान पर पहुंचता है। आम तौर पर बिजली विभाग के पदाधिकारियों और कर्मियों के विरूद्ध गुस्सा फूटता है। लेकिन बिजली आने के बाद टिक गई, तो सारा गुस्सा शांत हो जाता है। हालांकि नागरिक शिकायत दर्ज कराते हैं, लेकिन समाधान के नाम पर कोई-न-कोई बहाना बना दिया जाता है। बेचारी जनता थक-हार कर बिजली आने का बाट जोहते रहती हैं।

☞ **व्यवस्था पुरानी, बड़े बदलाव की जरूरत** :- नवादा शहर में बिजली आपूर्ति की व्यवस्था वर्षों पुरानी है। पांच से दस किमी. की लंबी-लंबी संचरण लाइनें हैं। ऐसे में बिजली ट्रिप की, तो विभाग के मानव बल बड़े इलाके में तकनीकी खामी ढूंढते हैं। इसमें वक्त लगता है। फिर इसकी मरम्मत को लेकर शट डाउन मांगा जाता है। एक बड़े इलाके की बिजली मरम्मत का काम होने तक गुल रहती है। कई बार अलग-अलग जगहों पर तकनीकी बाधा आती है, तो दो-तीन बार शट डाउन लेने की जरूरत पड़ जाती है। ऐसे में कई बार बिजली ट्रिप करते रहती है। हालांकि विभाग माडर्नाईजेशन और रिकंडक्टिंग को लेकर बार-बार काम करने की दुहाई देता है, लेकिन विद्युत आपूर्ति में अपेक्षित सुधार नहीं होता है।

क्या कहते हैं शहरवासी

☞ गर्मी बढ़ते ही बिजली की समस्या आने लगती है। बार-बार बिजली जाती है। मोबाइल भी चार्ज नहीं हो पाता है। आजकल क्लासेज आनलाइन ली जाती है। बिजली नहीं रहने पर पढ़ाई बाधित होती है।

अनुष्का राज, गोला रोड, नवादा।

☞ बिजली ने तो कमाल कर दिया है। सुबह उठते ही पीने का पानी भरने को टेंशन रहता है, तो शाम में खाना बनाने में दिक्कत आती है। कोई भी काम सही ढंग से निबट नहीं पाता। गृहिणियों को बड़ी परेशानी हो रही है।

रूबी कुमारी
हरिश्चंद्र स्टेडियम (नवादा)

☞ बार-बार बिजली ट्रिप करने से व्यवसाय प्रभावित हो रहा है। बार-बार बिजली आने-जाने से इन्वर्टर भी सही से चार्ज नहीं हो पाता। इन्फोरमेटिक्स और टेक्नोलाजी आधारित काम में लगातार बिजली की जरूरत पड़ती है।

मनीष कमलिया
वारिसलीगंज

☞ गर्मी में बिजली जरूरी हो गयी है। पंखा, कूलर से ही थोड़ी राहत मिलती है। लेकिन लो वोल्टेज में बिजली के ये उपकरण भी सही से नहीं चल पाते हैं। पंखा और कूलर की पत्तियां हवा नहीं करती हैं। गर्मी में बदहाली का आलम है।

मो. शादाब खान, अंसार नगर।

☞ **मान-मनौव्वल करके निकाला जाता है काम** :- अमूमन गर्मियों में बिजली की मांग बढ़ जाती है। लोड अधिक होने पर रोटेशन करके

क्या कहते हैं अभियंता :- नवादा शहर में फीडर की संचरण लाइनें काफी लम्बी है। इससे बड़ी समस्या है। लगातार ब्रेक डाउन होता है। मरम्मत के दौरान बड़े-बड़े इलाकों में बिजली बंद करनी पड़ जाती है। नवादा शहर के फीडरों को नए तरीके से व्यवस्थित करने की जरूरत है। इस दिशा में काम किया जा रहा है। अभी गर्मी में बिजली का लोड भी कई गुणा बढ़ा हुआ है। उपभोक्ताओं को बेहतर बिजली देने के लिए पूरी टीम प्रयासरत है।

अनिल कुमार भारती,
कार्यपालक अभियंता,
नवादा विद्युत अवर प्रमंडल, नवादा।

बिजली आपूर्ति की जाती है। ऐसे में ग्रामीण क्षेत्रों में बिजली गुल की जाती है। नवादा ओल्ड पीएसएस से जुड़े बिजली उपभोक्ताओं को भी लगातार पावर कट की समस्या झेलनी होती है। कमोबेश सद्भावना फीडर (तीन नंबर) के उपभोक्ताओं की समस्या कम होती है। इस दौरान फ्यूज सेंटर के कर्मी का मोबाइल लगातार घनघनाता है। पब्लिक का मान-मनौव्वल करके काम निकाला जाता है।●

किउल से नवादा तक बगैर किसी रूकावट के दौड़ेगी ट्रेन

● **मनीष कमलिया/कृष्णा कुमार चंचल**

किउल-गया रेलखंड में वारिसलीगंज से नवादा के बीच में रेल ट्रैक दोहरीकरण का कार्य पूर्ण हो गया है। इसके साथ ही तेज रफ्तार ट्रेनों का ट्रायल एवं परिचालन शुरू कर दिया गया है। वारिसलीगंज -काशीचक के बीच इससे पहले ही पूर्ण कर लिया गया था। जिस पर ट्रेनों का परिचालन किया जा रहा है। किउल-नवादा रेलवे स्टेशन तक अब तेज रफ्तार में दौड़ने वाली ट्रेनों का परिचालन शुरू हो जाएगा। पूर्व मध्य रेल अन्तर्गत दानापुर मंडल के केजी रेलखंड स्थित वारिसलीगंज-नवादा के बीच दोहरीकरण का कार्य पूरा हो चुका है। वारिसलीगंज स्टेशन प्रबंधक अवधेश कुमार सुमन ने बताया कि वारिसलीगंज-नवादा रेललाईन के किनारे बसे गांव वासियों को जागरूक करने का कार्य ई-रिक्शा में माइक एवं साउंड लगा कर किया जा रहा है। वारिसलीगंज बाजार सहित रेलवे ट्रैक के किनारे बसे गांव के लोगों को सतर्क करते हुए रेलवे ट्रैक से दूर रहने तथा मवेशियों, बच्चों एवं अन्य जीवों आदि को दूर रखने को कहा जा रहा है। बताया गया कि वारिसलीगंज-नवादा के बीच दोहरीकरण का कार्य पूरा हो जाने के बाद अब तेज रफ्तार ट्रेनों का ट्रायल शुरू हो गया है। ट्रायल पूरी हो जाने के बाद रेलखंड के रास्ते रेलवे द्वारा तेज रफ्तार ट्रेनों का परिचालन शुरू कर दी जाएगी।

☞ **दोहरीकरण से यात्रियों में खुशी, इन पंचायतों की बड़ी आबादी मायूस :-** रेल ट्रैक दोहरीकरण से रेल यात्रियों में खुशी है। अब ट्रेनें अधिक रफ्तार से चलेंगी। दूसरी ओर वारिसलीगंज प्रखंड के मकनपुर तथा हाजीपुर पंचायत के दर्जनभर छोटे बड़े गांवों के लोगों को वारिसलीगंज आने जाने का रास्ता पूरी तरह से बंद हो गया है। जो भी वाहन या व्यक्ति दोहरीकरण रेल ट्रैक को पार करने की कोशिश करेंगे, उन्हें काफी सावधानी बरतनी होगी। अन्यथा बड़ी घटना घट सकती है। रेल ट्रैक के पूरब दिशा में बसे मकनपुर पंचायत की सफीगंज, मसूदा, कोल्हाबीघा हाजीपुर के मय, मोतालिफ चक, बढनपुर, चुल्हाय बीघा तथा मंजौर पंचायत की बलबापर आदि गांव के लोगो को एसएच 83 सड़क तक पहुंचने के लिए केजी रेलखंड के दोहरीकृत रेल लाइन के खतरों को जानते हुए पार करना होगा। उन गांव के ग्रामीणों के द्वारा दोहरीकरण कार्य के समय काफी विरोध प्रदर्शन किया गया था तब एसडीएम सदर द्वारा ग्रामीणों को समझाते हुए आने जाने के लिए अंडर पास बनाने के लिए प्रयास करने का आश्वासन दिया था, परंतु अब जब दोहरीकरण का कार्य पूरा हो चुका है तब उन क्षेत्र में बसे ग्रामीण अपने आप को ठगा महसूस कर रहे हैं।●

जमुई में लौह और अयस्क का मिला भंडार

भाजपा कार्यालय मां तारा उत्सव पैलेस गोविंदपुर फतुहा में भाजपा कार्यकर्ताओं की एक बैठक में भाजपा मीडिया प्रभारी डॉक्टर लक्ष्मी नारायण सिंह पटेल ने संबोधित करते हुए कहा कि जमुई जिले के सिकंदरा प्रखंड अंतर्गत मंजोष और भट्ठा गांव में लौह अयस्क मिलने की पुष्टि हुई है। दोनों गांव में करीब 84 हेक्टर भूमि में 48 मिलियन लौह और अयस्क रहने का अनुमान है। जून माह के बाद निजी कंपनियों को खनन की स्वीकृति दी जाएगी। जल्द 84 हेक्टर भूमि का अधि ग्रहण कर इसकी घेराबंदी कराई जाएगी। भूमि अधिग्रहण के बाद खनन प्रक्रिया शुरू होगी जिस भूमि स्वामी का जमीन अधिग्रहण किया जाएगा, उन्हें भारत सरकार द्वारा तय मापदंड के मुताबिक मुआवजा दिया जाएगा। डॉ लक्ष्मी नारायण सिंह पटेल जमुई एंव आसपास के लोगों से अनुरोध करते हुए कहा है कि लोह अयस्क के खनन में यथोचित सहयोग दें ताकि इसका नाम देश दुनिया में उजागर हो सके। खनन सचिव धर्मेंद्र सिंह और विभागीय टीम ने संयुक्त रूप से नामित गांव का दौरा किया और वस्तु स्थिति से रूबरू हुए, सचिव ने यहां प्रचुर मात्रा में लौह अयस्क मिलने की पुष्टि की है। उल्लेखनीय है कि बिहार झारखंड राज्य के अलग हो जाने के बाद यह प्रदेश खनिज संपदा विहीन प्रदेश के रूप में जाना जाने लगा था ।मंजोष और भट्ठा गांव में लौह अयस्क मिलने के बाद अब बिहार भी खनिज संपदा वाला राज्य कहलाने लगेगा।इस अवसर पर भाजपा जिला मंत्री शोभा देवी, भाजपा नगर उपाध्यक्ष अनिल कुमार शर्मा , पुजा कुमारी, शोभा पटेल, ममता पटेल,अनामिका पाण्डेय, अंकुश, अशिष, संजू कुमारी, संजू कुमारी, रेखा शर्मा, बेबी देवी, जितेंद्र मिस्त्री, सत्येंद्र पासवान, बब्लू शाह , मिथलेश कुमार आदि मौजूद थे।● **रिपोर्ट :- डॉ० लक्ष्मीनारायण सिंह**